प्रकाशकका निवेदन

राष्ट्रपिता गांधीजीने अपने संपर्कमें आनेवाले असंख्य लोगोंको असंख्य पत्र विविध विषयों पर लिखे हैं। व्यक्ति, समाज और राष्ट्रके निर्माणमें अुनका बहुत बड़ा महत्त्व है। अिस महत्त्वको ध्यानमें रखकर ही नवजीवन ट्रस्टने गांधीजीके पत्रोंके प्रकाशनका काम हाथमें लिया है। अभी तक हम 'बापूके पत्र – १ : आश्रमकी बहनोंको', 'बापूके पत्र – २ : सरदार वल्लभभाअीके नाम', 'बापूके पत्र – ३ : कुसुमबहन देसाअीके नाम' तथा 'बापूके पत्र मीराके नाम' — शीर्षकसे गांधीजीके चार पत्र-संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक अुनके पत्र-संग्रहकी पांचवीं पुस्तक है। भविष्यमें हम जल्दी ही 'बापूके पत्र – ५ : कु० प्रेमाबहन कंटकके नाम' पुस्तक प्रकाशित करेंगे। अुसका गांधीजीके पत्र-संग्रहमें अपना अेक विशिष्ट स्थान है।

श्री मणिबहनके नाम लिखे गये अिन पत्रोंमें हम आदिसे अन्त तक अेक वात्सल्यपूर्ण पिताका हृदय धड़कता हुआ अनुभव कर सकते हैं। श्री मणिबहनने छोटी अुमरमें माताका आश्रय खो दिया था। और कुछ सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक मर्यादाओंके कारण बहुत बड़ी अुमर तक वे पिताके प्रेमका भी अनुभव नहीं कर सकी थीं, अिन परिस्थितियोंमें पली हुअी श्री मणिबहनको गांधीजीने अपनी गोदमें लेकर पिता और माता दोनोंका स्थान संभाला और अुस कमीको पूरा किया तथा अुनके जीवन-निर्माणका काम अपने हाथमें लेकर खूब सावधानीसे अिस तरह अुन्हें तैयार किया कि अुनकी सारी शक्तियां राष्ट्रसेवाके कार्यमें प्रयुक्त हो सकें। यह निर्माण अुन्होंने किस प्रकार किया, अिसकी झांकी अिन पत्रोंमें बहुत अच्छी तरह देखनेको मिलती है। गांधीजीके जीवनका यह पहलू कितना

अधिक गुप्त रहा होगा ! क्योंकि अिस पहलूका यथार्थ दर्शन तो अैसे निजी पत्रोंमें ही होता है। अिस दृष्टिसे यह पत्र-संग्रह अेक कीमती दस्तावेज है।

जिनके पास गांधीजीके पत्र हों अैसे दूसरे भाअी-बहनोंको भी यदि अिससे अपने पासके पत्र हमारे पास भेजनेकी प्रेरणा मिले, तो यह माला अधिक समृद्ध होगी। मूल पत्र सुरक्षित रूपमें वापस भेज दिये जायंगे।

आशा है अिस पत्र-संग्रहका भी अिससे पहलेकी पुस्तकोंकी तरह ही स्वागत किया जायगा।

१५–७–'६०

अिन पत्रोंके सम्बन्धमें

पू० बापूजीका अवसान होने पर नवजीवन ट्रस्टने सोचा कि अुनका साहित्य, अुनके लिखे हुअे पत्र आदि प्रकाशित करके लोगोंमें अुनके विचारोंका भरसक प्रचार किया जाय और लोगोंमें अिसके लिअे जो भूख है अुसका समाधान किया जाय। अिस विचारके अनुसार नवजीवन ट्रस्टने पू० बापूजीके पत्रोंकी मालामें तीन संग्रह प्रकाशित किये हैं। यह चौथा संग्रह है। बापूजी पत्रों द्वारा मनुष्यको किस प्रकार बनाते थे और अुससे जो काम लेना तय किया हो अुस कामके लिअे अुसे कैसे तैयार करते थे, यह संग्रह अुसका अेक नमूना है। ये पत्र जैसे मेरे जीवनके निर्माणमें मेरे लिअे अुपयोगी सिद्ध हुअे वैसे ही पाठकोंके लिअे भी होंगे, यह समझकर अिन्हें प्रकाशित करनेकी मुझे प्रेरणा हुअी है। अिनसे अनेक विषयोंके सम्बन्धमें पाठकोंको पू० बापूजीके विचार जाननेको मिलेंगे और कुछ न कुछ सीखनेको भी मिलेगा अैसा मेरा खयाल है।

सन् १९२० में मैं मैट्रिककी कक्षामें अध्ययन कर रही थी। परीक्षामें छह मास बाकी रहे थे। अितनेमें पू० बापूजीने विद्यार्थियोंसे स्कूल-कॉलेजोंका बहिष्कार करनेकी पुकार की। अिस पुकारके अनुसार सितम्बर १९२० में मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। सन् १९२१ के आरम्भसे अिस पत्र-संग्रहकी शुरुआत होती है। मेरे शाला-जीवनके अन्तके साथ ही शुरू हुआ यह पत्र-व्यवहार ठेठ बापूजीके जीवनका अेकाअेक अन्त हुआ अुसके थोड़े दिन पहले तक चला। जनवरी १९३० से सितम्बर १९४६ में जब पू० बापू दिल्ली रहने गये तब तक हमारा कोअी स्थायी घर नहीं था। फिर भी ये सब पत्र सुरक्षित रहे, यह अीश्वरकी कृपा ही कही जायगी।

मुझे बनानेमें पू० बापूजीने कितना परिश्रम किया है! मुझ पर अुन्होंने कितना प्रेम बरसाया है! आज मुझमें जो भी अच्छे गुण या आदतें हैं वे सब मेरे जीवनके दो निर्माताओं — पू० बापूजी और पू० बापू — द्वारा मेरे लिअे किये गये परिश्रमके कारण हैं। अुनके वात्सल्य-भरे परिश्रमके बावजूद मुझमें कोअी कमियां अथवा दोष रहे हों तो वे मेरी अशक्तिके कारण हैं। मेरा यह दुर्भाग्य है कि दो दो महापुरुषोंके प्रयत्नोंके बावजूद मैं अपनी कमजोरीके कारण अपने दोष दूर न कर सकी।

सितम्बर १९४९ में डॉक्टर लोग पू० बापूको अिलाजके लिअे आग्रह करके बम्बअी ले गये थे। पू० बापू वहां बिड़ला-भवनमें ठहरे थे। नरहरिभाअी वहां अुनकी कुशल पूछने आये थे। अुस समय अिन पत्रोंकी नकलोंका संग्रह मैंने अुनके हाथमें रखा। अुन्होंने अिन सब पत्रोंको पढ़ लिया और सुझाया कि पत्रोंमें जहां जरूरी हो वहां नीचे टिप्पणियां जोड़ दी जायं। मेरे लिअे यह नया ही काम था और मुझे शंका थी कि मैं अुसे कर सकूंगी या नहीं। परन्तु अुन्होंने कहा कि अेकसाथ नहीं तो समय मिलने पर थोड़ा थोड़ा लिखते रहना। अुसके बाद अन्तमें मैं अेक बार देख लूंगा।

१९४८ से मैंने अिन सब पत्रोंको जमा करके नकल कराना शुरू किया। अुसके बाद श्री नरहरिभाअीके अुपरोक्त सुझावके अनुसार १९४९ में मैंने सम्पादनका काम शुरू किया। वह पूरा होने पर श्री नरहरिभाअीने अुन्हें देख लिया था। परन्तु अुन्हें अंतिम रूप देनेका काम किसी न किसी कारणसे टलता रहा। अन्तमें आज अुसे पूरा करके जनताके सामने रख सकी हूं, और सिरका अेक बड़ा बोझा अुतर जानेकी निश्चितता अनुभव करती हूं। अैसा मालूम होता है मानो आज जनताके ॠणसे कुछ हद तक मैं मुक्त हुअी हूं।

मेरी सतत आग्रहभरी मांग स्वीकार करके अपनी तन्दुरुस्ती ठीक न होते हुअे भी पू० बापूके जीवन-चरित्रके दो भाग — अगस्त

१९४२ तक लिखने और पू० बापूके नाम लिखे गये पू० बापूजीके पत्रोंका संग्रह तथा मेरे नाम लिखे गये पत्रोंका यह संग्रह देख लेनेके लिअे मैं श्री नरहरिभाअीकी ॠणी हूं। अुनके आग्रह और प्रोत्साहनके कारण ही मैं अिन दो संग्रहोंके लिअे परिश्रम करनेका साहस कर सकी हूं।

भाअी मूलशंकर भट्टने अवकाश निकालकर भक्तिपूर्वक सभी पत्रोंकी सावधानीसे नकलें कर दीं, अिसके लिअे मैं अुनकी भी आभारी हूं।

मेरे भाअी चि० डाह्याभाअी तथा अुनके पुत्रके नाम लिखे गये पत्रोंका समावेश भी अिस संग्रहमें ही कर लिया गया है।

अन्तमें पाठकोंको समझनेमें परेशानी न हो, अिसके लिअे अेक स्पष्टता कर दूं। हम महात्माजीको बापूजी और अपने पिताको बापू कहते थे। अिसलिअे अिस संग्रहमें जहां 'बापूजी' हो वहां महात्माजी और जहां 'बापू' हो वहां हमारे पिताजीका अुल्लेख है, अैसा समझा जाय।*

नअी दिल्ली
२०–११–'५७

मणिबहन पटेल

* गुजराती संस्करणकी प्रस्तावना।

बापूके पत्र — ४

मणिबहन पटेलके नाम

[१२-२-'२१ से १३-१-'४८]

१

दिल्ली,
१२-२-'२१

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे मिला। मैं वहुत प्रसन्न हुआ। तुम भाओी-वहन आध घंटा रोज कातो तो अिससे स्वराज्य नहीं मिलेगा। तुममें अुत्साह हो तो तुम जरूर चार घंटे रोज कातो। महावरेसे अच्छा कातना आ जायगा।

अभी श्री दास[1] वहां नहीं आ सकते। मुझे पत्र लिखा करो। आजकल क्या पढ़ती हो, यह वताना।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : अभी तो मुझे वहुत भटकना पड़ता है। आज दिल्लीमें हूं। अभी पंजाव जाना है, वादमें लखनअू, वहांसे वेजवाड़ा। अिसलिअे पता नहीं अहमदावाद कव आना होगा। वापूसे कहना कि कांग्रेसकी तैयारी[2] करें।

चि० मणिवहन,
ठि० भाओी वल्लभभाओी पटेल वैरिस्टर,
भद्र, अहमदावाद

---

१. स्व० देशवन्धु दास।

२. अहमदावादमें होनेवाले कांग्रेसके ३६ वें अधिवेशनकी।

वेजवाड़ा,
मौनवार
(४-४-'२१)

चि० मणि,

अिस समय सुबहके पांच वजे हैं। मछलीपट्टम ले जानेवाली मोटरका अितजार कर रहा हूं।

रातको अेक वजे मैं अेलोरसे यहां आया। ये तीनों जगहें नकशेमें देख लेना।

आते ही तुम्हारा पत्र मिला और मैंने पढ़ा।

डॉक्टर कानूगाने[1] अच्छा काम किया है। डाह्याभाअी[2] पिकेटिंग करने जाता है, यह अच्छा है। अुसे मेरी वधाअी पहुंचा देना।

चार घंटे कातनेका नियम रखा, यह ठीक है। सूत मजवूत और अेकसा निकालनेका प्रयत्न करना। यह भी देखना कि रोज कितना निकलता है।

मेरा तो विश्वास दिन-दिन बढ़ता जा रहा है कि स्वराज्य सूत पर निर्भर है।

मैं काममें व्यस्त रहा और भटकता रहा, अिसलिअे मैंने पेंसिलसे लिखा। परन्तु तुम्हें तो स्याही और देशी कलमसे ही लिखनेका अभ्यास रखना चाहिये।

---

१. स्व० वलवन्तराय कानूगा। अहमदावादके प्रसिद्ध डॉक्टर। पू० वापूने १९३० में अपना अहमदावादवाला मकान छोड़ दिया अुसके वाद जव भी वे अहमदावाद आते तव डॉ० कानूगाके यहां ठहरते थे। खास-वाजारके शरावखाने पर पिकेटिंग करते हुअे पत्थर लगनेसे डॉ० कानूगाकी आंखमें चोट पहुंची थी।

२. मेरे भाअी।

बापूकी सेवा करना और तुम भाओी-बहनके बारेमें अुनकी चिन्ताको कम करना।

गुजराती दिन-प्रतिदिन सुधारना। ध्यानपूर्वक 'नवजीवन' पढ़नेवाले अपनी गुजराती अच्छी कर सकते हैं।

मैं मंगलवार १२ तारीखको अहमदाबाद पहुंचूंगा। बापूको खबर देना और कहना कि मुझे आशा है कि अिस बीच अुन्होंने खूब रुपया[1] जमाकर लिया होगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० बैरिस्टर वल्लभभाओी,
भद्र, अहमदाबाद

३

बम्बओी,
गुरुवार
(१६–६–'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने काका (विट्ठलभाओी[2])को अुससे पहले ही कह दिया है कि हमें मिलना है। वे पूना जा रहे हैं। हम जरूर ही मिलेंगे। मिलनेके बाद जो होगा वह लिखूंगा। बम्बओीकी क्या गंदगी[3] तुमने मानी है, वह मुझे बताना। तुम निश्चिन्त रहना। मैं काकासे पूरी बातें करनेवाला हूं।

---

१. तिलक स्वराज्य कोषका।

२. स्व० माननीय विट्ठलभाओी पटेल। पू० बापूके बड़े भाओी।

३. अुस समय बम्बओीमें विदेशी कपड़ेकी बहुत बड़ी होली पू० बापूजीके हाथों की गओी थी। अुस सम्बन्धमें यह अफवाह सुनी गओी थी कि कपड़ेका ढेर बहुत बड़ा बतानेके लिअे नीचे देवदारके खोखे रख दिये गये थे।

तुम दोनों भाअी-वहन देशकार्यमें पूरी तरह लग जाना। और तुम्हारे पूरी तरह लग जानेका अर्थ यह है कि कातने और पींजनेका काम यहां तक जान लो कि अुसमें तुम्हें कोअी मात न दे सके। और सब काम क्षणिक हैं। यह काम हमेशाका है, अैसा मानना। हमारा सारा वल अिसीमें से आयेगा।

भाअी महादेव[1] कल वम्वअी आ गये हैं। कहा जायगा कि अुन्होंने चंदा खूब किया।

यहां वरसात अच्छी हो रही है।

कल लगभग ५५,००० रुपये घाटकोपरसे मिले हैं।

मैं पत्र लिखूं या न लिखूं, परन्तु तुम तो लिखती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन,
ठि० श्री वल्लभभाअी पटेल,
भद्र, अहमदावाद

४

सोमवार
(११-७-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। कपड़े जलानेका हेतु तो यह है कि विदेशी कपड़ोंकी तरफ वैराग्यवृत्ति अधिक पैदा की जाय। ये कपड़े गरीबोंको दिये जायं, अिस विचारमें भी मोह है। लाख-दो लाखके कपड़े गरीबोंको गये तो क्या और न गये तो क्या? अितने दिन तक ये कपड़े मंगवाकर हमने हिन्दुस्तानको वड़ा नुकसान पहुंचाया है। मैं मानता हूं कि अब ये कपड़े गरीबोंको देनेसे भी लाभ नहीं होगा। ये कपड़े विदेश भेज देनेमें कुछ रहस्य है। फिर भी मैं सबकी राय लेता रहता हूं। अुसमें से जो सबको ठीक लगेगी वह मान लेंगे। अब भी शंका रहती हो तो पूछना।

---

१. स्व० महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी, बापूजीके मंत्री। १५ अगस्त १९४२ को आगाखां महलके कारावासमें हृदयकी गति वन्द होनेसे अेकाअेक अुनका अवसान हुआ।

डाह्याभाअीकी वानर-सेना अच्छा काम कर रही दीखती है। अेक वात वह याद रखे। लोगोंसे विनयपूर्वक अपनी वात कहे। जरा भी मजाक या ग्लानि (हंसी?) का भाव न रखे। शराव पीनेवाले पर दया रखी जाय।

काकासाहव[1] वढ़िया शिक्षक हैं, अिसमें तो शक ही नहीं। तुम सवको वे पसन्द आये, अिससे मैं खुश हुआ हूं।

काका (विट्ठलभाअी)से मुलाकात हुअी है; काफी वातचीत हुअी। अुन्होंने अपने जिला वोर्डमें ठीक प्रस्ताव पास करवाया है। मेरे पास आने-जानेवाले लोग कहते हैं कि काकाकी अभी चरखे पर श्रद्धा नहीं है। अितना ही नहीं, मंडलियोंमें चरखेके प्रति अरुचि प्रकट करते रहते हैं। फिर भी अुनसे मिलूंगा तव फिर वात करूंगा। मुझ पर पिछली मुलाकातका यह असर पड़ा था कि अुनके मनका वहुत कुछ समावान हो गया है।

मोहनदासके आशीर्वाद

मणिवहन,
ठि० श्री वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल,
भद्र, अहमदावाद

५

वम्वअी,
शुक्रवार
(१५-७-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रका लम्वा अुत्तर देनेको जी करता है। परन्तु अुतना समय नहीं। अव रातके ११ वजेंगे। परन्तु सवालका जवाव दे दूं। जो कपड़ा व्यापारके लिअे रखा गया हो अुसे जलाने या दे देनेका सवाल ही नहीं है।

---

१. श्री दत्तात्रेय वालकृष्ण कालेलकर, आश्रमवासी। आजकल राज्यसभाके मनोनीत सदस्य।

पत्रिकाअें[1] तो मैं अभी पढ़ भी नहीं सका। शराबवालोंकी मार हम जैसे जैसे सहन करेंगे वैसे वैसे हमारा काम बढ़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

बहन मणि,
ठि० श्री वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल,
भद्र, अहमदाबाद

६

डिब्रूगढ़,
आसाम,
(२५–८–'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पिछला पत्र मैं अपने साथ लिये घूमता रहा हूं। काका (विट्ठलभाअी) को समझाना बड़ा मुश्किल काम मानता हूं। अुनकी अुम्रमें और अेक प्रकारकी लड़ाअीमें[2] फतह पानेकी मान्यता बन जानेके बाद अब अुन्हें नये प्रकारको ग्रहण करना कठिन मालूम होता है। हम धीरज रखकर अुनका मतभेद सहन करके अपने रास्ते चलते रहें, अिसके सिवा और कोअी अुपाय मुझे दिखाअी नहीं पड़ता।

वहां बहिष्कारका और अुत्पत्ति[3]का काम जोरसे हो रहा होगा।

आसाम अेक नया ही देश लगता है। यात्राका जानने लायक भाग 'नवजीवन' में दे चुका हूं। अिसलिअे यहां नहीं लिख रहा हूं। भाअी अिन्दुलाल[4] के साथ मैंने बात कर ली है। कुमुदबहन[5] के साथ मैं जी भर-

---

१. शराबबन्दी आन्दोलन सम्बन्धी पत्रिकाअें।

२. विधान-सभामें। अुस समय श्री विट्ठलभाअी बम्बअी विधान-सभाके सदस्य थे।

३. खादी-अुत्पत्ति।

४. श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रान्तीय परिषदकी स्थापना हुअी अुस समय अुसके मंत्री थे। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

५. स्व० कुमुदबहन, श्री अिन्दुलाल याज्ञिककी पत्नी।

कर बातें करना चाहता हूं और अुन्हें शान्ति देनेका प्रयत्न करना चाहता हूं। अिसका आधार अुनकी अिच्छा और मेरी फुरसत पर रहेगा। मैं अुधर अक्तूबर माससे पहले आ सकूंगा, अैसा नहीं लगता। तुम दोनों भाअी-बहन बापूकी खूब मदद करते होगे। अुन पर बहुत बोझा आ पड़ा है। परन्तु प्रभुकी अिच्छा होगी तो वे अुसे अुठा लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

मेरे प्रवासका कार्यक्रम : ३१ से ३ तक चटगांव और बारीसाल; ४ से १२ तक कलकत्ता।

बहन मणिगौरी,
ठि० श्री वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल,
बैरिस्टर साहब,
भद्र, अहमदाबाद

७

मौनवार
कलकत्ता,
(८-९-'२१)

चि० मणि,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मेरी मांग तो पहननेके ही कपड़े जलानेकी है। किसीके घर विलायती जाजमें वगैरा रखी हैं, कोचों पर विदेशी कपड़े चढ़े हैं। ये सब अधिकांश लोग नहीं देंगे। अिसलिअे वह मांग नहीं की। अैसी कोअी नअी चीज वे न लें तो अुतना काफी है। हमें पहननेके कपड़ोंकी ही मांग करनी है। मैं 'नवजीवन'में लिखूंगा।

पर्युषणमें अुपासरे जाना तय किया, यह अच्छा है। अिन बहनोंमें से कोअी अपने कपड़े देती हैं?

१२ तारीख तक तो कलकत्तेमें रहना है। बादमें क्या करना है यह सोचूंगा।

वेजवाड़ाकी साड़ियोंमें अव धोखा जरूर घुसा होगा[1]। अच्छा यही है कि अुन्हें हाथ ही न लगाया जाय।

कुमुदवहनको पत्र भेजा सो अच्छा किया। पत्र लिखते रहनेसे अुन्हें आश्वासन मिलेगा।

कल वहुत करके महादेव आकर मुझसे मिल जायंगे।

यहां भी तुम्हारी ही अुम्रकी केवल खादी ही पहननेवाली खूव अुत्साह रखनेवाली दो वहनें हैं। वे अभी देशवंधु दासकी वहनको अुनके नारी-मंदिरमें मदद दे रही हैं।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० भाअी वल्लभभाअी पटेल वैरिस्टर,
भद्र, अहमदावाद

८

रेलमें,
२५-९-'२१

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मेरे पास रखे हैं। तुम्हारी प्रवृत्ति ठीक चल रही है। अव तो थोड़े दिनमें वहां मिलेंगे, अिसलिअे अुसके वारेमें कुछ नहीं लिखता।

कुमुदवहनका हाल पढ़कर मुझे दुःख होता है। अुनसे मैं जरूर मिलना चाहता हूं। ६ तारीखको मैं अहमदाबाद आ ही जाअूंगा। वहां कितने समय रहना होगा, यह तो नहीं जानता। परन्तु मैं वहां रहूं अुस वीचमें कुमुदवहन आश्रममें आयें, तो मैं अुनके साथ वातचीत कर सकूंगा। मैं अुनकी सेवा करना और अुन्हें शान्ति देना चाहता हूं। तुम अुन्हें यह पत्र ही भेज दो तो काम चल सकता है।

---

१. वेजवाड़ाकी साड़ियोंमें मिलका सूत काममें लेनेकी जो शिकायत थी अुसका अुल्लेख है।

२ तारीखको मैं बम्बअी पहुंचनेकी आशा रखता हूं। ४ तारीख तक तो वहां रहना ही है।

काका (विट्ठलभाअी) का रास्ता अलग ही है। हमें अुनकी चिन्ता नहीं करनी है। अुन्हें जो ठीक लगे वह भले ही वे करें और कहें।

मोहनदासके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद
(पू० बापूजीके हाथका पता)

९

नेपानी,
(अक्तूबर, १९२१)

चि० मणि,

तुम्हारा काम और देशके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तो आश्चर्य हुआ है। दिवालीके दिनोंमें खूब चंदा अिकट्ठा करना।

बापूकी सेवा तो तुम करती ही होगी, यह मैं मान लेता हूं। तुम्हारे जवाबकी आशा मैं अिस बार तो नहीं रखता।

मोहनदासके आशीर्वाद

(पीछे)

अहमदाबादकी बहनोंका नाम लेकर मैंने पूनाकी बहनोंसे भिक्षा मांगी। अुन्होंने तो मुझ पर सोनेकी चूड़ियों, अंगूठियों, लौंगों और सोनेकी जंजीरोंकी भारी वर्षा कर दी। अहमदाबादकी बहनोंको मात कर दिया।

मोहनदास

श्री मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

१०

सोमवार
(अप्रैल, १९२४)

चि० मणि,

भाअी मणिलाल[1]ने आज खबर दी कि तुम्हारा बुखार तो चला गया, मगर अशक्ति है और तुम डॉक्टर कानूगाके यहां चली गअी हो। मैं चाहता हूं कि बापू और डॉक्टर अिजाजत दें तो यहां[2] आ जाओ। आराम और शान्ति दोनों मिलेंगे। तुममें तो शक्ति तुरन्त आ ही जायगी। अिसलिअे मैं तुमसे सेवा भी लूंगा। मुझ पर तुम्हारे भार पड़नेका भय तुम्हें या बापूको हरगिज नहीं होना चाहिये। बोझा पड़ेगा तो जमीन पर, और जमीन काफी मजबूत है। तुम्हारे जैसी सौ बालिकाओंका बोझा तो वह आसानीसे अुठा सकेगी। दूसरा बोझा रसोअिये पर होगा। रेवाशंकरभाअी[3]ने रसोअिया भी यहांकी जमीनके जैसा ही मजबूत दिया है। तुम्हारे आनेसे मेरी चिन्ता दूर होगी, क्योंकि जो भी देशसेवक और देशसेविकाअें दूर बैठे बीमार पड़ते हैं वे मेरी चिन्तामें वृद्धि करते हैं। मेरी नजरके सामने वे सब हों तो अुस हद तक मेरी चिंता दूर हो जाय।

डाह्याभाअी तुम्हारे बदले चरखा अधिक समय चलाते ही होंगे।

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्व० मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री थे।

२. जुहू। यरवडा जेलसे फरवरी १९२४ में छूटनेके बाद कुछ मास आरामके लिअे पू० बापूजी जुहूमें रहे थे।

३. स्व० रेवाशंकर जगजीवन झवेरी। बम्बअीमें पू० बापूजी अुनके यहां मणिभवनमें अुतरते थे।

[यह पत्र मैं जुहूमें पू० वापूजीके पास थी वहां पू० वाने भेजा था। जुहूमें कुछ वीमारोंको अिकट्ठा करके पू० वापूजीने अपना छोटासा 'अस्पताल' वना लिया था।]

(सत्याग्रह आश्रम, सावरमती)
वुधवार
(अप्रैल, १९२४)

चि० मणि,

अव तुम्हारी तवीयत अच्छी होती जा रही है, अिससे आनन्द होता है। अिसी तरह राधा[1]की भी अच्छी होगी। अ० सौ० कीकीवहन[2]की भी अच्छी होगी। अव नहानेकी अिजाजत मिल गअी होगी। खुराक तुम सव क्या लेती हो सो वताना। राधाको अिंजेक्शन दिये जा रहे हैं? प्रभु[3] क्या खुराक खाता है?

कृष्णदास[4] मजेमें होगा। वापूजीको नियमपूर्वक तुम खुराक देती होगी। वे क्या खाते हैं? गं० स्व० जमनावहन[5] वहां हमेशा आती होंगी। अुन्हें मेरे प्रणाम कहना। अिसी तरह जसवंतप्रसाद[6]को भी कहना। आज सुवह भाअी डाह्याभाअी आये थे। वे मजेमें हैं। . . . को मैंने अेक पत्र लिखा है। अुसका अुत्तर नहीं आया। अुनकी तवीयत अच्छी होगी। देवदास[6] तो क्यों लिखने लगा?

---

१. वापूजीके भतीजे स्व० मगनलाल गांधीकी पुत्री।

२. आचार्य कृपालानीकी वहन।

३. वापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्ससे पू० वापूजीके साथ थे।

४. श्री कृष्णदास गांधी। वापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र।

५. दादाभाअी नवरोजीकी पौत्री श्री गोशीवहन कैप्टन और श्री पेरीनवहन कैप्टनके साथी कार्यकर्ता।

६. पू० वापूजीके सवसे छोटे पुत्र।

मुझे तुम सब बहुत याद आते रहते हो। परन्तु भाग्यमें साथ रहना नहीं लिखा होगा। मुझे पत्र लिखना। नहीं तो लिखवाना। पूज्य रेवाशंकर भाअी (झवेरी) की तबीयत अच्छी होगी।

यहां सब प्रसन्न हैं। वहांका हाल लिखना। अभी भाअी मगनलाल[1] दिल्ली गये हैं। अुनके घर पर भाअी छगनलाल[2] और चि० काशी[3] रहते हैं। चि० संतोक[4]को मेरा आशीर्वाद। वहां सबको यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

१२

(जुहू,)
सोमवार
(५-५-'२४)

चि० बहन मणि,

तुम्हारे पत्रकी बाट कल अुसी तरह देखी, जैसे पपीहा बरसातकी देखता है। आज सुबह प्रार्थनाके बाद पहला पत्र तुम्हारा देखा। देवदासने कहा कि कल शामको मणिबहनका पत्र मिला।

भाअी . . . लिखते हैं कि थकावट रहने पर भी वहां[5] तबीयत यहांसे अधिक अच्छी है। अिसी तरह चलता रहे तो हम सब वहां आ जायंगे। दुर्गाबहन[6]की तबीयत भी वहां ठिकाने आ जाय तो कितना अच्छा हो! अुनसे कहना कि मुझे पत्र लिखें। महादेवभाअीको मद्रास नहीं भेजा। वे वापस साबरमती पहुंच गये हैं।

---

१. २. बापूजीके भतीजे।

३. श्री छगनलाल गांधीकी पत्नी।

४. स्व० मगनलाल गांधीकी पत्नी।

५. मैं बीमार थी अिसलिअे पहले मुझे अपने पास रखनेको जुहू बुलवाया। वहां फर्क न पड़ा तो हजीरा भेजा।

६. स्व० दुर्गाबहन, स्व० महादेवभाअीकी पत्नी।

यहांसे जो कुछ चाहिये वह मंगवा लेना। मांगे विना मां भी नहीं परोसती। सच तो यह है कि मां ही नहीं परोसती। दूसरोंको शिष्टता दिखानी पड़ती है। मांको शिष्टता दिखानेकी फुरसत ही नहीं होती। मां विवेककी मूर्ति है। तुम्हें मालूम है कि मैं अैसी 'मां' बननेकी शक्तिभर कोशिश कर रहा हूं।

राधा और कीकीवहन ठीक हैं, अैसा कहा जा सकता है। दोनोंका तापमान ९९° से अधिक नहीं चढ़ता।

शौकतअली[1] दो दिन रहकर गये।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन वल्लभभाअी पटेल,
खीमजी आसर वीरजी सेनेटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१३

(जुहू,)
(७–५–'२४)

चि० वहन मणि,

तुम्हारी डाक नियमपूर्वक आने लगी है। अिससे मुझे शान्ति रहती है। धीरज और आत्म-विश्वास रखना — दवासे भी विश्वास ज्यादा फायदा करेगा। प्रभुदासका पंचगनी जाना स्थगित कर दिया है। चि० राधा ठीक है। प्रार्थनामें शामको आती है। कीकीवहन जैसी थी वैसी ही हैं। चि० गिरधारी[2] कल अहमदावाद गया।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

---

१. मौलाना शौकतअली। अली भाअियोंमें वड़े।

२. आचार्य कृपालानीका भतीजा।

१४

(जुहू,)
(११-५-'२४)
रविवार

चि० बहन मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। यह मेरा चौथा पत्र है। अेक पत्र और दो कार्ड मैं लिख चुका हूं। तुमने अेक ही कार्डकी पहुंच भेजी है।

आत्म-विश्वास सच्चा तब कहा जायगा जब वह निराशाके समय भी अचल रहे। सत्य और अहिंसामें मेरा विश्वास हो, तो मैं नाजुक समयमें भी अुनका पालन करूंगा। भले ही बुखार आये तो भी आशा हरगिज न छोड़ी जाय। हम गाफिल न रहें, परन्तु चिन्ता न करें। 'त्यागमूर्ति'[1] के बारेमें तुम्हारी आलोचना देखनेको मैं आतुर हो रहा हूं। मुझे पत्र लिखना हरगिज न भूलना। तुम्हारे वहां और कोअी आकर रह सके अैसी गुंजाअिश है क्या? वहां वसुमतिबहन[2]को भेजनेका जी होता है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१५

(जुहू,
१४-५-'२४)
बुधवार

चि० बहन मणि,

कल तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। पता नहीं चलता कि मेरे पत्र तुम्हें मिलते हैं या नहीं। सप्ताहमें अेक लिखनेके बजाय मैंने लगभग हर तीसरे दिन लिखे हैं। बुखार जरूर जायगा। खाया जाता है और

१. स्त्रियोंके प्रश्नोंके बारेमें बापूजीके लेखोंका संग्रह। (प्रकाशक: नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४)

२. अेक आश्रमवासी।

दस्त ठीक आता है, अिसलिअे मैं मानता हूं कि न जानेका सवाल ही नहीं रहता। बीमारी पुरानी है, अिसलिअे देर हो रही है। 'त्यागमूर्ति' के बारेमें आलोचना लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० बहन मणि वल्लभभाअी पटेल,
सेठ आसरका सेनिटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१६

(जुहू,
१५–५–'२४)
वै० सु० १२

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम २० तारीख तक चली जाओ, यह तो बिलकुल ठीक नहीं होगा। वहां यह मास तो पूरा करना ही चाहिये। मेरा वहां आना तो हो ही कैसे सकता है? २९ तारीखको मुझे साबरमती जरूर पहुंचना है। वसुमतीबहन आना चाहेगी तो बताअूंगा। आशा कम है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
सेठ आसरका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१७

(जुहू,
१७–५–'२४)

चि० मणि,

अहमदाबाद पहुंचनेके बाद देखेंगे कि दवा ली जाय या नहीं। बिलकुल अच्छी हुअे बिना वहांसे हरगिज नहीं निकलना है। वसुमती-बहन कदाचित् सोमवारको चलकर वहां आयेंगी। भाअी . . . अुनका

सूरतका घर जानते हैं। वहां जाकर देखें। यदि वे आ गओी हों तो अुन्हें ले जायं। क्या वहां कोओी अलग मकान मिलते हैं? जहां तक हो सकेगा तार दिला दूंगा। अभी वसुमतीवहन अिंजेक्शन ले रही हैं। दुर्गावहनका क्या हाल है? क्या वे पत्र लिखेंगी ही नहीं? मेरा हाथ कांपता जरूर है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभाओी पटेल,
आसर सेठका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१८

(जुहू,
२०–५–'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र और कार्ड मिले। 'त्यागमूर्ति' के बारेमें पत्र पढ़कर मुझे तो वहुत ही हर्ष हुआ। यह निर्मलता और संयम-वृत्ति संग्रहणीय है। अिसकी चर्चा तो हम मिलेंगे तव करेंगे। अब तो वुखारको भी निकालकर चंगी हो जाओ तो ओीश्वरकी कृपा हो। वसुमतीवहन देवलाली जायेंगी, अिसलिअे वहां नहीं आयेंगी। वहांसे तुरन्त जानेका विचार ही न किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

चि० दुर्गा,

तुमने तो मुझे पत्र ही नहीं लिखा। वहां तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापू

चि० मणिवहन वल्लभभाओी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१९

(जुहू,
ता० २६ मअी, १९२४)
सोमवार

चि० मणि,

तुम तो जल्दी ही पहुंच गअी[1]। मेरी तीव्र अिच्छा है कि तुम भाअी-वहन आश्रममें अलग कोठरी लेकर रहो। छात्रालयमें खाओ, हाथसे वनाओ या वाके साथ अनुकूल पड़े तो वहां खाओ। जैसा तुम दोनोंको अनुकूल हो वैसा करो। वहांसे कॉलेजमें जा सकते हैं।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
वल्लभभाअी वैरिस्टर,
अहमदावाद

२०

(अहमदावाद,
२६–९–'२४)

चि० मणि,

वाह, कल तुम सव आये और चले गये[2]। अव सन्देश भेजती हो! वीमारको जितनी वार चक्कर लगाना हो लगा सकता है। अुसे वचन नहीं वांधता। अिसलिअे न आनेके लिअे माफी है। और आनेका विचार हो तव छूट भी है। मुझे तो अेक ही काम है। किसी तरह अच्छी हो जाओ।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

---

१. मैं पू० वापूजीसे पहले अहमदावाद आ गअी थी।

२. पू० वापूजीसे मिलने सावरमती आश्रममें गये थे परन्तु वे सो गये थे, अिसलिअे मिले विना वापस चले आये थे।

२१

(दिल्ली,
२६–९–'२४)

चि० मणि,

मेरे अुपवाससे[1] बिलकुल घबरानेकी जरूरत नहीं। शक्ति अभी खूब है। २१ दिन निर्विघ्न पार हो जायंगे, अैसा मैं मानता हूं। डॉक्टरोंकी भी यही राय है। अपनी तबीयत खूब संभालना। घूमनेका महावरा खूब रखना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२२

दिल्ली,
२४–१०–'२४

चि० मणिबहन तथा डाह्याभाअी,

अिस साल तुम्हें अपने शुभाशीष[2] देने वहां मौजूद नहीं रहूंगी, परन्तु अिस पत्र द्वारा और अपने मनसे तो तुम्हें अपने शुभाशीष दे ही रही हूं। तुम्हारे लिअे भी यही चाहती हूं कि तुम्हारी सकल शुभ-कामनायें सफल हों। जैसे हो अुससे अधिक तंदुरुस्त रहो और पढ़ाअी पूरी करके देशके सच्चे सेवक बनो। बापूजीकी तबीयत दिन-दिन सुधरती जा रही है। यह पत्र मिलेगा अुस दिन तो तुम दोनों भलेचंगे

---

१. पू० बापूजीने हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकताके सिलसिलेमें ता० १७–९–'२४ से ८–१०–'२४ तक २१ दिनके अुपवास किये थे।

२. नये वर्षके लिअे।

और स्वस्थ होगे ही, अैसी आशा रखती हूं। बापूजी भी तुम्हें याद करते हैं और तुम दोनोंके लिअे अुनके शुभाशीष हैं ही।

शुभेच्छु बाके शुभाशीष

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२३

(दिल्ली,)
का० सु० २
(१०-११-'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। अधिक बार लिखो तो बहुत अच्छा।

बापूको आज लिखा है। चिन्ता छोड़ देनेको कहा है।

तुम फिर हजीरा जानेका विचार नहीं करोगी? पास[1] होनेके लिअे बधाअी चाहिये क्या? चाहिये तो समझ लेना। डाह्याभाअी अेक विषयमें फेल हो गये। कोअी बात नहीं। फेल होनेका अर्थ है अुस विषयमें अधिक प्रवीण होना। फेल होनेवाले विद्यार्थी अकसर निराश हो जाते हैं। यह भूल है। जो आलसी हों या जिनकी नजर नौकरी पर हो वही निराश हो सकते हैं। अभ्यासीके लिअे तो असफलता अधिक प्रयत्नका सुअवसर होती है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

---

१. गुजरात विद्यापीठकी स्नातक-परीक्षा।

२४

(कलकत्ता,)
वै० वदी ६,
गुरुवार
(१४–५–'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मैं खुश हुआ। औरतोंमें काम करना बहुत मुश्किल जरूर है। फिर भी धीरजसे जो हो सके वह कार्य किया जाय। डाह्याभाओी आबू अथवा नवी बन्दर गये ही होंगे। चूड़ियां[1] मेरे ध्यानमें अवश्य हैं। मैं भूलूंगा नहीं। वे ढाकामें मिलती हैं। और वहां मुझे तीन दिनमें पहुंचना है। बापू कहीं हवाखोरीके लिअे जानेवाले हैं?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाओी पटेल बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२५

(शान्ति निकेतन,
३१–५–'२५)
जे० सु० ८

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बा पत्र लिखनेका लोभ करने जाअूं तो शायद पत्र लिखा ही न जाय; अिसलिअे अितना ही लिखकर संतोष कर लेता हूं। तुम्हें चूड़ियां तो कभीकी मिल गअी होंगी। वे तो कलकत्तेसे ही भेजी हैं। दूसरी मैंने ढाकेमें खरीदी हैं वे अभी मेरे साथ हैं। वे तो जब मैं आअूंगा तभी तुम देखोगी। चि० डाह्या-

---

१. शंखकी चूड़ियां, जो बंगालकी विशेषता मानी जाती हैं, मैंने बापूजीसे मंगवाअी थीं।

भाअीके बारेमें लम्बा जवाब महादेवने लिखा होगा। अुन्हें कमाना हो तो भले ही कमायें। अुनकी तबीयत अच्छी हो गअी है, यह जानकर खुशी हुअी। चि० यशोदा[1] से मुझे पत्र लिखनेको कहना। बापूकी खूब सेवा करना और अुन पर जो बोझ है अुसमें जितना भाग बटाया जा सके अुतना तुम तीनों बटाना। मुझे बंगालमें अेक मास तो बिताना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२६

जेठ बदी ६,
शुक्रवार
(१२-६-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। आज तो मैं जहाजमें हूं। चूड़ियां कलकत्तेमें हैं। वहां १८ तारीखको पहुंचना है। वहां पहुंचकर थैलीमें बंद करके पार्सलसे भेज दूंगा। परन्तु देवदास आश्रममें न आया हो तो भी जांच की जाय। अुसके नामकी थैली जरूर होगी। अुस पर कब्जा कर लिया जाय।

डाह्याभाअीने खेतीका काम पसन्द किया था। अुस परसे मैंने यह सलाह दी। परन्तु अुनका मन विदेश जानेका ही हो तो मैं रोकना नहीं चाहूंगा। विदेश जानेमें मुझे बड़ी आपत्ति यह है कि किसीसे रुपया मांगना पड़ सकता है। भले ही कोअी अुत्साहसे रुपया दे तो भी जहां तक हो सके हम न लें। यह आदर्श है। अुस पर टिके रहनेकी

१. स्व० यशोदा। डाह्याभाअीकी पत्नी।

हमारी शक्ति न हो तो किसीसे मदद लेकर भी जानेमें बाधा नहीं है। मुझे वहां आनेमें समय लगेगा। अभी १६ जुलाअी तक बंगालमें हूं। डाह्याभाअीको यहां आना हो तो आकर बात कर जायं अथवा आश्रममें आअूं तब करनी हो तो अुस समय कर लें। अुन्हें किसी भी तरह दुःखी न किया जाय। मैं अुनकी अिच्छाके अनुकूल होना चाहता हूं। मैं तो धीरे धीरे मार्गदर्शन करना चाहता हूं। तीन रास्ते हैं:

१. खानगी नौकरी कर ली जाय।

२. खेती की जाय।

३. अमरीका जाकर अधिक सीखा जाय।

अिनमें से जो अुनकी अिच्छा हो सो करें। अुसमें मुझे कोअी आपत्ति नहीं। चौथा रास्ता राष्ट्रकी सेवाका है। रुपया लेकर राष्ट्रकी सेवा करना अुन्हें पसन्द नहीं, अिसलिअे मैंने अुस रास्तेको नहीं गिनाया। अुन्हें वैद्यक सीखनेका शौक है? हो तो यहां राष्ट्रीय कॉलेज है, और दिल्लीमें भी है। डाह्याभाअी यह न जानते हों तो कह देना। यहां (कलकत्ते) का कॉलेज अच्छा माना जाता है। अुसमें अध्ययन करना हो तो कर सकते हैं।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। बीचमें जरा सरदी हो गअी थी। और तो कुछ भी नहीं था। हर ज़गह लोग काफी आराम देते हैं।

. . . को नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। अिससे अुसे संतोष रहता है। . . . प्रेमका भूखा है।

बापूकी सेवा खूब करना। जब मां मर जाती है और बाहरकी बहुत झंझटें होती हैं तब यदि बच्चे सेवावृत्तिवाले हों तो वे बापको अुसका सब दुःख भुला देते हैं। यह मैं अपने पिताके आज्ञाकारी पुत्रके नाते अपना अनुभव तुम भाअी-बहनको बता रहा हूं। अिससे बच्चोंका कितना कल्याण होता है, अिसका साक्षी भी मैं हूं। मां-बापको परमेश्वरकी तरह पूजनेका फल मैं प्रतिक्षण भोग रहा हूं। यह सब तुम दोनोंको लिख रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि बापू पर बड़ी जिम्मेदारी है। मैं तो अुसमें कोअी भाग नहीं ले सकता। पत्र लिखने तकका समय भी नहीं निकालता। अिसलिअे अपनी जिम्मेदारी भी तुम पर डाल रहा हूं।

स्वास्थ्यको खूब संभालना। अभ्यास पूर्ण करनेमें समय जाय तो असुकी चिन्ता न रखना। महादेव कहते थे कि तुम दोनों भाअी-बहनके अंग्रेजी शब्दोंके हिज्जे बहुत कच्चे हैं। यह सुधार कर लेना। जो भी सीखें वह ठीक ही सीखें। जहां भी शंका हो, शब्दकोष खोलें। और कुछ करनेकी जरूरत नहीं रहती।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२७

(कालीघाट,
कलकत्ता,
२९–६–'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। पिताकी सेवा करनेके अनेक प्रसंग ढूंढ़ना। वे ढूंढ़ने पड़ते ही नहीं। फिर भी तुम लिखती हो सो समझ लिया। डाह्याभाअी 'नवजीवन' में जाते ही हैं तो चित्त लगाकर काम करें। स्वामी[1] की आज्ञा माननेमें बहुत लाभ है। वह सुन्दर तालीम है। भले मजदूरीका ही काम सौंपें तो असे भी दिल लगाकर करें। मैं कभी न कभी थोड़े वक्तके लिअे आ जाअूंगा; परन्तु समय तो अीश्वर

१. स्वामी आनंद। पू० बापूजीके निकटके साथी, 'नवजीवन' के आरंभमें अुन्होंने अुसमें खूब काम किया था। अुसके विकासमें अुनका बड़ा हाथ रहा है।

ही जाने। बापूकी तबीयतके समाचार मुझे देती रहो। बापूके अंग्रेजी हिज्जे कच्चे होनेसे तुम्हारे भी वैसे ही रहने चाहिये, अैसा कोअी नियम है क्या? बापके गुणोंका अनुकरण होता है, दोषोंका हरगिज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२८

(कालीघाट,
कलकत्ता,
१६–७–'२५)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दूसरी चूड़ियोंकी अभी जरूरत हो तो मुझे लिखना। डाकसे भेज दूंगा। डाह्याभाअी कलकत्तेके राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेजमें पढ़ेंगे? वह अच्छा चल रहा दीखता है। अथवा डाह्याभाअीकी हार्दिक अिच्छा क्या है? मैं अितना काममें फंसा हूं कि लम्बे पत्र लिखे ही नहीं जा सकते।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२९

(मुर्शिदाबाद जिला,
६–८–'२५)
श्रावण वदी २

चि० मणि,

तुम्हारा और डाह्याभाअीका पत्र मुझे मिल गया था। डाह्याभाअीके पत्रका अुत्तर तुरंत ही दे देनेको मैंने महादेवसे कह दिया था। वह मिल गया होगा। डाह्याभाअीको जो सवाल पूछा था अुसका अुत्तर ही अुन्होंने नहीं दिया। डाह्याभाअीको सर्जरी सीखनी हो तो यहां तथा कलकत्तामें, दोनों जगह पूरे साधन हैं। अुन कॉलेजोंका सरकारके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं है।

तुम्हें मणिलाल (कोठारी) ने १२ चूड़ियां भेजी हैं, अिसलिअे अभी तो तुम्हें अधिककी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु यदि ये चूड़ियां वहुत टूटें तो महंगी पड़ेंगी, यह समझ लेना। अिससे तो चांदीकी अथवा सूतकी गूंथी हुअी सस्ती पड़ेंगी। वे अैसी गूंथी जा सकती हैं कि मोटी होती हैं, मजबूत होती हैं और हमेशा धोअी जा सकती हैं। परन्तु यह विचार हम मिलेंगे तब करेंगे। तब तकके लिअे तो यह संग्रह काफी है।

मेरा वहां आना तो जब होगा तब होगा। शायद अेक दो दिनके लिअे अक्तूबरमें आ जाअूं।

वाअिसिकल ली है तो अब अुस पर कसरत भी करना।

आज हम मुर्शिदाबाद जिलेमें हैं। मणिलाल (कोठारी) यहीं हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

३०

श्रावण वदी अमावस,
बुधवार
१९-८-'२५

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम चूड़ियोंके बिना रहो। मेरी सलाह तो चांदीकी चूड़ियां पहननेकी है। केवल शीशमकी तो ठीक नहीं लगतीं। परन्तु शंखकी पहननेमें कोअी हर्ज नहीं है। मैंने तो देख लिया कि यह सस्ती चीज नहीं है। डाह्याभाअीके बारेमें जवाब लिख चुका हूं। कुल मिलाकर मेरी नजर तिबिया कॉलेज[1] पर टिकती है। परन्तु अब तो मैं वहां ५ सितम्बरको पहुंचनेकी आशा रखता हूं। अिसलिअे हम मिलकर निश्चय करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
[illegible]ासा चौकी,
अहमदाबाद

---

१. हकीम अजमलखां साहब द्वारा दिल्लीमें स्थापित यूनानी पद्धतिका कॉलेज।

३१

(बांकीपुर,
२६–९–'२५)
शनिवार

चि० मणि,

यह रहा देवधरका तार[1]। मेरा खयाल है कि अिस बीच प्रतीक्षा की जाय। परन्तु अिस बीच यदि बम्बअीके सेवासदनमें रहना हो तो प्रबंध कर दूं। अथवा वर्धामें जो कन्या पाठशाला है, अुसमें काम करनेकी अिच्छा हो तो वह करो। जमनालालजी कलकत्तेकी पाठशालाको जानते हैं। अुसके लिअे वे अिनकार करते हैं। परन्तु वर्धाकी कन्या पाठशालामें अितजाम कर देनेको कहते हैं। वर्धामें मराठी ही है। और वहां तो घर जैसा है, अिसलिअे पहला अनुभव वहां लिया जाय तो ठीक ही है।

अब जो अिच्छा हो मुझे बताओ।

मुझे अुत्तर पटनाके पते पर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

---

१. मुझे अनुभव लेने और काम करनेके लिअे कहां रहना चाहिये अिसकी अिस पत्रमें चर्चा है। श्री देवधरका तार था कि वे अपनी देख-रेखमें चलनेवाले पूनाके सेवासदनमें मुझे दिसम्बरमें भरती कर सकेंगे।

३२

(कोटड़ा,
कच्छ,
२५–१०–'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे जल जानेकी वात भी सुनी। अव तो थोड़े ही दिनोंमें वहां आना है, अिसलिअे मिलेंगे तव वातें करेंगे। हाथ विलकुल अच्छा हो गया होगा। डाह्याभाअीके[1] साथ अेक वार लंवी वातचीत हुअी है। फिर आजकलमें करूंगा। वहां (अहमदावाद) पहुंचनेसे पहले समझ लूंगा। तुम्हारे लिअे मैंने तो निश्चय कर ही लिया है।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाअी वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

३३

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती,
७–१२–'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिलते हैं। तुम्हारा सारा कार्यक्रम आ गया है। वहां सेवासदनमें सव कुछ नया लगता है, यह तो मैं जानता ही था। फिर भी वहांका नियम, वहांकी पद्धति, वहांका अुत्साह, वहांकी प्रामाणिकता वगैरा आकर्पित करनेवाली है। फिर, अिसके वरावर अन्य कोअी जीवित संस्था शायद ही कहीं होगी। हमें अुसकी पद्धति वगैराको हमारी अपनी पसन्दके कार्यमें दाखिल करना है। हमें तो गुणग्राही

---

१. डाह्याभाअी पू० वापूजीके साथ कच्छके दौरेमें थे।

बनना है। हमें जितना पसन्द हो अुतना ले लें। विरोधी मतवाले समाजमें भी हमें सहिष्णुतापूर्वक रहना तो आना ही चाहिये न?

तुम्हारी तबीयत अच्छी रहती होगी। मेरी चिन्ता न करना। मुझमें शक्ति आती जा रही है। आज बम्बअी जा रहा हूं। बम्बअी अेक दिन रहकर वहांसे वर्धा जाअूंगा। वर्धा नियमित रूपमें पत्र लिखना। वहांके अनुभवोंकी डायरी रखो तो अच्छा हो।

डाह्याभाअी अभी तो विट्ठलभाअीके आग्रहसे अुनके पास[1] जायंगे। दो चार दिनमें वहां जायंगे। फिर अुनके साथ महासभा (कांग्रेसमें) में आयेंगे।

तुम्हारे लिअे तो जब तक चाहो वहीं रहना अच्छा है। मनमें अुठनेवाली सभी तरंगें बताना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
ठि० सेवासदन,
पूना सिटी

३४

वर्धा,
शुक्रवार
(१२-१२-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वहांका काम पूरा करनेके बाद बम्बअी रहना हो तो भले ही रहो, नहीं तो तुरन्त यहां आ जाओ। ज्यादातर तो यहां लम्बी छुट्टियां नहीं होतीं। अिसलिअे कन्या पाठशालामें तुरंत काम मिल जायगा। साथ ही जमनालालजी[2] की लड़की कमला और मदालसाको भी तुम्हीं पढ़ाओ, यह निश्चय किया है। अभी तो जानकी-बहनके साथ ही रहनेका निश्चय रखना। तुम आओगी तबसे तुम्हारा

१. विट्ठलभाअी अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके अध्यक्ष थे। अुन्होंने डाह्याभाअीको अपने पास रहनेको दिल्ली बुलाया था।

२. स्व० जमनालालजी बजाज। मध्यप्रदेशके गांधीजीके मुख्य साथी, चरखा-संघके अध्यक्ष, कांग्रेसके खजानची १९२१-४२।

वेतन ५० रुपये प्रति मास लिखा जायगा। अिसलिअे जब आना हो आ जाओ। कांग्रेसमें जानेकी अिच्छा हो जाय तो यहांसे मेरे साथ अथवा वाला वाला कानपुर चली जाना। मुझे २३ तारीखको कानपुर पहुंचना है। पहली जनवरीको तुम्हें यहां पहुंच जाना चाहिये।

मेरा वजन[1] घट गया था। वह ९ पौण्ड वापस बढ़ गया है। अब ६ बाकी रहा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
सेवासदन, सदाशिव पेठ,
पूना सिटी

३५

वर्धा,
माघ वदी अमावस,
(१६-१२-'२५)

चि० मणि,

मेरे पत्र मिले होंगे। यदि अहमदाबाद जानेकी जरूरत ही लगे तो चली जाना। सिर्फ अितना याद रखना कि यहां पहली जनवरीको तो काम[2] पर लग ही जाना चाहिये। अब मिलनेका मोह कम रखा जाय, अिसीमें समझदारी मालूम होती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
सेवासदन,
सदाशिव पेठ,
पूना सिटी

---

१. साबरमती आश्रममें बालकोंके व्यवहारमें मलिनता पाअी गअी। अिसके लिअे प्रायश्चित्त-स्वरूप पू० बापूजीने २४-११-'२५ से १-१२-'२५ तक सात दिनके अुपवास किये थे। अुससे घटा हुआ वजन।

२. वर्धाकी कन्या पाठशालामें।

३६

(सत्याग्रहाश्रम, साबरमती,
जनवरी, १९२६)

चि० मणि,

तुम्हारे वहां (वर्धा) पहुंच जानेका समाचार जमनालालजीने लिखा है। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखना। कमला[1] और मदालसा[1]को खूब संभालना। वैसे कक्षाका तो कहना ही क्या? देवधरको कृतज्ञताका पत्र लिखा था क्या? न लिखा हो तो लिखना, मराठीमें।

बापूके आशीर्वाद

. . . यहां आया है। मैं आया अुसी दिन। नन्दूबहन[2]के पास गया था। अुन्होंने खूब धीरज[3] दिखाया है।

श्रीमती मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

---

१. स्व० जमनालालजी बजाजकी लड़कियां।

२. स्व० विजयागौरी कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध स्व० डॉ० कानूगाकी पत्नी।

३. श्री नंदूबहन कानूगाका छोटा बारह वर्षका पुत्र अेकाअेक गुजर गया, जिसका अुन्हें बड़ा आघात लगा था।

३७

आश्रम,
(साबरमती)
बुधवार
(६–१–'२६)

चि० मणि,

अेक पत्र मैंने विनोबा[1] के पत्रमें तुम्हें भेजा था। वह तो काहेको मिला होगा? क्योंकि विनोबा तो यहां हैं। तुम्हारा पत्र कल मिला। चि० कमलाको जो पसन्द हो वह शिक्षा दी जाय। अेक दो हिन्दी पुस्तकें ली जायं और अुन्हें पढ़वाया जाय। कमलाका अंकगणित बहुत कच्चा है, वह सिखाया जाय। वह गुजराती समझ लेती है। और भी जो विषय अुसे पसन्द हों वे सिखाये जायं। रामायणमें से थोड़ा भाग साथ पढ़ो तो भी ठीक है। मुख्य बात तो कमलामें अध्ययनका रस पैदा करनेकी है। मराठी लिखना-पढ़ना जरा ज्यादा जान लेना। नित्य घूमने जाना और सब कुछ नियमपूर्वक करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

---

१. आचार्य विनोबा भावे। आश्रमवासी। १९४०में हमारे राष्ट्रकी सम्मतिके बिना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू किया गया, तब बापूजीने अुन्हें प्रथम सत्याग्रही चुनकर सम्मानित किया था। बापूजीके गुजरनेके बाद भूदान-आन्दोलनके प्रणेता।

३८

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती,
११–१–’२६)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे सव समाचार देता है। भाअी देवधरके नामका पत्र अच्छा है। अुन्हें अच्छा लगेगा।

वहां सव नया है, अिसलिअे जरा घवराहट होती है। परन्तु अिस तरह कायर नहीं वनना चाहिये। कमला जितनी वढ़ सकती है अुतना अुसे वढ़ाया जाय। धीरे धीरे ठिकाने आयेगी। अुसे वातोंमें लगाया जाय। घूमने निकले तो घूमने ले जाओ। अुसे प्रेमसे जीता जाय।

मराठी लिखने और पढ़ानेकी आदत तुम्हें नहीं है। दोनों अभ्याससे आयेंगी। वहां मराठी है, यह तो हम जानते ही थे। हिन्दी घर पर पढ़कर सीख लो। वहां किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेना।

खादीकी वात दूसरोंको धीरेसे समझाअी जाय और वे जितना मानें अुतनेको गनीमत समझा जाय।

अर्थात् प्रत्येक वस्तु निष्काम वृत्तिसे की जाय। हम प्रयत्नके मालिक हैं, फलके नहीं। मेहनत करके संपूर्ण सन्तोष मानें। अुसमें कभी न हारें। अन्तमें तो यहां काम करनेका समय आयेगा ही।

मैं यहां रहूं अुसी समय तुम्हें दूर रहना है, अिसका खेद न मानना। पत्र द्वारा तो मिलेंगे ही।

अपना स्वास्थ्य संभालना। और संभालनेके लिअे मनको विलकुल प्रफुल्लित रखना।

वापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

३९

(सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती,
३-२-'२६)
बुधवार

चि० मणि,

देवदास तो यहां नहीं है। वह अभी तक देवलालीमें ही है। मेरी तबीयत अब अच्छी है। कमजोरी है, वह मिट जायगी। अब वहां जी लग गया होगा। कमला जितनी आगे चले अुतनी चलाना। चिन्ता बिलकुल न करना। स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। घूमने हमेशा जाना। गंगूबाअी[1] जो आश्रम (वर्धा) में है शायद चली जायगी। कमला (बजाज) के विवाहके समय यदि संभव हो तो यहां आना। मुझे नियमित पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (बी० अेन० रेलवे)

४०

(सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती,
१५-२-'२६)
सोमवार

चि० मणि,

कार्ड मिला। डाकका वक्त है। यदि तुम दोनों[2] किसी निश्चय पर पहुंचे होओ तो अुसके अनुसार करना। यदि न पहुंचे होओ तो हम सब मिलकर निर्णय करेंगे। मैं यहां बैठकर नहीं कर सकता। अभी

१. अुस समय वर्धा आश्रममें रहनेवाली अेक बहन।

२. श्री जमनालालजी तथा मैं।

आओ या जमनालालजीके साथ, अिसका निर्णय तो वहांके कर्तव्यका विचार करके तुम्हींको करना है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

४१

देवलाली,
(१५-५-'२६)

चि० मणि

वाको राजी कर लिया[1]। परन्तु मंगलवारसे पहले आनेसे अिनकार कर दिया, अिसलिअे अव तो वहां बुधवारको आयेंगी। सूरजवहन[2]को कहना। शिष्य और शिष्या[3] संतोष दे रहे होंगे। सवमें ओत-प्रोत हो जाना सीखो। नंदूवहन (कानूगा)को मनाया जा सके तो मनाकर ले आओ[4]। कार्यक्रम वदल गया है यह कृष्णदास (गांधी) ने वताया होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

---

१. श्री देवदासभाअीका वम्वअीमें अेपेंडिसाअिटिसका ऑपरेशन कराया गया था। अुस समय वा आश्रमसे वम्वअी गअी थीं। पू० वापूजीने अुन्हें आश्रम लौटकर वहांकी जिम्मेदारी संभालनेको राजी किया था, हालांकि वे अधिक समय देवदासभाअीके पास रहना चाहती थीं।

२. अेक आश्रमवासी वहन।

३. श्री देवदासभाअीके ऑपरेशनके समय वा वम्वअी गअीं तव अुनके सुपुर्द जो अेक वहन और दो वालक थे अुन्हें वा मुझे संभालनेके लिअे सौंप गअी थीं।

४. श्री नंदूवहन कानूगा पुत्रके देहान्तके वाद वहुत गमगीन रहती थीं। अुन्हें आश्रममें खींचनेका प्रयत्न अुस समय वापूजी कर रहे थे।

४२

(१९२६)

चि० मणि,[1]

वाह, कुमारियां बीमार पड़ें तो मैं दुखड़ा किसके पास रोअूं? यह तो समुद्रमें आग लगनेके बराबर हुआ। सेवा करनेके लिअे भी शरीर-रक्षाकी कला सीख लेनी चाहिये। मेरा तो खयाल है कि जैसे तुम सब कपड़े पहनती हो वैसे ही मच्छरदानी[2] भी रातको पहननी चाहिये। और तो मैंने बच्चोंके पत्रमें जो लिखा है सो देखना।

आशा है अिस पत्रके मिलने तक तो बीमारी चली गयी होगी।

बापूके आशीर्वाद

४३

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

अिधर तो तुम्हारा अेक भी पत्र नहीं आया। अब तबीयत बिलकुल अच्छी हो गअी क्या? जैसे जैसे व्यर्थकी चिन्ता[3] घटेगी और चित्त बालककी तरह शुद्ध होगा, वैसे वैसे बीमारियां कम हो जायंगी। 'शुद्ध' का अर्थ समझ लो। शुद्ध चित्तको किसीका दुःख नहीं लगता, अुसमें किसीका दोष नहीं ठहरता, वह किसीका बुरा नहीं देखता। यह भव्य स्थिति है। मैं कह दूं कि मेरी तो यह स्थिति नहीं है। मैं अुस स्थितिको पहुंचना चाहता हूं। परन्तु अुससे बहुत दूर हूं। अिस स्थितिको अखंड ब्रह्मचारी और

---

१. ४२ से ४७ नंबरके पत्र आश्रमवासियोंके नामके पत्रोंके साथ आश्रमके व्यवस्थापकके मारफत आये थे।

२. आश्रममें मच्छर बहुत थे, परन्तु मैं मच्छरदानी अिस्तेमाल नहीं करती थी।

३. १९२५–२६ में मैं बहुत अस्वस्थ रहती थी।

ब्रह्मचारिणी जल्दी पहुंचते हैं। अैसोंको मैंने देखा है। अेण्ड्रूज[1] अिस स्थितिके नजदीक हैं। अिन्हें मूर्ख माननेवालोंको तुम मूर्ख जानना। अैसी शुद्धता तुममें आनी ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४४

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। बापूसे भी सब हाल सुने। बीमारीके बारेमें अब अधिक नहीं लिखता, क्योंकि देरसे देर शनिवारको तो मिलनेकी आशा है। परन्तु तुम्हें झट अच्छी और ताजी हो जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४५

गोंदिया,
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारी भावनाको मैं जानता हूं। परन्तु मेरे ही साथ जन्मभर थोड़े रहा जा सकता है? मेरे कामके साथ रहा जा सकता है। अिसलिअे अुसके वास्ते तैयार हो जाओ। वहां अेक भी मिनट बेकार न जाने देना। मुझे लिखती रहना। यथासंभव मैं भी लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१. दीनबन्धुके नामसे प्रसिद्ध स्व० सी० अेफ० अेण्ड्रूज।

४६

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे अेक अुद्‌गार परसे महादेवने तुम्हारी अनुमतिकी प्रतीक्षा किये विना मुझे तुम्हारा पत्र वता दिया। मुझसे कुछ छिपानेकी महादेवसे कोअी आशा न रखे। यह वात अुनकी शक्तिके बाहर है। हम कुछ आदतें डालते हैं, फिर अुनसे अुलटा करना शक्तिके बाहर हो जाता है। अच्छी आदतोंके लिअे यह गुण पैदा करने लायक है। अहिंसाका शुद्ध ध्यान धरनेवाला अन्तमें हिंसा करनेमें असमर्थ हो जाता है। यानी शरीरसे नहीं परन्तु विचारसे। विचार ही कार्यका मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

मेरा वियोग जितना तुम्हें खटकता है अुतना ही मुझे भी खटका हो तो? और अभी भी खटकता हो तो? तुमने श्रेयको पसन्द किया, मैंने भी अुसीको पसन्द किया। अिसीमें तुम्हारा, मेरा और सवका कल्याण है। श्रेयको प्रेय बनाना शिक्षाका फल होना चाहिये। अिसलिअे आश्रममें रहना श्रेयस्कर है, अैसा यदि समझती हो तो अुसे प्रिय वनाओ। अिसमें अपने मनको या मुझे धोखा न देना। जव आश्रममें रहना अच्छा न लगे तव तुम्हें अन्यत्र रखनेको मैं तैयार ही हूं, यह समझ लो। मुझे खुलकर लिखो। भले ही मैं अुसे न समझूं। भले ही अुसके अुत्तरमें भाषण दूं। वड़ोंके भाषण सहन करना सीखना चाहिये।

वापूके आशीर्वाद

४७

सोमवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। काका (विट्ठलभाअी) की मौजूदगीमें[1] शहरमें जाना तय किया, यह ठीक ही किया।

मनु[2] और मणिलाल[3] धीरजसे ही ठिकाने आयेंगे।

वा फिर कह रही थी कि रविवारको निकलेगी। बुधको तो वह पहुंच ही जायगी।

यह रातको सोनेसे पहले लिख रहा हूं। अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

४८

वर्धा,
मौनवार
(६–१२–'२६)

चि० मणि,

सब बहनोंका पत्र अिसके साथ है। अब तुम्हारा। अभी तक तुम्हारी अनिश्चित स्थिति देखकर मुझे दुःख हो रहा है। मैं नहीं मानता कि तुम्हारे लिअे आश्रमसे अधिक अच्छी कोअी और जगह हो सकती है। हो सकता है कि आश्रममें भी तुम्हारा जी न लगे। अिस स्थितिको दूर करनेका प्रयत्न करो। कब्ज रहता है, पर अिसका अुपाय तो तुम्हारे हाथमें ही है। अथवा तुम अहमदाबादका पानी मंगाकर पिओ। पीने जितना आसानीसे मंगाया जा सकता है। नदीका पानी अुबाल कर पिओ तो भी वही

---

१. विट्ठलभाअी विधान-सभाके अध्यक्ष चुने जानेके बाद अपने मतदाता-क्षेत्रमें अर्थात् गुजरातमें दौरा करनेके लिअे आये थे।

२. बापूजीके बड़े लड़के हरिलाल गांधीकी पुत्री।

३. आश्रमका अेक विद्यार्थी।

काम होगा। तुम्हें प्रफुल्लित रहनेका दृढ़ निश्चय करना चाहिये। १४ तारीखके वाद यहां आनेका विचार स्थिर रखना। यहां संस्कृतकी पढ़ाअीमें तो मदद मिलेगी ही। हवा तो अनुकूल है ही। मुझे खुले दिलसे जो कुछ लिखना हो अुसके लिखनेमें संकोच न रखना।

रमणीकलालभाअी[1]से कहना कि पूंजाभाअी[2]के स्वास्थ्यके समाचार मुझे नहीं मिले, अिससे चिन्ता रहती है। अुनका पता क्या है? अुन्हें स्वास्थ्यके समाचार मिलते हों तो लिखें।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

४९

वर्धा,
वुधवार
(८-१२-'२६)

चि० मणि,

तुम्हारा कार्ड मिला। खुशीसे आओ। रातकी गाड़ी लेनेके वजाय सुवहकी लेना अच्छा है। फिर जैसी मरजी हो वैसा करना। मुझे अव कोअी शादी तो करनी नहीं है कि प्रतिक्षण विचार वदलूं। यह अिजारा तो कन्याओंका होता है। कुछ हद तक कुमार भी अुसे भोगते हैं।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

---

१. श्री रमणीकलाल मोदी। आश्रमकी पाठशालाके शिक्षक।

२. वे राजचन्द्रजीके भक्त थे और पू० वापूजी भारतमें आये तवसे अुनके संसर्गमें रहते थे। कुछ समय गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके कोपाध्यक्ष रहे थे। जीवनके अन्तिम दो वर्षोमें वे सावरमती आश्रममें आकर रहे थे।

(१-१-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अिस पत्रके पीछेका पत्र पढ़ना[1]। अिस कामके लिअे तुम्हें भेजनेका विचार होता है। तुम या मीराबाअी ही वहां काम कर सकती हो। सिंधी लड़कियां होंगी, अिसलिअे अंग्रेजी और हिन्दीकी जरूरत होगी। मीराबाअी अभी भेजी नहीं जा सकती। अिस-लिअे मैं चाहता हूं कि तुम जाओ। यदि निश्चय हो जाय तो बताना।

तुम्हें सुख-दुःख सहकर भी आश्रममें अर्थात् मेरे साथ ही रहना है। अपना अन्तर मेरे सामने अुंड़ेल कर मुझसे 'मां' का काम लेना।

---

१. कराचीसे श्री नारायणदास आनन्दजीने कराची म्युनिसिपल कन्या पाठशालामें तकली सिखानेके लिअे अेक बहनकी बापूसे मांग की थी। यह पत्र अुसीके सिलसिलेमें है। अुनके पत्रका प्रस्तुत भाग अिस प्रकार है:

कराची,
२०-१२-'२६

परम पूज्यपाद बापूजीकी सेवामें,

म्युनिसिपल कन्या पाठशालाओंमें तकलीसे कातनेका काम शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ है। और अुसके लिअे अेक सिखानेवाला छह महीनेके लिअे ५० रु० वेतन पर रखनेका निश्चय भी हुआ है। यहां अैसी महिला मिल नहीं सकती। अतः अिस कार्यमें आपकी सहायता लेना चाहता हूं। यदि अैसी किसी बहनको अहमदाबाद या दूसरी जगहसे भेज सकें—नियुक्तिकी अवधि बढ़ाअी भी जा सकती है—तो लिखियेगा। परन्तु शिक्षिकाओं और लड़कियोंको दिलचस्पी हो सके, अैसी होशियार और साथ ही मिलनसार महिलाकी बड़ी जरूरत है।

नारायणदास आनन्दजीके
वन्दन

तुम्हारी नीरसताका कारण भीतर ही भीतर साथीका अभाव तो नहीं है न? मुझे तुम्हारे अेक हितैषीने आग्रहपूर्वक कहा है कि मुझे तुम्हारा विवाह कर ही देना चाहिये। यह बात अेक युवकके सिल-सिलेमें निकली। वह पाटीदार तो नहीं है, परन्तु योग्य है। मैंने कहा कि तुम्हारे बारेमें मैं तो निर्भय हूं। तुम्हारी विवाहकी अिच्छा होगी, यह अभी तो मैं नहीं देखता। तब अुन्होंने कहा, "आप मणिबहनको नहीं जानते।" अिस समय तो मैं मजाक नहीं कर रहा हूं, यह मेरी भाषा परसे तुम देख सकोगी। मुझे निर्भयतासे अुत्तर देना। अितना तो है ही कि जिसे कुमारी रहनेकी अिच्छा हो अुसे वीरांगना बनना चाहिये। अुसे प्रफुल्लित रहना चाहिये। नहीं तो लोग कहेंगे, "अिसकी शादी कर दो।"

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

५१

(सोदपुर,
३–१–'२७)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रोंकी मैंने आशा रखी थी, परन्तु अेक भी नहीं मिला। स्वास्थ्य मानसिक और शारीरिक अच्छा होगा। संस्कृत खूब चल रही होगी। मुझे ब्यौरेवार अुत्तर लिखना। ६ तारीख तक कोमीलामें रहूंगा। ९ तारीख तक काशीमें। काशीका पता गांधी-आश्रम, बनारस छावनी करना। बापूको पत्र लिखना। मालूम हुआ है कि वे तुम्हारी चिन्ता कर रहे हैं। हम सब मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
वर्धा, बी० अेन० रेलवे

५२

(काशी,
८-१-'२७)
शनिवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। वालजीभाअी[1]से पढ़नेकी व्यवस्था की है सो ठीक हुआ। अुनसे बहुत सीखा जा सकेगा।

तुम्हें शिक्षणसे क्यों मुक्त किया गया है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि जिस पत्रमें ये समाचार थे अुससे कारण मेरी समझमें नहीं आया। तुम खुद साहसपूर्वक पूछ सकती हो। मैं तो समझता था कि तुम्हें कारण बताया गया होगा। मैं निश्चित था, क्योंकि शिक्षा देना हो या न देना हो, तुम्हें आश्रममें ही रहना है और वेतन कहो या जो कुछ भी कहो, वह चालू ही रहेगा। तुम्हारी जिम्मेदारी मुझे अुठा लेनी है। शिक्षक पर रोष भी न करना। अुन्हें सारा तंत्र चलाना पड़ता है, अिसलिअे अुन्हें जो ठीक लगता है वैसा वे करते हैं। परन्तु कारण जाननेका तो तुम्हें हक है ही। वह जान लेना।

परन्तु अब तो तुम्हें कातना सिखानेकी तैयारी करनी है। अुसके सिलसिलेमें जो सीखना जरूरी हो वह सीख लेना है, अर्थात् चरखा सुधार, रुअीकी किस्में, लोढ़ना, पींजना, कातना, फुंकारना, आंटी बनाना, तार जोड़ना वगैरा सब क्रियाअें। माल बनाना आना चाहिये। साड़ी[2] चढ़ाना

---

१. श्री वालजी गोविन्दजी देसाअी। अेक आश्रमवासी, 'यंग अिंडिया' के अेक सहायक।

२. आजकल तकुअे पर लोहेकी गरेड़ी होती है। परन्तु पहले सूतको गोंद लगा कर तकुअे पर लपेटा जाता था अुसे साड़ी कहते थे।

आना चाहिये। और जहां जाना होगा वहां अिन क्रियाओंके साथ दूसरा जो कुछ सीखनेको मिल जाय वह सीख लेना चाहिये और अिसी सिल-सिलेमें संस्कृत और हिन्दी तो पक्की हो ही जानी चाहिये। संस्कृतमें गीताजीके अर्थ व्याकरण-सहित पक्के होने चाहिये। तकली तो है ही। कराचीसे तार आया है कि तुम्हारा नाम बोर्डके सामने गया है। मैं खुश हुआ हूं।

मुझे पत्र लिखती रहना और खूब अुत्साहपूर्वक काम करना।

अब २ से ८ तारीख तक गोंदिया, नागपुर, वर्धा, अकोला, अमरावती अिस प्रकार कार्यक्रम रहेगा। निश्चित शहर नहीं जानता। वर्धा पत्र भेजनेसे ठीक रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

५३

(तार)

गया,
१५-१-'२७

मणिबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

तुम्हारे पत्रसे आनन्द हुआ। पींजना और लोढ़ना जल्दी पूरा सीख लो।

बापू

(विहार,
१७–१–'२७)
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया[1]। तुम्हारे पत्रमें कुछ भी छिपाने जैसी बात नहीं है, जिसे कोअी न पढ़े। फिर भी महादेवके सिवा और किसीने नहीं पढ़ा।

---

१. (१९२७)

परम पूज्य बापूजी,

जबसे शादी न करनेका निश्चय किया है तबसे आजकी अिस घड़ी तक तो मुझे कभी शादी करनेका विचार आया नहीं। कितनी ही अशान्त होअूं, चित्त कितना ही व्यग्र हो, फिर भी मुझे अैसा नहीं लगा कि शादी करूं तो शान्ति मिलेगी। अुलटे यही खयाल हुआ है कि विवाह किया होता — मेरी सम्मतिसे या बापूके कहनेसे — तो अधिक दुःखी होती। जूहू बीमार होकर आअी अुससे पहले आत्महत्या करनेका विचार दो तीन बरसोंमें अनेक बार हुआ था, परन्तु निश्चित विचार कभी नहीं किया। अुस बीमारीके बाद तो अैसा विचार कभी विशेष किया नहीं। कभी बहुत ही व्यग्र हो गअी तब अेक या दोसे अधिक बार यह विचार नहीं आया। परन्तु आत्मघात नहीं करूंगी, अिसका विश्वास दिलाती हूं। और अेक बार कह देनेके बाद तो हरगिज नहीं करूंगी।

मैं तो संसारसे अूब गअी हूं। यहां वहां रहकर अनेक लोगोंके हाथ सुख-दुःख सहते हुअे पली हूं। मेरी दृष्टिसे मैंने अब तक कुछ कम कष्ट नहीं भोगा है। अिसमें से ज्यादाका तो बापूको पता भी नहीं होगा। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि मैं शायद ही किसीसे अिस बारेमें कुछ कहती हूं। और फिर भी अिस समय अुन दुःख देनेवालोंमें से किसीके

मैं जबरन् तुम्हारी शादी हरगिज नहीं करूंगा। और बापू भी नहीं

यहां कोअी बीमार हो और सेवा करने मुझे बुलावें, तो मुझे अैसा नहीं लगता कि मुझे अितना सताया था, अब मैं क्यों जाअूं? अैसा विचार भी नहीं आता, अितना ही नहीं, हो सके तो मैं जरूर जाती हूं। मेरी बचपनकी लगभग सभी तरंगें तरंगें ही रह गअीं। वे सब हवाअी किले नहीं थे। परन्तु परिस्थितियां ही अैसी थीं जिनमें स्वतंत्र दीखने पर भी मैं परतंत्र ही थी। पाटीदार जातिमें जन्मी हुअी अेक लड़की थी, अिसलिअे अुसके भी थोड़े-बहुत फल भोगे। मेरी अुमंग, मेरा अुत्साह, अिस प्रकार बचपनसे ही नष्ट होने लगा था। लगभग १९१५ से अिस प्रकारकी चित्तकी व्यग्रता अनेक बार होती रही है। अुस समय छोटी थी अिसलिअे कोअी यह नहीं कहता था कि अिसकी शादी कर दो। अुस समय मैंने भी कोअी निश्चय नहीं किया था। अुस समय भी और अुसके बाद भी कअी बार अेकांतमें केवल रोकर शान्ति प्राप्त की है। और जबसे मुझे अैसा लगा — मुझे साफ दिखाअी देता है — कि कुछ लोग मानते हैं कि मैं जरा जरासी बातमें रो देती हूं या मुझे रोनेकी आदत पड़ गअी है, तबसे मैं यथासंभव किसीके देखते नहीं रोती, अथवा मेरे हृदयमें होनेवाला दर्द मैं जहां तक हो सके किसीसे कहती नहीं।

मैं मानती हूं अब यह स्पष्ट हो जायगा कि मेरी नीरसताका कारण साथीकी कमी नहीं है। दूसरोंको जो कहना हो भले ही कहें। और मान लीजिये कि पू० बापू या आप मेरी शादी कर देनेका निश्चय करें, तो भी अब मैं छोटी नहीं कि आप लोग मेरी शादी जबरदस्ती कर सकें। अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। अधिकसे अधिक क्या होगा? झिकझिक होगी और संसारमें तीनोंकी थोड़ी बुराअी भी होगी। भले अैसा हो, परन्तु अिच्छाके विरुद्ध तो मैं हरगिज व्याह नहीं करूंगी। अिसी तरह मैं यह भी विश्वास दिलाती हूं कि जब विवाह करनेकी मेरी अिच्छा होगी तब कहनेमें शरमाअूंगी नहीं। मैं यह जरूर मानती हूं कि बापूके सामने मेरी जबान

करेंगे। मेरी चले तो मैं लड़कियोंको जवरदस्ती कुमारी रखूं। विवाह करनेको तो लड़कियां मुझे मजवूर करती हैं। अिसलिअे

जरा ज्यादा खुली होती[1], तो मुझमें अितनी अधिक व्यग्रता या नीरसता न होती। परन्तु अव अिस दिशामें प्रयत्न करनेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती। जब तक मुझे जरूरी लगा मैंने प्रयत्न करके देख लिया। शायद मुझे करना नहीं आया हो। वापूके सामने नहीं बोल सकती, अिसमें मेरा ही दोष है, अैसा कहा जाय तो अुसे भी मैं स्वीकार करनेको तैयार हूं। अव अिस सम्बन्धमें पहलेकी तरह चर्चा या वातचीत नहीं करनी है। परन्तु अव मैं कुछ भी प्रयत्न नहीं करूंगी, क्योंकि मैं स्पष्ट मानती हूं कि अिस वारेमें किसीसे कुछ नहीं हो सकता। विवाह न करने और चित्तकी अस्वस्थताके सम्बन्धमें अितने स्पष्टीकरणसे मैं विश्राम लेती हूं। फिर भी हमेशा अिस मनोदशा पर कावू पानेकी कोशिश तो मैं करती ही हूं। अकसर अुसमें सफल होती हूं। परन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं टिकती।

मणिके प्रणाम

---

१. पू० वापूके साथ मैं वोलती नहीं थी, अिस वारेमें हमारे घरके रिवाजके विषयमें श्री महादेवभाअीके नाम पू० वापूने अिस प्रकार लिखा था :

तुम्हारा पत्र मिला। मणिके वारेमें तुमने लिखा सो जाना। कुछ तो मेरा दोष है ही। परन्तु मैं काममें अितना घिरा रहता हूं कि रातको देर तक कुछ न कुछ काम शहरमें होता ही है, अिसलिअे डॉक्टरके यहां खा लेता हूं। परन्तु डाह्या अहमदावाद रहने आया तव मैं मानता था कि मणिको कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी। मेरे साथ वह खुलकर बोल ही नहीं सकती। मैं अुसे वुलाअूं तो भी वह वहुत हिचकिचाती है। यह अुसीका दोष है सो वात नहीं। मैं खुद भी ३० वर्षका हुआ तव तक जहां वड़े हों अुस जगह अेक अक्षर भी नहीं वोलता था। घरके बड़े लोग मौजूद हों तव वोलना नहीं चाहिये, यह घरका रिवाज था। यह स्वभाव वन गया। वड़े छोटोंके साथ ज्यादा वोलते ही नहीं।

मेरी तरफसे तो तुम्हें अभयदान ही है। तुम्हें न समझनेवाले मुझे तंग करते थे। अिसलिअे मैंने भी पूछ लिया। वह भी तुम्हारी व्यग्रावस्था देखनेके बाद। मैं अैसी जवान लड़कियोंको जानता जरूर हूं जो स्वयं जानती नहीं, किन्तु जिनकी चित्तकी व्यग्रताका कारण शादी न करना ही होता है। मैं मानता हूं कि तुम्हारे लिअे यह बात नहीं होगी।

केवल डाह्या बाहर रहा और मैंने पालकर अुसे बड़ा किया, अिसलिअे वह सबके साथ पूरी छूट लेता है।

मणि तो पहले-पहल तुम्हारे और बापूजीके साथ खुलकर बरताव करने लगी है। और पत्र लिखना भी पहले-पहल तुम्हारे ही साथ सीखी। यह देखकर मुझे भी शुरूमें तो अजीब-सा लगा था। परन्तु मेरा खयाल है कि अब अुसमें अधिक साहस आता जा रहा है। फिर भी मेरे साथ तो अुसकी हिम्मत खुलती ही नहीं। अिसके सिवा अिस सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष मिलेंगे तब बात करेंगे।[1]

---

१. यह पत्र मुझे भेजते हुअे महादेवभाअीने लिखा था :

बम्बअी, १४– –१९२१

प्रिय बहन,

* * *

जवाब बहुत ही बढ़िया है। वह पत्र ही तुम्हें भेज रहा हूं। तुम्हें हिम्मत रखनी ही चाहिये। पितासे जितनी बात की जा सकती है अुतनी दुनियामें किसीसे नहीं की जा सकती। शास्त्रवाक्य अैसा है कि पिता, गुरु और वेदके आगे तो कुछ भी छुपाकर रखा नहीं जा सकता। अुनके सामने अन्तरके द्वार खोले जा सकते हैं। तुम्हें तो बड़े सज्जन पिता मिले हैं। अुन्हें तुमसे बातें करनेकी अिच्छा होती है, फिर भी तुम अुनसे नहीं मिलतीं, यह तुम्हारे ही साहसकी कमी है। तुम्हारी जैसी निर्दोष बालिकाको तो दुनियामें किसीके पास जाने या बातें करनेमें संकोच होना ही नहीं चाहिये। यह पत्र मिलनेके बाद बापूसे मिलना। सब बातें करना और मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा महादेव

परन्तु तुम्हें सावधान करना मेरा धर्म था और यह बताना भी कि अेक बार अेक बात कहनेके बाद शादीका विचार न किया जाय अैसा कुछ नहीं है। हां, यदि व्रत ले लिया हो तो जरूर बात खतम हो जाती है। फिर तो आसमान टूट पड़े तब भी व्रतको तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु तुमने जब तक व्रत न लिया हो तब तक मेरे जैसा भी तुमसे पूछेगा। दूसरे तो आग्रह भी करेंगे। अिसका अर्थ यह नहीं कि मैं चाहता हूं कि तुम व्रत ले लो। वह तो जब व्रतके बिना न रहा जा सके तब अपनी अिच्छासे लेना। अब मेरे लिअे तो तुम्हारे विवाहकी बात करनी रह नहीं जाती। अितना ही नहीं, मैं औरोंको भी अुससे रोकूंगा। परन्तु तुम्हें व्यग्रावस्थासे निकल जाना चाहिये। कुमारीपनको हर तरहसे सुशोभित करना चाहिये। ब्रह्मचर्यका तुम्हें धार्मिक अर्थ करना है और अुससे धार्मिक फल पैदा करनेके लिअे वह ब्रह्मचर्य तुम्हें पालना है जिसके बारेमें मैंने अभी 'नवजीवन' में छप रही 'आत्मकथा' में लिखा है। अिसलिअे तुम्हारी प्रकृति शान्त, प्रफुल्लित, अुद्यमी और समभावी हो जानी चाहिये।

'मार्गोपदेशिका' बार बार पढ़कर अुसे पचा डालो। गीताजीके प्रत्येक शब्दको अुसके नियमोंके अनुसार समझना।

लोढ़ना-पींजना सीख लेनेके बारेमें मैंने तार दिया है। मैंने कराची भी तार दिया है। अभी तक नारणदासका जवाब नहीं आया। आये या न आये, मेरे पास अैसी मांग तो और जगहसे भी आयी है। अलग अलग जगह तुम्हें कताअी सिखानेके लिअे भेजते रहनेका विचार है। मैंने ५० रु० और सफर-खर्चकी मांग की है। अिससे अनुभव भी काफी होगा। बादमें देख लेंगे। वहां अभी किसी काममें न लगना। ३० रुपये तो लेती ही रहो। अुनमें से बचें तो भले ही बचें। मैं हिसाब मांगूंगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

अकोला जाते हुअे,
रविवार
(६–२–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अक्षर सुधारनेकी जरूरत है। अक्षर बड़े और साफ लिखनेकी आदत डालो। किसी खास मौके पर अच्छे लिखना ही काफी नहीं। जैसे महादेव (देसाअी) के अक्षर सदा अच्छे ही होते हैं वैसे लिखना चाहिये।

अभी तो हरिहरभाअीकी[1] कक्षामें भले ही जाती रहो। बोलनेका महावरा रखनेसे हिन्दी आ जायगी। अुसका शौक रहेगा तो अपने आप ज्ञान आ जायगा।

कराचीसे जवाब आने पर लिखूंगा।[2]

कातने सम्बन्धी सारी क्रियाओंमें पूरी निपुणता प्राप्त कर लेना। अेक भी चीज बाकी न रहे। मैं सफरमें देखता ही रहता हूं कि अैसी चरित्रवान स्त्रियोंकी बड़ी जरूरत है।

मणिलाल कोठारीके नामका पत्र पढ़नेका तुम्हें अधिकार तो नहीं था, परन्तु पढ़ लिया तो कोअी बात नहीं। आज जवान भारतीय स्त्रीकी ब्रह्मचर्य-पालनकी शक्तिका कोअी विश्वास करनेको तैयार नहीं है। तुम और आश्रमकी दूसरी कुमारियां अिस अविश्वासको झूठा साबित करें, अिसके लिअे मैं तो तरस रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१. सत्याग्रह आश्रमकी पाठशालाके अुस समयके शिक्षक।

२. पत्र नं० ५० देखिये।

५६

गुरुवार
(१०-२-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। हिन्दी शुरू कर दी, यह अच्छा किया। जो करो अुसमें स्वास्थ्यकी रक्षा करना। तो मैं निश्चिन्त रह सकूंगा।

अक्षरोंको बिलकुल मत बिगड़ने दो। भले ही लिखनेमें देर लगे। थोड़े समयमें सुधर जायंगे और गति बढ़ जायगी।

पूनियां तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं। मैं चाहता हूं कि रुअीकी सब क्रियाओंमें तुम्हें पहली श्रेणी मिले। तुम्हारा अच्छेसे अच्छा अुपयोग कन्या-पाठशालाओंमें कताअी सिखलानेमें होनेवाला है। और अन्तमें औश्वर तुम्हारी तबीयत ठीक रखे तो गरीब बहनोंके कल्याणमें करना है। स्त्रियोंमें जो काम करना है अुसका कोअी अन्त नहीं है और वह पुरुषोंसे तो मर्यादित रूपमें ही हो सकता है।

भोजनालयकी आलोचना मुझे सब लिखना। और शंकर[1] को प्रेमपूर्वक बताना। अेक दो दिन खुद करके भी बताया जा सकता है। हमेशा अुसमें भाग लेनेकी जरूरत नहीं होती। तुम्हें दूसरोंके साथ रहनेकी शक्ति पैदा करनी है। जब मैं महादेव और देवदासकी तरह तुम्हें भी चाहे जहां निर्भय होकर रख सकूं तब मैं प्रसन्न होअूंगा। किसीसे तुम्हें दुःख न हो, किसीको तुम दुःख न पहुंचाओ तब मुझे सन्तोष होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१. आश्रमका संयुक्त भोजनालय संभालनेवाले अेक भाअी।

५७

बुधवार
नासिक जाते हुअे,
(१८-२-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अैसा दीखता है कि मैं वहां जल्दीसे जल्दी ८ तारीखको पहुंचूंगा। अभी तक कराचीसे कोअी खबर नहीं आअी।

गंगादेवी[1] क्यों बीमार होती ही रहती हैं? अुनका जलवायु परिवर्तन करने कहीं जानेका अिरादा हो तो वैसा करें। तोताराम[1] और गंगादेवी दोनोंसे पूछना। खाने-पीनेमें परहेजसे रहती हैं क्या?

मैं आकर संस्कृतकी और पींजने, कातने वगैराकी परीक्षा लूंगा। तुम्हारे गुजराती अक्षर अभी और अच्छे होने चाहिये। गुजराती व्याकरणका अध्ययन खूब बढ़ा लेना।

संयुक्त भोजनालयको संपूर्ण बनानेकी ओर आजकल, मेरा मन अधिक रहता है। अब प्रयोग पूरा होना ही चाहिये। अिसमें भरसक मदद देना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१. आश्रमवासी दम्पति।

५८

मौनवार
नेपाणी,
(२८-३-'२७)

चि० मणि,

मेरी बीमारी[1] का खयाल भी न करना। जो वर्ष बीत जाते हैं अुनका हम खयाल नहीं करते। वैसे ही विकारी मनुष्योंके नसीबमें बीमारी भी वर्षोंकी तरह लिखी हुआी ही रहती है! कोआी यूं ही चले जाते हैं। फिर भी जाना तो सभीको है, फिर हर्ष-शोक क्यों?

अभी तक तुम्हारे बारेमें तार नहीं आया। अब तो आना चाहिये। तैयारी रखना। संस्कृत कितनी कर ली? पींजने-कातनेका काम अब तो ठीक हो ही गया न?

बापूके आशीर्वाद

यद्यपि अेक ही दिन लिखा गया है, फिर भी यह पत्र बहनोंके पत्रके बाद मिलेगा, क्योंकि डाकके समयके बाद लिखा है।

बापूके आशीर्वाद[2]

५९

रविवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि तुम जान-बूझ कर मुझे पत्र नहीं लिखतीं। परन्तु अैसा करनेकी अब तो जरूरत नहीं। संस्कृतकी पढ़ाअी कितनी हुअी? अब कातने-पींजनेमें पहला नम्बर आयेगा या नहीं?

---

१. पू० बापूजीको रक्तचापका दौरा पहले-पहल हुआ।

२. ५८ से ६७ नम्बर तकके पत्र आश्रमकी डाकके साथ आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम आये थे। वे आश्रमकी डाकमें आये हुअे पत्र जिनके हों अुन्हें भेज देते थे।

कराचीकी कोअी खबर[1] नहीं। तबीयत कैसी रहती है?
मैं ठीक होता जा रहा हूं। मेरी चिन्ता करनेका कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

६०

शुक्रवार,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिले हैं। यदि सम्मिलित भोजनालयमें खाना खाया जा सके तब तो बहुत ही अच्छा हो। अिस बारेमें मैंने शंकरको पत्र लिखा है। अुसे पढ़ लेना। चि० चंपा[2]की संभालका भार तुमने लिया, यह बहुत अच्छा किया।

अब तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

६१

(नंदीदुर्ग,
२५-४-'२७)
मौनवार
चैत्र वदी ९

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अुसका अंतिम वाक्य अधूरा है और हस्ताक्षर तो हैं ही नहीं। और न तिथि है। यह तो बड़ी अुतावलीका सूचक है। हमारे यहां कहावत है कि धीरजका फल मीठा होता है। अुतावलीसे आम नहीं पकते — अैसी भी हमारी अेक कहावत है। अुसका अंग्रेजी अनुवाद 'Haste is waste' किया जा सकता है। तुम बापूको अपनी साड़ीमें से धोती दे आओीं, यह तो बहुत अच्छा किया। अिस

---

१. पत्र नं० ५० देखिये।

२. डॉक्टर प्राणजीवनदासकी पुत्रवधू।

नियमको जारी रखो। अुसमें डाह्याभाअी तथा यशोदा शरीक हों तो कैसा अच्छा हो!

कराचीका काम नहीं होगा, अैसा माननेका कारण नहीं। अैसा ही हो तो भी दूसरी जगहें तो तैयार ही हैं। परन्तु अिसका निश्चय हो जाय तो दूसरा विचार करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

६२

(नन्दीदुर्ग,
२–५–'२७)
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

बापू लिखते हैं कि तुम्हारा शरीर दुबला हो गया है। अैसा क्यों? शरीर तो मजबूत और तेजस्वी होना चाहिये। आदर्श कुमारीमें तो वीरता सभी तरहसे होनी चाहिये।

यदि कराची जाना न हो तो मेरा विचार तुम्हें दिल्ली भेजनेका है, जहां चंपावतीको भेजनेकी बात थी। वहां बहुत लड़कियां हैं और बहुत काम है। दिल्लीका जलवायु तो अच्छा है ही। आजकलमें कराचीसे तार मिलना चाहिये।

बहनोंमें[1] से किसीको चोरोंका डर रहा ही करता हो तो मुझे बताना।

राधा (गांधी)को कितनी चोट आअी? क्या वह डर गअी थी? अुसे अलग पत्र लिखनेका समय अभी नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. आश्रममें रातको पहरा देनेमें बहनें भी शरीक होती थीं। अेक बार मगनलालभाअीके घरमें चोर आये तब राधा जाग गअी थी।

६३

(नंदीदुर्ग,
४–५–'२७)
वैसाख सुदी ३

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। गंगादेवीसे कहना कि डॉक्टर कहे वैसा जरूर करें और मूंगका पानी पीना हो तो पियें। यहां बैठा हुआ मैं बहुत मार्गदर्शन तो कैसे कर सकता हूं? ये नये डॉक्टर कौन हैं? और कबसे आने लगे हैं?

पहरेमें किन किन बहनोंने नाम लिखवाये हैं?

मेरी तबीयत अच्छी होती जाती है। मुझे नियमपूर्वक लिखती ही रहना। तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहनसे पत्र लिखनेको कहना।

६४

(१९२७)

चि० मणि,

जो बीमार पड़ते हैं अुन्हें क्या आश्रमसे भाग जाना चाहिये? तुम कहां गअी हो यह भी मैं तो नहीं जानता। भागकर भी झट अच्छा हो जाना चाहिये। चैन न पड़े तो मेरे पास आनेकी छूट है, यह याद रखना। सहन होने लायक वैराग्य लिया हो तो पचेगा। न पचे वह वैराग्य कैसा? कुछ न कुछ समाचारोंकी तो रोज ही बाट देखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

मेरे सफरकी तारीखें तो जानती हो न?

६५

(१९२७)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हें बुखार आ गया और तुम्हें कमजोरी रहती है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। बूतेसे बाहर मेहनत नहीं करनी चाहिये। अब तो समय है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु कांग्रेसमें आनेके लिअे तुम्हारा चुनाव हुआ होगा तो मुझे खुशी होगी ही।

बापूके आशीर्वाद

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें अखबारोंमें कुछ आये तो समझ लेना कि अुसमें अतिशयोक्ति है। रक्तचापका अुतार-चढ़ाव तो अिस दौरेमें होता ही रहा है।

६६

नंदीदुर्ग,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। कभी कभी अैसे समाचार देना।

हम तो न घरके हैं न बाहरके। रास्तेमें बैठे हैं। पूज्य बापूजीकी तबीयत मामूली रहती है। डॉक्टर आराम लेनेको कहते हैं। खुराकमें रोटी नहीं खाते। फल खाते हैं।

कृष्णदास[1] की तबीयत साधारण है। कमजोरी मालूम होती रहती है। बाकी सब मजेमें हैं। यहां राजगोपालाचार्यजी[2] तथा

१. 'Seven months with Mahatma Gandhi' के लेखक। अेक समय बापूजीके मंत्रियोंमें थे।

२. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाडके गांधीजीके मुख्य साथी। १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल बनाये तब मद्रास प्रांतके मुख्यमंत्री। १९४६–४७ की अंतरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और

गंगाधरराव[1] बेलगांववाले भी अब दो-चार दिन बाद जायंगे । चि० कान्ति[2] और रसिक[2] मानें तो अुपदेश देना। सूरजबहन क्या करती हैं? कहां हैं? अुन्हें मेरा आशीर्वाद । आश्रममें जेकीबहन, डॉक्टर महेताकी लड़की, आओी हुओी हैं। अुन्हें वहां अच्छा लगता है या नहीं ?

बहनोंकी प्रार्थनामें भाग लेती हो या नहीं? पूज्य वल्लभभाओीकी तबीयत अच्छी होगी। यहां नंदूबहनका पत्र आया था। अुन्हें मेरा जय श्रीकृष्ण कहना।

अिस सप्ताहमें बहनोंने खूब अुत्साह दिखाया है। अिसलिअे मैं बधाओी देती हूं। वहां प्रार्थना बहुत अच्छी चल रही है, यह जानकर आनन्द होता है।

बाके आशीर्वाद

६७

नंदीदुर्ग,
वैशाख सुदी १२
(१२–५–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दोनों बहनोंने नाम लिखा दिया, सो ठीक किया।[3] मैं तो चाहता हूं कि जितना शरीर सहन करे अुतना पहरा तुम्हारे द्वारा भी हो (भले ही किसीके साथ रहकर)। डर जैसा भूत अिस संसारमें दूसरा कोओी नहीं और वह तो महावरेसे और अीश्वरकी कृपासे ही जाता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि चोरोंको

रसद-मंत्री। १९४७–४८ में पश्चिम बंगालके गवर्नर। १९४८ में पहले भारतीय गवर्नर जनरल। जुलाओी १९५० से अक्तूबर '१९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री। आजकल मद्रासमें निवृत्तिमय जीवन बिता रहे हैं।

१. श्री गंगाधरराव देशपांडे। कर्णाटकके नेता।

२. गांधीजीके सबसे बड़े पुत्र हरिलाल गांधीके लड़के।

३. अुस अरसेमें चोरियां होनेसे आश्रममें पहरा देनेका निश्चय हुआ था। अुसमें नाम दर्ज करानेका अुल्लेख है।

जब सचमुच विश्वास हो जायगा कि हमारा चौकीदार भी अुन्हें मारनेके लिअे नहीं परन्तु मरनेके लिअे ही वहां है और पहरा देनेवाले आश्रमवासी चौकीदार जैसे वैतनिक आदमी नहीं, परन्तु गृहस्थी हैं तब चोर हमारा पिंड छोड़ देंगे। तुममें से कोअी तो किसी दिन आत्मबल दिखायेगा और अुन लोगोंको प्रेमसे वशमें करेगा। परन्तु अिसमें शक नहीं कि यह सब सांपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। संभव है, तुममें से किसीको मार भी खानी पड़े, मरना भी पड़े। रोग देवताकी मार कौन नहीं खाता? स्त्री, पुरुष, बालक सभी अुसकी चपेटमें आ जाते हैं। राधा कितनी बार गिरी? रूखी[1] को क्या हुआ? जुहूके अस्पतालमें कितनी लड़कियां थीं? अगर यह सब हम सहन करते हैं तो चोर अित्यादिकी मार भी हम हंसकर सहन करें अिसमें आश्चर्य क्या? सिपाहियोंसे रक्षा चाहनेवालोंको तो जरूर अचंभा होगा, मगर हमें नहीं होना चाहिये।

तुम्हारी पूनियां मैं कल कात रहा था तभी मिलीं। अुनमें से कुछ तुरंत कातीं। अेक भी तार नहीं टूटा। और आज मैंने सूतका कस निकालनेका अेक निजी अुपाय ढूंढ़ा है। अुसमें तुम्हारी पूनियोंसे निकले हुअे तारकी बराबरी अेक भी तार नहीं कर सका। अिनसे अच्छी पूनियां मेरे हाथमें कभी नहीं आअीं। अिनके जैसी शायद अेक दो बार आअी हों तो भले ही आअी हों। परन्तु मैं नहीं मानता कि तुम्हारी पूनियोंसे अच्छी पूनियां कोअी बना सकता है। तुम्हारी पूनियां मिलनेके बाद दूसरी पूनियोंसे कातना मुश्किल हो सकता है। जैसी पूनियां हैं वैसे अक्षर कर लो, कातना भी वैसा ही करो, सभीमें पहला नम्बर रखो, यह मेरी अिच्छा और आशा है।

कराचीसे कल पत्र आ गया। नारणदास[2] की गैरहाजिरीसे काम अव्यवस्थित हो गया है। अिसलिअे वे अेक महीना मांगते हैं।

---

१. श्री मगनलाल गांधीकी लड़की।

२. श्री नारणदास खुशालदास गांधी। बापूजीके भतीजे। अुस समय आश्रमके व्यवस्थापक।

मैंने लिखा है कि यदि अुन्हें तुम्हारी हाजिरीकी जरूरत ही हो तो भले ही अेक महीना लें। शरमके कारण अथवा तुम्हें वहां खींचनेके लिअे अर्थात् हम पर कोअी अुपकार करनेके खातिर वे प्रयत्न करते हों तो बिलकुल न करनेको मैंने लिख दिया है। और तारसे जवाब मांगा है। जहां खास जरूरत हो वहीं जाना है। अिस बीच सोची हुअी चीजोंको पक्का करती रहो।

बापूके आशीर्वाद

६८

नंदीदुर्ग,
२१-५-'२७

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

'कदी नहीं हारना भावे साडी जान जावे' यह गीत तो सुना है न? अिसलिअे भले ही हमारी जान भी चली जाय, तो भी क्या? कातने और अक्षरोंके मामलेमें क्या हार मानी जा सकती है? सावधान करनेको मैं अेक चौकीदार तो बैठा ही हूं। बूंद बूंद करके सरोवर भरता है और कंकर कंकर करके पाल बंधती है। अुद्यमके आगे कुछ भी असंभव नहीं। निराश न होना, नियमपूर्वक कातनेसे गति जरूर बढ़ेगी; और नियमपूर्वक किन्तु साफ और पूरे अक्षर लिखनेकी आदत डालनेसे अक्षर भी जरूर सुधरेंगे। मेरे पास अैसे बहुतसे अुदाहरण हैं कि जिनके अक्षर बहुत खराब थे वे अभ्याससे अच्छे हो गये। कोठारके कामका भार लेकर तुमने बहुत अच्छा किया। अब अुसे हरगिज न छोड़ना और अच्छी तरह पूरा करना। हिसाब लिखना भले ही न पड़े, परन्तु हिसाबके सिद्धान्त जान लेना। और कोठारके सिलसिलेमें दो घंटे कातनेका समय न मिले तो भले ही कम हो जाय, परन्तु जितना समय मिले अुतने समयमें स्वस्थ चित्तसे कातना। अधीरतासे लम्बे समय तक कातनेकी

अपेक्षा अेकाग्र चित्तसे धीरजके साथ थोड़े समय कातनेसे कस बढ़ेगा और गति बढ़ेगी और सब तरहसे अच्छा सूत निकलेगा।

गंगादेवीके बारेमें मुझे खबर देती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

६९

१९२७
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा कार्ड मिल गया था। जो पत्र तुम लिखनेवाली थीं वह नहीं मिला। मातर[1] में किस काममें लग गअी हो और कौन कौन, यह लिखना। कुछ भी सेवा करते हुअे शान्ति न खोना।

काका (विट्ठलभाअी) को मैंने लिखा था कि जब आप अपनी कुरसी पर बैठकर तकली चलायेंगे तब मणिबहन आयेगी। अुसके अुत्तरमें वे लिखते हैं कि मणिबहन तो पागल है। मैंने लिखा है कि वे पागल हैं, अिसीलिअे पागलके साथ रहती हैं।

यशोदा[2] के लड़केका नाम क्या रखा है?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मातर

---

१. मातरमें बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिअे मैं गअी थी।
२. मेरे भाअी डाह्याभाअीकी पत्नी।

मौनवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। गांवोंका अनुभव लिखकर रखना चाहिये जिससे भविष्यमें काम आये। कहीं भी अधीरता न रखी जाय। निराश न होना। अशान्त न होना। मुझे तो तुमसे बहुतसे प्रश्न पूछने होंगे। परन्तु वे अभी नहीं। मिलेंगे तब या काम हो जाने पर। मुझे पत्र नियमपूर्वक लिखती रहना। तबीयत हरगिज न बिगड़ने देना।

काका (विट्ठलभाअी) से मिली होगी। काका खूब काम करनेकी अुम्मीदसे आये हैं।[1] वे सफल हों।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मातर

---

१. काका (माननीय विट्ठलभाअी)। १९२७ के चौमासेमें गुजरातमें अतिवृष्टि हुअी और बहुत नुकसान हुआ। अुस समय गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे पू० बापूने बाढ़-संकट-निवारणकी व्यापक योजना बनाअी थी। विट्ठलभाअी बड़ी व्यवस्थापिका सभाके अध्यक्ष थे। गुजरातके मतदाता-मंडलकी तरफसे वे व्यवस्थापिका सभामें गये थे। अिसलिअे गुजरातकी आफतके समय यह सोचकर कि अुन्हें गुजरातकी मदद करनी चाहिये वे नड़ियादको मुख्य केन्द्र बनाकर वहां रहे थे और गुजरातमें सब जगह दौरा किया था। अुनके आग्रहके कारण वाअिसरॉय भी गुजरात आये थे। पू० बापूजी अुस समय मैसूरमें नंदीदुर्गमें आरामके लिअे गये हुअे थे। बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिअे वे गुजरातमें आना चाहते थे। परन्तु पू० बापूने लिखा था यदि और किसी कारणसे नहीं, तो अिस बातकी जांच करनेके लिअे ही कि आपकी अितने वर्षों तक दी हुअी तालीमको हम हजम कर सके हैं या नहीं, आप यहां न आअिये।

७१

(साबरमती,
१५–४–'२८)
रविवार

चि० मणि,

वहां जानेके बाद पत्र तक नहीं, यह ठीक नहीं। वहांका कार्यक्रम बताना। अनुभव लिखना।

साथका पत्र पढ़कर लंका जानेको जी करे तो लिखना।[1] (राष्ट्रीय) सप्ताह[2] कैसे मनाया?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७२

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती, २१–५–'२८)
मौनवार

चि० मणि,

चि० कांति (पारेख) के नाम लिखे गये पत्रमें शारदाबहन[3] के सम्बन्धमें तुमने जो टिप्पणी लिखी है वह मैंने पढ़ी। जरा खेद हुआ। मैं तो नित्य स्मरण करता हूं। जो कोअी वहांसे आता है अुसे

---

१. कोलम्बोके कॉलिजमें खादीका प्रचार करनेके लिअे।

२. ६ अप्रैल १९१९ का दिन रौलट कानूनके विरोधमें सत्याग्रह करनेके लिये नियत हुआ था। अुस दिनसे देशमें दमनका दौरा चला और १३ अप्रैलको जलियांवाला बागमें हत्याकांड हुआ। अुस अेक सप्ताहमें हुअी अैतिहासिक घटनाओंकी यादमें वह सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताहके रूपमें मनाया जाता है।

३. श्री शारदाबहन कोटक, अेक आश्रमवासी।

पूछता हूं। मीराबहन[1] ने तो बहुत कुछ कहा है। वह सब क्या लिखा जा सकता है? परन्तु मैं आशा छोड़ नहीं बैठा हूं। यह मानकर बैठा हूं कि सब ठिकाने आ जायंगे। लिखनेका अुत्साह आये तब लिखना। वहांके (बारडोलीके लगान-सत्याग्रहके समयके) तुम्हारे कामसे वल्लभभाओको संतोष है, यह मैंने बम्बओमें अुनके मुंहसे समझा। अितना संतोष हुआ। मेरे लिअे अितना काफी नहीं। मुझे तो गांभीर्य, शान्ति, संतोष, विवेक, मर्यादा, निश्चय, सूक्ष्म सत्य-परायणता, तीव्रता, अध्ययन, ध्यान अित्यादि चाहिये। नहीं तो कुमारी और सेविकाको शोभा देनेवाला तुम्हारा जीवन नहीं बनेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७३

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
२८-५-'२८)

चि० मणि,

मैंने तुझे मूर्ख माना है सो बिना बिचारे नहीं, यह तू सिद्ध कर रही है। मीराबहन जो कहे वह मेरे लिअे कभी वेदवाक्य नहीं हो गया। वह बहन निर्मल है। . . . तू यहां होती तो तुझसे ही कहता।

---

१. मिस स्लेड। अुनके पिता अिग्लैंडकी जलसेनाके बड़े अधिकारी थे। पू० बापूजीकी पुस्तकें पढ़कर अुनसे आकर्षित होकर वे भारत आओीं और अपने जीवनमें अुन्होंने भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा। आजकल हृषीकेशकी तरफ गोसेवाका काम कर रही हैं।

तू नहीं थी अिसलिअे लक्ष्मीदासभाअी[1] से कहा। परन्तु किसी दिन तो मूर्ख न रहकर तू सयानी बनेगी, यह आशा रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७४

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
शनिवार
(४–८–'२८)

चि० मणि,

स्वामी (आनंद) तो यहां नहीं हैं। परन्तु तुम्हारा अुनके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ा। आनेका हठ करनेकी जरूरत नहीं। सिपाहीका धर्म अपना शरीर ठीक रखना और सरदार कहे सो आनंदित होकर मानना है। तबीयत तो जल्दी ही अच्छी हो जायगी, यदि अच्छी बनानेमें मन लगाया जाय।

बापू और महादेव तथा स्वामी पूना[2] में हैं। आज वहांसे चले होंगे। पूनासे तार आना तो चाहिये था, पर नहीं आया। समझौता

१. श्री लक्ष्मीदास आसर। अेक आश्रमवासी। मअी १९४९ में गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री नियुक्त हुअे। दिसम्बर १९५२ में त्यागपत्र दिया। परन्तु फरवरी १९५३ में नये मंत्रीने काम संभाला तब तक अुस पद पर बने रहे। बादमें खादी ग्रामोद्योग बोर्डमें। १९५७ में निवृत्त हुअे।

२. सरकारके साथ समझौतेकी बातचीतके लिअे बम्बअीकी अुस समयकी कौंसिलके वित्तमंत्री सर सी० वी० महेताके बुलावे पर पूना गये थे।

होगा या नहीं, यह अभी नहीं कहा जा सकता। मुझे लगा करता है कि अब सरकारमें लड़नेकी शक्ति नहीं है। लोकमत अुसके वहुत विरुद्ध है और अुससे बहुत भूलें हुअी हैं। आज सरभोण हो आया। आजकल बरसात नहीं है। आज बहुतसे लोग तो सूरत जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

७५

आगरा,
१८-९-'२९

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। यशोदा आ गअी, यह बड़ा अच्छा हुआ। अुसकी तबीयतके समाचार खेदजनक हैं। परन्तु अब वहां है अिसलिअे ठिकाने पर है और संभव है कि देखभालसे अच्छी हो जायगी।

वल्लभभाअी वहां पहुंच गये हों तो कहना कि लखनअूमें ता० २७ को अुनसे मिलनेकी आशा रखता हूं।

भाअी अिन्दुलालकी पत्नीके बारेमें जाना।[1] वह बहन दुःखसे छूट गअी, अैसा मैं मानता हूं। . . . भाअीके बारेमें जरा आश्चर्य होता है। परन्तु आजकी हवामें तो यह चीज भरी ही है, तब आश्चर्य क्या? मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अभी दूध, दही, फल पर हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री० मणिबहन,
ठि० श्री वल्लभभाअी पटेल, बैरिस्टर,
अहमदाबाद,
बी० बी० सी० आअी० आर०

---

१. श्री अिन्दुलालकी पत्नीके देहान्तका अुल्लेख है।

७६

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती)
९-३-'३०

चि० मणि,

तेरे पत्रकी मैं तो रोज बाट देखता था। तेरी याद किये बिना अेक दिन भी नहीं गया। परन्तु तुझे मैं लापरवाह लगूं, अिसे समझता हूं। अिसके लिअे मेरी दयाजनक स्थिति जिम्मेदार है। मुझे किसीके सामने देखने तकका समय नहीं मिलता। तू कहां है, क्या हो रहा है अित्यादि जानकर संतोष कर लिया करता था।

बापू तो तेरे बारेमें कुछ कह ही नहीं गये।[१] अुन्हें कहां पता था? तुझे वहीं रहना है जहां तू शांत और सुखी हो सके। जेलमें तो समय आने पर जरूर जा सकेगी। अिस बारेमें महादेवने लिखा है। आश्रममें तुझे अच्छा लगे अिसे समझता हूं। परन्तु मेरी राय है कि यह ठीक नहीं। फिर भी अिसमें निग्रह काम नहीं देता। अिसलिअे शान्त रहता हूं। मेरी यही अिच्छा है कि तू जहां रहे वहां सुखी रहे।

---

१. पू० बापूजीके दांडीकूचके मार्गके सिलसिलेमें व्यवस्था वगैराके लिअे गये थे। ७ मार्चको रासमें सभामें यह हुक्म मिला कि अमुक प्रकारका भाषण न दें। पू० बापूने कहा कि वे अिस आज्ञाका अुल्लंघन करेंगे। अिसलिअे तुरंत ही गिरफ्तारी हुअी। फिर मामला चलाकर तीन मासकी सादी कैद और पांच सौ रुपये जुर्माना अथवा तीन सप्ताहकी अधिक कैदकी सजा दी गअी। अिसलिअे कामके या किसी व्यक्तिके बारेमें कोअी सूचना देने या समझानेका अुन्हें समय ही नहीं मिला था। अुस समय मैं बीमार होनेके कारण अिलाजके लिअे बम्बअी गअी हुअी थी।

मैं मंगलवार तक गिरफ्तार होनेकी आशा रखता हूं।

तू बहादुर बनना। अपना शरीर सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० डाह्याभाओी वल्लभभाओी पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बओी–४

७७

(१९३०)
गुरुवार

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले हैं। चलती रेलमें लिख रहा हूं। तुझसे हो सो दृढ़तासे कर गुजरना। तू अपने दूसरे पत्रमें लिखती है वह प्रसंग अुपस्थित हो तो तू विलापारला अथवा वर्धा पहुंच जाना। मेरे पास आ जायगी तो अधिक समझाअूंगा और तुझे शान्ति भी होगी। मंगलवार या बुधवारको आना। अिस बीच तू वहांके अधिक समाचार भी दे सकेगी। थोड़ी बहनोंसे भी जो हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
नड़ियाद

७८

(१९३०)

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। कल अन्तमें तेरे विषयमें पत्र लिखना रह ही गया। अब तो तू जायगी ही।[1] अिसके साथ पत्र भेज तो रहा हूं, यद्यपि अुसकी कोअी जरूरत नहीं है।

देखना, मेरी, बापूकी और अपनी लाज रखना। अपनेको शोभित करना। गीता और गुजराती पढ़ने और समझनेका प्रयत्न करना।

मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना।

खेड़ामें नमकके गड्ढोंमें जहर डालनेकी बात सुनी थी। अुसकी जांच करना और मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
नड़ियाद

७९

१९-५-'३०

चि० मणि,

अीश्वर तेरी रक्षा करेगा। रोज तुझे याद करता हूं। अब तू अुदास नहीं रहती होगी।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
नड़ियाद

---

१. मैं सूरत जिलेमें शराबकी दुकानों पर पिकेटिंगका काम करती थी। अुस काममें लगी थी तब खेड़ा जिला समितिने खेड़ा जिलेमें अिस कामके लिअे मेरी मांग की थी। अिसलिअे वहां जानेके बारेमें अुल्लेख है।

८०

य० मं०[1]
१४-७-'३०

चि० मणि (पटेल),

वाह ! सच्चे बापू आ गये[2] तो नकली बापूको भूल गअी क्या ? और अब तो व्याख्यान देनेवाली हो गअी, फिर क्या पूछना ? तेरी तबीयत शारीरिक या मानसिक कैसी है ? मेरे पत्र तो मिल गये न ?

डाह्याभाअी कैसे हैं ? यशोदाका अब क्या हाल है ? बिलकुल अच्छी हो गअी क्या ?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
डॉ० कानूगाका बंगला,
अेलिसब्रिज,
अहमदाबाद

---

१. यरवडा मंदिर। यरवडा जेलसे लिखे गये पत्र पू० बापूजी आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम भेजते थे। और वे सबको पत्र पहुंचाते थे।

२. पू० बापू तीन मास और तीन सप्ताहकी पूरी सजा भुगतकर ता० २६ जूनको छूटे थे।

८१

य० मं०
२८-७-'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरी प्रसादी कअी सप्ताहमें मिली। तू काममें है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया, यह तो जानता हूं। फिर भी तेरे पत्र पाना चाहता हूं।

खूब जिओ, खूब सेवा करो।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम मैन्शन,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्वअी

८२

य० मं०
१८-८-'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। वापू मेरे साथ चार पांच दिन रहकर गये।[1] तेरे समाचार मिले। अीश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभाअीसे लिखनेको कहना।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्वअी

---

१. अुस समय पू० वापूजी तथा पू० वापू दोनों यरवडा जेलमें थे। परन्तु दोनोंको अलग अलग रखा जाता था। सरकारके साथ समझौता करानेके लिअे सर तेजवहादुर सप्रू तथा श्री जयकरने वातचीत शुरू की थी। अुस सिलसिलेमें परामर्श करनेके लिअे कांग्रेस कार्यसमितिके कुछ सदस्योंको यरवडा जेलमें अेकत्र रखा गया था।

८३

य० मं०

२२-८-'३०

चि० मणि (पटेल),

अपना अनुभव तूने ठीक ठीक बताया है। तू बापूसे मिल गअी, यह भी जाना। बापू तो नहीं मिले। मुझे बराबर लिखती रहना। बम्बअीमें हो तब पेरीनबहन[1] और लीलावती[2]से मिलना।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बअी

---

१. स्व० दादाभाअी नवरोजीकी पौत्री।

२. श्री कन्हैयालाल मुंशीकी पत्नी। आजकल राज्यसभाकी सदस्य।

८४

य० मं०,
७–९–'३०

चि० मणि (पटेल),[१]

तेरा पत्र मिला। बापू तथा जयरामदास[२] दो दिन और साथ रहकर चले गये।[३] अितनेमें तेरा पत्र मिला। अिसलिअे बापूने भी पढ़ा। बापूके नामका मैंने पढ़ा। मां सम्बंधी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताअें अैसी ही थीं। अिसलिअे तूने जो वर्णन किया है, अुस पर आश्चर्य नहीं होता। फिर भी यह प्रेम, अुसमें मोह होने पर भी, अितना अुज्ज्वल है कि नित नया जैसा ही लगता है। पत्र लिखनेके नियमका भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुंच जाय तो दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

---

१. बापूजीको आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी छूट थी। अिसलिअे ये पत्र बापूजी आश्रममें भेजते थे और वहांसे जिस जिसके पत्र होते अुन्हें भेजनेकी व्यवस्था होती थी।

२. श्री जयरामदास दौलतराम। सिंधके पू० बापूजीके मुख्य साथी। १९३० में कराचीमें अेक सभा पर पुलिसने गोली चलाअी थी, अुसमें अेक गोली अिनके पेटसे पार हो गअी थी। १९३१ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अन्तरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १९४७ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारमें खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५० से १९५६ तक आसामके गवर्नर। आजकल 'दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' के मुख्य संपादक।

३. समझौतेकी जो बातचीत चल रही थी अुसके सिलसिलेमें फिर अिन्हें अिकट्ठा किया गया था।

८५

यरवडा मंदिर,
१४-९-'३०

चि० मणि (पटेल),

तू आशा रखती है, अिसलिअे यह लिख रहा हूं। तुझे कैसे मिलेगा, यह तो दैव ही जाने। तेरा पत्र वापूको पढ़नेके लिअे जाने दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। अब तो जबरदस्तीकी शान्ति[1] है। अुसका पूरा अुपयोग करना। अिसे भी मैं सेवा मानता हूं। स्वास्थ्यको संभालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, अित्यादि बातें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

८६

य० मं०
२७-९-'३०

चि० मणि (पटेल),

तूने मुझे हर हफ्ते पत्र लिखनेको तो कहा है परन्तु वह मिलेगा क्या? तू लिख सकेगी या नहीं, अिस बारेमें भी शंका है। देखना शरीरको संभालना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना और हिसाब रखना।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

८७

य० मं०
१४-१२-'३०

चि० मणि,

अब तू बाहर निकल गअी तो तेरे ब्यौरेवार पत्रकी आशा रखता हूं। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

---

१. आर्थर रोड जेलमें।

८८

य० मं०
२१-१२-'३०

चि० मणि (पटेल),

तू लिखे या न लिखे, मैं तो लिखता रहूं न ? अपना वचन भूल गअी न ? मुझे तू पत्र लिखती ही रहनेवाली थी। जागें वहींसे सवेरा, भूलें वहींसे फिर गिनें। अब वचनका मूल्य समझ। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा ? क्या खाती थी ?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

८९

य० मं०
२७-१२-'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र अन्तमें मिला जरूर। कहा जा सकता है कि अेक हद तक बदला मिल गया।[1] अपना शरीर तो अच्छा कर ही डालना। तेरे पास सेवा[2] अितनी पड़ी थी कि पढ़नेकी जरूरत नहीं थी। तूने

---

१. साबरमती जेलमें खुराकके सम्बन्धमें और दूसरे कैदियोंके सम्बन्धमें लिखनेकी छूट नहीं मिलती थी। अिसलिअे जेलसे छूटनेके बाद मैंने साबरमती जेलके सब हालचालका ब्यौरेवार पत्र पू० बापूजीको लिखा था।

२. साबरमती जेलमें कुछ वयोवृद्ध बहनें आतीं, कुछ बच्चोंवाली और कुछ छोटी लड़कियों जैसी भी आतीं। अुनमें गांवसे आनेवाली बहनोंकी संख्या बड़ी थी। अिन सबकी छोटी बड़ी सुविधाओंके बारेमें मुझसे हो सकती वह सेवा करनेका प्रयत्न मैं करती थी।

लड़ाओी[1] तो अच्छी लड़ी मालूम होती है। और वह अुचित थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। अेक ही दिन दस्त बन्द होकर सख्त मरोड़ा आया था। अिसलिअे खाया हुआ निकाल दिया और दूसरे दिन केवल सागका पानी ही लिया। अिससे कब्ज मिट गया। अिस निमित्तसे दूध जो छूटा तो छूटा ही है। यहां मिलनेवाली ज्वार या बाजरेकी अेक रोटी दिनमें लेता हूं। और साग तथा थोड़े बादाम। मेरी चिन्ताका जरा भी कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

(साबरमती जेलमें)

९०

य० मं०
३–१–'३१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। बापूसे मिलना हो तो कहना कि मुझे अुनसे अीर्ष्या होती है, क्योंकि वे तो बाहर भी हैं और आराम-घर[2] में भी। रोज डॉक्टरके यहां जानेका आनन्द[3]। अैसा आनन्द तो केवल बाहर रहकर भी कभी नहीं पाया। परन्तु अिन सब बातोंका बदला अितना तो मिलना ही चाहिये कि हमेशाके लिअे दांत और नाककी तकलीफ मिट जाय।

---

१. साबरमती जेलमें चूड़ियां पहनने देनेके बारेमें हमें लड़ाओी छेड़नी पड़ी थी।

२. जेलमें।

३. अुस समय पू० बापू आर्थर रोड जेलमें थे और दांतके अिलाजके लिअे अुन्हें डॉ० डी० अेम० देसाओीके दवाखानेमें, फोर्टमें खादी-ग्राम-अुद्योग भवन — अुस समयके अनुसार बाअिट वे लेडलाकी मंजिल — पर रोज अेक महीने तक पुलिसके पहरेमें ले जाया गया था। वहां बम्बओीके कुछ कार्यकर्ता अुनसे मिल लेते और लड़ाओीके बारेमें हिदायतें ले जाते थे। मैं और डाह्याभाओी भी रोज मिलने जाते थे।

अिस बार भी मेरे ही पड़ोसी होंगे न? राजेन्द्रबाबू[1] हों तो कहना कि पत्र लिखें। अुनसे पूछना कि मेरा अुत्तर मिल गया था या नहीं।

वैसे तू सब खबरें देनेवाली है, अिसलिअे बाहर है तब तक देती रहना।

डाह्याभाअीने लिखनेकी सौगन्ध खा ली दीखती है।

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

९१

य० मं०
१०-१-'३१

चि० मणि,

तूने लिखा है वैसा ही मैंने हरिलाल[2]के बारेमें सोचा था। मेरा तो खयाल है कि जो कुछ हुआ अुसका हाल प्रकाशित होता तो अुसमें कोअी नुकसान नहीं था। हरिलाल जाग्रत होता। परन्तु जाग्रत

---

१. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुअे चम्पारनके नील सत्याग्रहके समयसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, १९३९ और १९४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। अिस समय भारतके राष्ट्रपति।

२. पू० बापूजीके सबसे बड़े पुत्र स्व० हरिलाल गांधीने पू० बापू आर्थर रोड जेलमें थे तब अुनसे मुलाकात मांगी थी, परन्तु हरिलाल पिये हुअे थे और सब-कुछ सरकारका रचा हुआ प्रतीत हुआ, अिसलिअे पू० बापूने मुलाकात करनेसे अिनकार कर दिया था। फिर भी अुसी दिनके 'अीवनिंग न्यूज़' में अुनकी पू० बापूके साथ हुअी मुलाकातका वर्णन छपा और अुसमें पू० बापूके मुंहमें लड़ाअीके प्रतिकूल कुछ शब्द रखे गये। अिसका पता चलने पर पू० बापूने आपत्ति की थी और दूसरे दिन अखबारमें सुधार आ गया था।

होता या न होता, हमारा मार्ग सीधा है। सब स्वजन हैं। अथवा सब परजन हैं।

तेरे अक्षर काफी सुधर रहे हैं। अब कहां बसनेका अिरादा है?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

९२

य० मं०

१५-१-'३१

चि० मणि,

सरदार-सम्बन्धी तेरा पत्र मिला। हरिलालको तो हम जानते ही हैं। बापूको अब दांतोंके लिअे कब तक ठहरना पड़ेगा? मच्छरोंका कष्ट होने पर भी दांतोंका निबटारा हो जाय तो यह वांछनीय ही है। मैं मानता हूं कि अुनके डॉक्टरके पास जानेकी जरूरत जब तक है तब तक तो तू वहीं रहेगी। हम दोनों[१] मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा[२] कैसी है? यशोदा अब चलती फिरती है? विट्ठलभाअी क्या वहीं रहेंगे?

(बम्बअी)

---

१. काका कालेलकर अुस समय पू० बापूजीके साथ यरवडा जेलमें थे।

२. स्व० डॉक्टर कानूगाकी पुत्री।

९३

य० मं०
२२–१–'३१

चि० मणि,

तेरा सुन्दर लम्बा पत्र मिल गया। अुसके जवावमें मुझे थोड़े ही लम्बा लिखना है? मेरी यात्रा तो अहातेके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सीमित है। न कोअी गार्ड है और न कोअी दूसरा, जिसके साथ विवाद हो। मेरी ट्रेनकी छत आकाश है। अुसके अगणित तारोंका वर्णन करना चाहूं तो करना नहीं आता। और जो तारे मैं देखता हूं वही तू देखती है। अिसलिअे मेरे पास लिखनेको कुछ नहीं है। मैं भी समझता हूं कि तू और थोड़े दिनकी मेहमान है।[1] हम आराम-घरमें ही शोभा देते हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अहमदाबाद)

९४

मौनवार
(१६–२–'३१)

चि० मणि,

तेरे पत्र तो मिल गये। परन्तु मुझे लिखनेका समय कहां मिलता है? अिसलिअे मेरे पत्र आयें या न आयें तू तो लिखती ही रहना। आज हम दिल्ली जा रहे हैं। डॉ० अन्सारी, दरियागंजका पता है। सरदार आज बम्बअी जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन,
ठि० डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
राम निवास,
माधव आश्रमके पास,
बम्बअी

---

१. क्योंकि मैं फिर गिरफ्तार होनेवाली थी।

९५

२६–१०–'३१

चि० मणि,

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। मेरे जवाव न मिलनेसे अूव न जाना। मुझे आजकल पत्र लिखनेका समय मिलता ही नहीं। आज थोड़ासा समय चलती हुअी परिषद[1]में मिल गया, अुसका अुपयोग कर रहा हूं।

यह पढ़कर प्रसन्नता हुअी कि डाह्याभाअीका स्वास्थ्य अच्छा हो गया। अुन्हें और यशोदाको मेरा आशीर्वाद कहना।

लक्ष्मीदास (आसर) से और मंजुकेशा[2]से पत्र लिखनेको कहना। मैं मानता हूं कि कमसे कम अेक डाक तो मुझे मिलेगी।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
श्रीराम मैन्शन,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्वअी

९६

य० मं०
२६–३–'३२

चि० मणि,

आज मुझे साथी कैदियोंको लिखनेकी छूट मिली है, अिसलिअे लिख रहा हूं। मुझे यदि लिखनेकी छूट है तो जिसे मैं लिखूं अुसे अुत्तर देनेकी छूट मिलनी चाहिये। मुझे तुरन्त अुत्तर लिखना। लीलावती,[3]

---

१. लंदनकी गोलमेज परिषदमें।

२. श्री किशोरलाल मशरूवालाकी भतीजी डॉ० मंजुवहन। वारडोली स्वराज्य आश्रममें १९२९ से डॉक्टरके रूपमें अुस प्रदेशके गरीवोंकी सेवा-शुश्रूषा कर रही हैं।

३. स्व० लीलावतीवहन देसाअी। डॉ० हरिभाअी देसाअीकी पत्नी — नन्दूवहनकी भाभी। १९५१ से १९५६ तक वम्वअीकी राज्य-सभाकी सदस्य।

नन्दूबहन, मृदु आदि दूसरी बहनोंको आज नहीं लिखता। अुनके समाचार भी देना। और कौन हैं?

महादेव यहां आ गये हैं। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अपने हाथसे)
श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

९७

य० मं०
२२–४–'३२

चि० मणि,

जैसे लोग मौसममें बरसातकी राह देखते रहते हैं, वैसे ही हम लोग वहांके पत्रोंकी[1] राह देख रहे थे। अुनमें से अेक-दो मिले। ×××[2] छूटनेके बाद यहां होकर ही जानेका विचार रखना। सोमवार हो तो मंगलवार तक ठहरकर दोपहरको बारहसे या साढ़े ग्यारहसे अेक बजे तक मिलनेका वक्त सबसे अच्छा होता है। अुस समय आयेगी तो हम दो[3] तो मिल ही सकेंगे। ××× हम तीनोंकी[4] तबीयत अच्छी है। ×××

१. अुस समय मैं बेलगांव जेलमें सी क्लासमें थी। हमें तीन महीनेमें अेक पत्र लिखने और अेक मुलाकात करनेकी छूट थी। मुलाकात न करें तो अुसके बजाय पत्र लिख सकते थे। ता० १५–५–'३२ को मैं जेलसे छूटनेवाली थी।

२. तीन चौकड़ीकी निशानी जेल-अधिकारियों द्वारा पत्रके काटे हुअे भाग बतानेके लिअे लगाअी गअी है।

३. पू० बापूजी तथा पू० बापू।

४. तीसरे महादेवभाअी।

मैं देखता हूं कि तूने अपने अक्षर सुधारनेका प्रयत्न अच्छी तरह किया है। यह बताता है कि प्रयत्नसे अक्षर अच्छे हो सकेंगे। और यह नियम सब बातों पर लागू होता है।

गीता कंठस्थ करनेका अर्थ यह है कि अर्थके साथ आनी चाहिये और अुच्चारण शुद्ध होना चाहिये। शिक्षिका कौन है? शायद यह जवाब तो तू मिलते समय ही देगी; अथवा आखिरी खत लिखने दें तो पत्र भी लिख डालना। तन्दुरुस्ती अच्छी है या नहीं, यह तो हम लोग देखकर प्रमाणपत्र दें तब सही। ×××

बाबा और यशोदा अेक बार यहां आ गये। बाबा तो कुर्सी पर चढ़ बैठा था। और अितना ज्यादा मौजमें आ गया था कि अपने नये जूते भूल गया। अुसके सौभाग्यसे या डाह्याभाअीके सौभाग्यसे हममें से किसीने देख लिये और तुरन्त भेज दिये। यशोदाकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं कह सकते। अुसने कुछ वर्षोंसे अच्छा स्वास्थ्य रखा ही कहां है? डाह्याभाअी हर सप्ताह आते हैं और हम दोनों अुनसे मिल सकते हैं।

जीवतराम[1]का काम अभी चलता रहता है। देवदास गोरखपुर (जेलमें) है। अुसका पत्र अभी आया है। वह अकेला है, मगर आराममें है। पठन अच्छी तरह कर रहा है। लक्ष्मीको अब बेचारी हरगिज नहीं कहा जा सकता। पापा (राजाजीकी बड़ी लड़की) की देखभाल जरूर करती है। परन्तु पापा अब अच्छी हो गअी कही जा सकती है। राजाजी मजेमें हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अुनके साथी भी

---

१. आचार्य जीवतराम कृपालानी। वे बिहारके मुजफ्फपुर कॉलेजमें अध्यापक थे। और चम्पारनके मामलेमें बापूजी बिहार गये तब कॉलेज छोड़कर पू० बापूजीके साथ हो गये थे। गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य। बारह साल तक कांग्रेस महासमितिके मंत्री रहे। अुसके बाद अध्यक्ष हुअे। अुसके बाद कांग्रेससे अलग हो गये। आजकल प्रजा सोशलिस्ट दलके अध्यक्ष और लोकसभाके सदस्य हैं। यह पत्र लिखा गया अुस समय वे पकड़े नहीं गये थे और बाहर काम कर रहे थे।

अुनके काफी साथ हैं। अिन्दु[1] मुझसे नहीं मिली। अब कहां है, यह पता नहीं। बहुत करके पूनामें ही है। कमला (नेहरू) प्रयागमें है। कमलापति (जवाहरलालजी) की प्लुरसी तो कुछ शान्त हुअी मालूम होती है। परन्तु थोड़ा बुखार रहता है।

चरखेके बारेमें अहमदाबाद लिखूंगा। परन्तु बढ़िया चरखा चाहिये तो यहांसे भी दे सकूंगा। ×××

××× बाको तो पहला पत्र मैंने आज ही लिखा है। परन्तु अुसके पत्र मिलते रहते हैं। वह और दूसरी बहनें (यरवडा जेलमें) मजेमें हैं। मीठूबहन अपनी कक्षा चलाती है।

चश्मा टूट गया हो तो वहां भी बदलवाया जा सकता है। परन्तु अब निकलनेका समय नजदीक आ गया है। अिसलिअे अिस सुझावमें बहुत सार नहीं है।

तेरा पत्र आज ही यहां आया और आज ही मिला है। और यह अुत्तर भी आज ही लिखा जा रहा है। कल यहांसे निकलेगा, अैसी आशा रखता हूं। वहां कब मिलेगा यह हम सबके भाग्य पर आधार रखता है।[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

---

१. पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लड़की अिन्दिरा गांधी अुस समय पूनामें पढ़ती थीं।

२. यह पत्र पू० बापूजीने पू० बापूके हाथसे लिखवाया था।

९८

(तार)

मणिवहन पटेल
सेंट्रल जेल,
वेलगांव

पूना,
२–५–'३२

यशोदा कल गुजर गअी। यह मानना चाहिये कि वह जीवित मृत्युसे छूट गअी।[1]

गांधी

९९

यरवडा मंदिर,
२–७–'३२

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मेरा सन्देश मिला होगा। तूने पूनियां भेजनेका विचार किया अिससे भेजनेका पुण्य तो पा चुकी। भेजी नहीं यह अच्छा ही किया। अब यहां खराव पूनियां रही ही नहीं हैं। जो पड़ी हैं वे बहुत हैं। सब महादेवकी ही बनाअी हुअी हैं। लगभग दो माससे अिकट्ठी होती रही हैं। महादेव ज्यादातर छक्कड़दासकी भेजी हुअी पूनियां काममें लेते हैं, क्योंकि अुनकी रुअी अुत्तम है और पूनियां वड़ी

---

१. यह तार पहले तो मुझे दिया नहीं गया था। परन्तु जेलके डॉक्टरने ३ तारीखकी सुबह मुझे खबर दी कि आपका अेक तार आया है और अुसमें किसीके गुजर जानेके समाचार हैं। अुसी दिन दोपहरको अेक बहनकी मुलाकातका प्रसंग आया और अुसमें यशोदाके गुजर जानेका मुझे पता लगा। शामको मैंने मेट्रनसे झगड़ा किया कि मुझे पता चला है कि मेरा तार आया है और वह तार जब तक मुझे नहीं दिया जायगा तब तक मैं कोठरीमें बन्द नहीं होअूंगी। बहुत झगड़ा होनेके वाद अन्तमें मुझे तार दिया गया।

सावधानीसे बनाअी हुअी हैं। मैं मगन चरखे पर महादेव जैसा बारीक सूत कभी नहीं कात सकता। यज्ञका सूत अपने लिअे हरगिज काममें नहीं लेना चाहिये, यह मेरी हमेशासे राय रही है और वह ठीक ही है। यदि यज्ञके निमित्त कातनेवाला लापरवाह रहे, तो अुसकी परीक्षा हो गअी और वह फेल हो गया। यज्ञका सूत सबसे ज्यादा सावधानीसे कातना चाहिये। जितना सूत काते अुतना देकर खुद जो भलाबुरा सूत मिले वही काममें ले तो अुत्तम है। परन्तु अैसा करनेका साहस न हो तो अन्तमें यज्ञके लिअे अेक घंटा या आध घंटा रखकर कमसे कम १६० तार तो कृष्णार्पण कर ही देना चाहिये।

तू सामूहिक प्रार्थना पसन्द करती है, यह बिलकुल समझमें आता है। क्योंकि तेरी प्रार्थना ही सामूहिकसे शुरू हुअी। परन्तु अकेले प्रार्थना जरूर करनी चाहिये। भले ही वह अेक ही मिनटके लिअे हो। अन्तमें तो हृदयमें यही रटन चलती रहनी चाहिये। और यह अकेले प्रार्थना करनेकी आदत न पड़े तो हो ही नहीं सकता। अकेले प्रार्थना तो सोते, नहाते, खाते, कोअी भी क्रिया करते हुअे हो सकती है। अिसलिअे अुसका बोझा तो होता ही नहीं। अुलटे अुससे मन हल्का हल्का हो जाता है—होना चाहिये। अैसा अनुभव न हो तो अुस प्रार्थनाको कृत्रिम समझना चाहिये।

डाह्याभाअीकी समस्या जरा कठिन है। परन्तु वे बड़े समझदार हैं। अिसलिअे अपने आप स्थिर हो जायंगे। अिसमें किसीको अुनका पथ-प्रदर्शन नहीं करना है। यदि फिर शादी करनेकी अिच्छा होगी तो अुन्हें कोअी रोकनेवाला नहीं है। और शादी नहीं करनी हो तो अुन्हें कोअी ललचानेवाला नहीं है। दूसरे लोग तो तंग करेंगे ही। अुनसे डाह्याभाअी जरूर निबट लेंगे। मेरा मिलना बन्द हो गया है, यह अैसे प्रसंग आते हैं तब खटकता है। परन्तु अिस तरह सहन करनेमें ही हमारा धर्म है। बायें हाथकी कोहनी अमुक रीतिसे काममें लेनेसे दुखती है। आजकल लगभग अेक माससे कपड़े नौकर धोता है। मेरे बरतन

जेलके ही हैं। चमकते हुअे तो नहीं रहते, पर साफ रहते हैं। तू शरीरको संभालना। पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० डॉक्टर बलवन्तराय कानूगा
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद

१००

य० मं०
२६–८–'३२

चि० मणि,

तेरे कैद होनेके बाद किसीके नाम भी कोअी पत्र नहीं आया अिसका क्या कारण है? कैद होनेके बाद तुरन्त पत्र लिखनेका अधिकार तो है ही न? अभी तक न लिखा हो तो अब लिखना। हो सके तो अिस बार शरीर सुधार लेना। खुराक जो आवश्यक हो वह लेने या मांगनेमें संकोच न रखना। मेरी सलाह है कि अपनी पढ़ाअीका क्रम तैयार करके बाकायदा कच्चे विषयोंको पक्का कर लेना। गुजराती व्याकरण पक्का कर ले। और भाषा पर अधिक काबू पा ले तो अच्छा। अंग्रेजी जानती ही है, अिसलिअे अुसे भी पक्का किया जा सकता है। अिसमें कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) की मदद ली जा सकती है। संस्कृतमें लीलावतीबहन (मुन्शी) मदद कर सकेगी, साथ ही मराठी भी अधिक अच्छी कर ली जाय तो ठीक। थोड़ा स्त्रियों संबंधी खास ज्ञान भी प्राप्त कर लेनेकी आवश्यकता है ही। परन्तु यह तो मेरा सुझाव हुआ। अिसमें से तुझे कुछ पसन्द न हो तो जो पसन्द हो वह चुन लेगा। अिसमें से कुछ भी पसन्द न हो तो कुछ नया चुन लेना। मेरा हेतु तो अितना ही है कि यह जो अमूल्य अवसर मिला है अुसका पूरा सदुपयोग ज्ञानवृद्धिके लिअे कर लेना। कातनेकी छूट हो तो कातना। प्रार्थना और डायरीको तो भुलाया ही नहीं जा सकता।

हम तीनों आनन्दमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाअी अितनी तेजीसे हो रही है कि तू देखे तो आश्चर्य करे। पुस्तक हाथसे छूटती ही नहीं। नौजवान विद्यार्थीमें भी अिससे अधिक लगन नहीं हो सकती। कातते हैं परन्तु ४० नम्बर तकका। और लिफाफे तो बनाते ही हैं। महादेवके ८० नम्बर चल ही रहे हैं। अिसके सिवा फ्रेंच और अुर्दू है। मेरी धीमी गाड़ी मगन चरखे पर चलती है। पढ़ाअी तो लूली-लंगड़ी ही है। पत्र बहुत वक्त खा जाते हैं। ×××

किसी समय मुझे पत्र लिखनेकी गुंजाअिश हो और अिच्छा हो जाय तो लिखना। हम सबकी तरफसे आशीर्वाद।

बापू[1]

मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

१०१

(य० मं०)
२१–९–'३२

चि० मणि,[2]

तुझे आश्वासनकी जरूरत होगी क्या? खबरदार, यदि अेक भी आंसू गिराया तो। जो सौभाग्य मुझे मिला है वह बिरलोंको ही कभी कभी मिलता है। अिससे खुश हो सकते हैं, रो तो सकते ही नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिअे अुपवास नहीं है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्तव्य-

---

१. मैं ता० ११–८–'३२ को अहमदाबादसे गिरफ्तार हुअी थी। मुझे १५ मासकी सजा हुअी थी। अुसके बाद बेलगांव जेलके पते पर यह पत्र लिखा गया था।

२. पू० बापूजीने ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध ता० २०–९–'३२ से अुपवास शुरू किया था, जो ता० २६–९–'३२ को शामको छोड़ा था। अुस मौके पर लिखवाया हुआ पत्र। यह पत्र बेलगांव जेलमें मुझे ता० २४–९–'३२ को मिला।

पालन है। मुझे जब लिखना हो तब लिखनेकी छूट मैंने पा ली है। अिसलिअे मुझे लिखना। यह पत्र तुझे तुरन्त मिलना चाहिये। दूसरी बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
(प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन)
बेलगांव

१०२

य० मं०
८–१०–'३२

चि० मणि,[1]

तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मेरे लिअे तो लम्बा नहीं था। अुपवास तो अब गअी बीती बात हो गअी। वह अीश्वर-दत्त वस्तु थी, अिसलिअे सुशोभित हो गअी। अब शरीर फिर बड़ी तेजीसे बन रहा है। शक्ति लगभग आ गअी है। दूध दो पौंड और ढेरों फल ले रहा हूं। फलोंमें नारंगी, मोसम्बी, अनार अथवा अंगूरका रस और दूधी अथवा टमाटरका रस। ××× काफी घूम-फिर सकता हूं। कमसे कम २०० तार कातता हूं। ४५ अंकके। पत्र तो काफी लिखता ही हूं। अिसलिअे कोअी चिन्ताका कारण रह ही नहीं गया है। बाको दिनमें मेरे साथ रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी तबीयत अब ठीक है।

तुझे खानेके सपने आते हैं, अिसमें थोड़ा-बहुत अपच कारण हो सकता है। अैसे सपने या तो बहुत भूखे पेट रहनेसे आते हैं या बदहजमीसे। अिन कारणोंको ढूंढकर अुचित अुपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन व्रतबद्ध हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट

---

१. यह पत्र २४–१२–'३२ को दिया गया था अैसा जेलकी मुहरसे पता चलता है।

हो ही जाते हैं। दीर्घकालके आवरण अेकाअेक मन्द पड़ जायंगे अैसा माननेका कारण नहीं है। वे अपना समय लेते ही हैं। अिसलिअे घबराना नहीं चाहिये। निराश भी नहीं होना चाहिये। प्रयत्नमें शिथिल भी नहीं होना चाहिये और परिणामके बारेमें निःशंक और निश्चिन्त रहना चाहिये। यही गीताकी अनासक्ति है।

अुपवासका असर अलग अलग होता है, अिसमें आश्चर्य नहीं। अुसका आधार शरीरकी बनावट पर और मानसिक तैयारी पर है। अुपवासकी जिसे आदत ही न हो वह अेकसे भी घबरा जायगा और अुसके अस्थि-पंजर ढीले हो जायंगे। जिसे आदत है अुसके लिअे वह खेल हो जाता है। अिसी तरह जिसके शरीरमें चरबी वगैरा है ही नहीं वह बहुत लम्बा अुपवास न करे। बहुत चरबीवाला धीरज रखे तो खूब लम्बा सकता है और शारीरिक दृष्टिसे अुसका लाभ अुठा सकता है।

बापू और महादेव मौज कर रहे हैं। अितना अेकान्तवास तो हमने कभी अनुभव किया ही नहीं था। अिससे खूब लाभ हुआ है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी ठीक रहती होंगी। और जो बहनें हों अुन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुंशी[1]का मुझे सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाअिश हो और वैसी अुमंग आवे तो लिखें।

अिस पत्रके साथ नन्दूबहनका जो पत्र यहां आया है वह भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

---

१. श्री कन्हैयालाल मुंशी, बम्बअीके प्रसिद्ध अेडवोकेट। १९३७ से १९३९ तक बम्बअी प्रान्तके गृहमंत्री। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद १९५० से १९५२ तक भारत सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५२ से १९५७ तक अुत्तरप्रदेशके गवर्नर।

१०३

(तार)

पूना,
२८–१०–'३२

मणिबहन पटेल,
कैदी, बेलगांव जेल

आशा रखता हूं कि दादीकी मृत्युसे तू विह्वल नहीं हुआी होगी। अैसी मृत्युकी सब अिच्छा करते हैं। बहुत समयसे तेरा पत्र क्यों नहीं आया? प्यार।

बापू

१०४

(तार)

पूना
३१–१०–'३२

मणिबहन पटेल,
कैदी, बेलगांव जेल

दादीने बुधवारकी दोपहरको करमसदमें चार घंटेकी बीमारीके बाद शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। आशा करता हूं कि शुक्रवारको अुसका विवरण देते हुअे जो पत्र लिखा है वह तुझे दिया गया होगा। हम सब आनन्दमें हैं। प्यार।

बापू

१०५

(तार)

पूना,
१९-११-'३२

मणिवहन,
कैदी, वेलगांव जेल

डाह्याभाअीको ७ दिनसे वुखार आता है। अब मालूम हुआ है कि टाअिफाअिड है। और कोअी खरावी नहीं है। खास नर्स देखभालके लिअे हैं। चिन्ताका कोअी कारण नहीं है। रोजके समाचार भेजनेकी कोशिश करूंगा।

वापू

१०६

यरवडा मंदिर,
२०-११-'३२

चि० मणि,

डाह्याभाअीके वारेमें दिया हुआ मेरा तार मिला होगा। तुझको हमेशा खबर देनेकी और तुझे लिखना हो वह लिखनेकी (डाह्याभाअीको या अुसके वारेमें) अिजाजत मिल गअी है। अिसलिअे तू वहांसे रोज लिख सकती है। वह पत्र मैं डाह्याभाअीको पहुंचा दूंगा। यहांसे तो रोज पत्र लिखा ही करूंगा। डॉ० मादन[1]का पत्र आया है। वह अिसके साथ भेज रहा हूं। अुसके वाद आज भी भाअी करमचन्द[2]का पत्र आ गया है। अिसलिअे कल तकका हाल अच्छा ही माना जायगा। आज १४ दिन पूरे हुअे हैं। अभी वुखार १०० से १०३ के वीच रहता है। अेक वार ९९।। तक भी गया था। छाती, फेफड़े वगैरा ठीक हैं।

---

१. वम्वअीके कुशल पारसी डॉक्टर

२. वम्वअीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य वापूके भक्त शुभेच्छु।

फलोंका रस, वारलीका पानी और कभी कभी पतली छाछ अितनी चीजें ले सकता है। खास नर्सें रखी गअी हैं। सब तरहसे पूरी सावधानी रहती है, अिसलिअे चिन्ताका जरा भी कारण नहीं है।

हम सब आनन्दमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१०७

य० मं०
(२२-११-'३२)

चि० मणि,

तुझे तार दिया है। पत्र लिखा है। दोनों मिले होंगे। तू रोज लिखे तो मुझे पत्र मिलेगा और वह डाह्याभाअीको पहुंचा दिया जायगा[1]। आज भी खबर अच्छी ही है। देवदास देखकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाअीको देखकर तो कोअी कह ही नहीं सकता कि टाअिफाअिड हुआ है। अैसी हिम्मत और शक्ति बताता है।

सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

---

१. डाह्याभाअीको बम्बअीमें टाअिफाअिड हुआ था, अिसलिअे यह छूट पूज्य बापूजीने सरकारको लिखकर ले ली थी।

१०८

यरवडा मंदिर,
२५-११-'३२

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र — तुझे खबर देनेके बाद पहला ही — आज मिला। तू व्यर्थकी न करने जैसी चिन्ता करती है। तुझे जानना चाहिये कि बापू और तू जेलमें हैं तब बाहर बैठे हुअे लोग जो कुछ करना चाहिये अुसे करनेसे चूक नहीं सकते। टाअिफाअिडका पता चलते ही तुरन्त वालचन्द[1]ने करमचन्दको कहा कि रात-दिनकी दो नर्सें रखो, डॉक्टरोंमें से जिसे रोज बुलाना अुचित हो अुसे बुलाओ; और सारा खर्च खुद ही देनेको कहा। रोज ३०-४० रुपये खर्च होते हैं। वे ही देते हैं। अस्पतालसे ज्यादा अच्छी देखभाल होती है। घरके लोगोंमें करमचन्द, छोटूभाओ[2] हैं (जो सारे दिन पास ही रहते हैं), और दो नर्सें हैं जो बहुत मिलनसार हैं और डाह्याभाओके स्वभावको माफिक आ गओ हैं। अिसके सिवा बख्शी[3] और दूसरे मित्र भी हैं ही। अिस समय डाह्याभाओके पास तू नहीं है यह तुझे खटकना स्वाभाविक है। लेकिन जो अीश्वरको अधिक चाहता है अुसकी वह ज्यादासे ज्यादा कसौटी करता है। यहां करमचन्द, छोटूभाओ वगैराके पत्र रोज आते हैं। यह तीसरा हफ्ता है। अब बुखार १०२ से अूपर नहीं जाता। कल तो नॉर्मल भी हो गया था। डॉक्टर आशा करते हैं कि अगले सोमवार तक बुखार बिलकुल नॉर्मल हो जायगा और बढ़ना घटना बन्द हो जायगा। तुझे तो डॉ० मादनका, जो देखभाल और अिलाज करते हैं, वल्लभभाओके नाम आया हुआ पत्र भी भेजा था। अुससे भी तू समझेगी कि डॉक्टर भी

---

१. स्व० सेठ वालचन्द हीराचन्द। पूज्य बापूके अेक मित्र।

२. मेरे काकाके पुत्र।

३. स्व० जमनादास बख्शी। बम्बअीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य बापूके अेक भक्त।

प्रेमसे देखभाल कर रहे हैं। मोसम्बीका रस, छाछ वगैरा देते हैं। साधारण तौर पर तो टाअिफाअिडके बीमारको दस्त या अैसा ही कुछ शुरूसे हो जाता है। डाह्याभाअीको अिनमें से कोअी व्याधि नहीं है। अिसलिअे चिन्ता करनेका कुछ भी कारण नहीं। तू अपने काममें परायण रहना और अैसी प्रार्थना करना कि डाह्याभाअी जल्दी अच्छे हो जायं। दादीके[1] लिअे शोक हो ही नहीं सकता। अुनके जैसी भाग्यशाली मृत्यु कितनोंको मिलती है? हम अमुक स्वजनकी सेवा नहीं कर पाये और वह चला गया, यह भावना पैदा हो तब अैसा निश्चय करके निश्चिन्त हो जायें कि आगे किसीकी भी सेवा करनेका मौका हाथसे नहीं जाने देंगे।

हम तीनों आनन्दमें हैं। सोनेके कुछ घंटे छोड़कर हम तीनोंका बाकी सारा समय अस्पृश्यता-निवारणके काममें लगता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल जेल,
बेलगांव

१०९

य० मं०
२६-११-'३२

चि० मणि,

आज डाह्याभाअीके अधिक अच्छे समाचार हैं। बुखार १००।। से आगे गया ही नहीं और ९८।। तक अुतरा था। अिसलिअे कह सकते हैं कि अब अुतार पर है। कल अथवा परसों बिलकुल नॉर्मल होकर फिर नहीं चढ़ेगा, अैसी डॉक्टर आशा रखते हैं। कमजोरी है सो तो होगी ही। परन्तु चिन्ताका जरा भी कारण नहीं। अिसलिअे अब तुझे

---

१. मेरी दादी लगभग ९० वर्षकी अुम्रमें गुजर गअीं। वे अन्त तक रसोअी वगैराका काम करती रहीं।

तार करनेकी जरूरत नहीं रही और यहांसे तेरे पास तार भेजनेकी भी जरूरत नहीं रही।

तुझे रुपया भेजनेके लिअे तो बापूने करमचंदको कल लिख ही दिया है। हम तीनों मजेमें हैं। तेरा पत्र डाह्याभाअीको भेज दिया है। अपनी तबीयतके समाचार क्यों नहीं भेजती?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
बी क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११०

य० मं०
२७-११-'३२

चि० मणि,

आज कलसे भी ज्यादा अच्छी खबर है। बुखार अुतरकर ९७॥ तक गया था। १०१॥ से ज्यादा नहीं बढ़ा। नींद अच्छी आती है।

तू अपने कर्तव्यमें निमग्न रहना।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअीके खर्चका बोझा सब मित्रोंने अुठा लिया है।

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१११

यरवडा मंदिर,
३०-११-'३२

चि० मणिवहन,

आज डॉ० कानूगाका पत्र आया है। वह साथमें भेज रहा हूं। अिससे तुझे पता लग जायगा कि डाह्याभाअीकी चिन्ता करनेका कारण नहीं। बुखारके जानेमें तो अभी समय लगेगा, मगर अिसमें चिन्ता करने जैसी कोअी खास बात नहीं। हम तीनों आनंदमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
बी क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११२

य० मं०
६-१२-'३२

चि० मणि,

डाह्याभाअीका बुखार रविवारको बिलकुल अुतर जाना चाहिये था, मगर अुतरा नहीं। नॉर्मल तो होता है। परन्तु ९९-१०० तक चढ़ता है। अिसलिअे शायद अभी अिस हफ्ते तक और चले। डॉक्टरोंको अब कोअी चिन्ता नहीं रही। वे तो शक्तिके लिअे सेनेटोजन देने लगे हैं। और डेढ़ सेर दूध भी देते हैं, जो अच्छी तरह पच जाता है। अंबालाल[1], ठक्कर[2], बा वगैरा अिन अेक दो दिनोंमें डाह्याभाअीको

---

१. सेठ अंबालाल साराभाअी।

२. स्व० श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (ठक्करबापा)। १९१४ से सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीके सदस्य। हरिजन-सेवक-संघके बरसों तक मंत्री, १९४४ से १९५१ तक कस्तूरबा स्मारक-निधिके ट्रस्टी और मंत्री, गांधी-स्मारक-निधिके अेक ट्रस्टी।

देख आये। सब कहते हैं कि डाह्याभाओी आनंदमें हैं। किसीको नहीं लगता कि चार सप्ताहसे टािफािडके बीमार हैं। तू जरा भी चिन्ता न कर।

मेरा अुपवास[1] तो अब पुराना हो गया। 'टाअिम्स' से सब जान लिया होगा। अैसे अुपवास तो मेरे जीवनमें होते ही रहेंगे। अिसलिअे अिसे स्वाभाविक समझकर कार्य-परायण रहना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिज़न,
बेलगांव

११३

य० मं०
९–१२–'३२

चि० मणि,

यह मानकर कि तुझे बम्बअीसे नियमपूर्वक खबरें पहुंचती रहती हैं, मैं रोज लिखनेकी चिन्ता नहीं रखता। डाह्याभाअीके स्वास्थ्यमें सुधार होता ही जा रहा है। अभी दिनमें दो तीन घंटे थोड़ा बुखार रहता है। फिर भी शक्ति खूब आती जा रही है। आज ही देवदास आया है। वह डाह्याभाअीसे मिलकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाओी घोड़े जैसे लगते हैं। डॉक्टर खुराक बढ़ाते जा रहे हैं। अब दूध वगैराके

---

१. अप्पासाहब पटवर्धनने जेलमें भंगीका काम करनेकी अनुमति मांगी थी। वह अुन्हें नहीं दी गअी, अिसलिअे अुन्होंने बहुत थोड़ी खुराक लेना शुरू कर दिया था। पू० बापूजीको अिस बातका पता लगा तो अुन्होंने भी ३–१२–'३२ को सरकारके अिस रवैयेके खिलाफ अुपवास शुरू कर दिया। ता० ४–१२–'३२ को समझौता हो गया तो अुपवास छोड़ दिया।

सिवा सागका झोल भी दिया जाता है। और खूब आनन्दमें हैं। आज नटराजन[1] का पत्र आया है। अुसमें भी अैसे ही अच्छे समाचार हैं। अिसलिअे तुझे अब बिलकुल चिन्तामुक्त हो जाना है। तेरे लम्बे पत्रका अुत्तर जरा अवकाश मिलने पर लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
'बी' प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११४

(य० मं०)
३-१-'३३

चि० मणि,

आजकल मुझे अेक मिनटका भी अवकाश नहीं रहता। मेरा खयाल है कि अब रोजका पत्रव्यवहार बन्द कर दिया जाय। डाह्याभाअी अब बिलकुल अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११५

[बेलगांव जेलकी मेरी अेक साथी बहनके नाम पू० बापूजीके पत्रसे।]

३०-३-'३३

*

मणिका सुघड़पन सरदारका अुत्तराधिकार है, यह मैं ही देख पाया। मणिकी सुघड़ता देखकर मोतीलालजी चकित हो गये थे। आश्रममें मैंने अुसकी कोठरी मोतीलालजीको दी तो बोल अुठे, "अैसी

१. स्व० नटराजन। 'अिंडियन सोशियल रिफॉर्मर' के सम्पादक।

सुघड़ता तो मैंने आनंद-भवनमें भी नहीं देखी।" अिसलिअे यह तो तू अुससे अच्छी तरह सीख लेना। जिस पर अुंडेले अुस पर अपनी सेवा अुंडेलनेकी भी अुसकी शक्ति अजीब है। अुसकी निडरता तो अैसी है कि तुम लोगोंमें से कुछ बालायें अुसकी स्पर्धा कर सकती हो। अिसलिअे अिस ओर ध्यान नहीं खींच रहा हूं।

*

बापूके आशीर्वाद

११६

य० मं०
४-४-३३[१]

चि० मणि,

पत्रोंकी तेरी शिकायत समझमें नहीं आती। तुझे पत्र नियमित लिखे ही जाते हैं। क्यों नहीं मिलते अिसकी अब जांच हो रही है। बापू लिखते थे अिसलिअे मैं लिखे बिना काम चला लेता था। परन्तु कुछ न कुछ तो नीचे लिखाता ही था। किसी समय यह भी न हुआ होगा। अिसलिअे कुछ पता नहीं चलता। हम कोअी तुझे पत्र न लिखें तो तुझे दुखी होनेका जरूर अधिकार है और गुस्सा भी आयेगा। परन्तु तुझे यह मान ही लेना चाहिये कि कुछ भी कारण हो तो भी यह नहीं हो सकता कि तुझे पत्र न लिखा जाय। कोअी आकस्मिक बात हो गअी होगी, यह सबसे सीधा अनुमान है।

यहां सब मजेमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाअी फिर शुरू हो गअी है। यह तो नहीं कहूंगा कि धड़ाकेसे चल रही है, मगर काफी अच्छी चल रही है। जितना सीखा है अुतना तो याद रखनेका सतत प्रयत्न करते हैं। डाह्याभाअी लगभग हर सप्ताह मिल जाते हैं।

मेरे हाथका तो जैसा था वैसा ही हाल है। परन्तु कोअी बाधा नहीं पड़ती है। महादेवका स्वास्थ्य अच्छा है। छगनलाल (जोशी) का भी

१. जेलमें मिला ता० ८-४-३३ को; मुझे दिया गया ता० १५-४-३३ को।

अच्छा है। तुझे अच्छी पूनियां चाहिये तो यहांसे भेजी जा सकती हैं। बहुत आती रहती हैं। तेरे विषयमें समाचार मृदुलाकी तरफसे मिले थे। कमलादेवीकी तरफसे भी और लीलावतीकी तरफसे भी। मालूम होता है सभी पर तूने अच्छी छाप डाली है। बा और मीरा बहन मजेमें हैं। मीराबहन हर हफ्ते पत्र लिखती हैं। काकासाहब आजकल यहीं हैं और हरिजन-पत्रोंके काममें सहायता देते हैं। पत्रोंके गुजराती, बंगाली और हिन्दी संस्करण निकल रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : मैं अगले महीनेकी ४ तारीखको अपना पुण्य[1] क्षीण होने पर मृत्युलोकमें प्रवेश कर रहा हूं।

म० (महादेवभाअी)

श्रीमती मणिबहन पटेल,
बी क्लास प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११७

यरवडा मंदिर,
२६–४–'३३

चि० मणि,[2]

तेरा पत्र २–३ दिन पहले ही मिला। तू कितना ही लम्बा क्यों न लिखे वह हमें लम्बा नहीं लगेगा। अितनी ही बात है कि यहांसे और अुसमें भी मेरे पाससे बहुत लम्बे पत्रोंकी आशा तू रखती हो तो अुसे मैं पूरा नहीं कर सकता। तू आशा रखे यह तो मैं पूरी तरह समझ सकता हूं। हमारे पास जो विविधता, जो सुविधायें, जो वैभव विद्यमान हैं, वे तुझे तो मिल ही कैसे सकते हैं? अिन सब सुविधाओंका

---

१. सजा।

२. यह पत्र आधा श्री महादेवभाअीके अक्षरोंमें और बाकीका भाग पूज्य बापूके अक्षरोंमें लिखा हुआ है।

अुपयोग केवल सेवाके लिअे न करते हों अथवा अुसीके लिअे ये सुविधायें पैदा न करते हों, तो हम अयोग्य सेवक साबित होंगे और अुससे भी अधिक अयोग्य बुजुर्ग साबित होंगे। सैकड़ों बच्चोंके मां-बाप होनेका दावा करके बैठ जाना और हवामें अुड़ते रहना जरा भी शोभनीय नहीं माना जा सकता। अिसलिअे हम आरामसे अिस वैभव अित्यादिका अुपयोग कर रहे हैं अिसकी अीर्ष्या तुझे या मृदुला जिस किसीको करनी हो पेट भरकर करते रहना। मीराबहनके बारेमें तूने अुलाहना दिया भी है और फिर वापस भी ले लिया है। बापका धर्म क्या है? जिन बच्चोंको जो चाहिये वह अुन्हें दे या सब बच्चोंको अेक जैसा देकर घोर अन्याय करे? और संसारके सामने या नासमझ बालकके सामने न्यायपरायण साबित होनेके प्रयत्नमें किसीके प्राण भी ले ले? तुझे तेरी बीमारी मिटानेके लिअे बाजरेकी रोटी और मक्खन निकाली हुअी छाछ देनी पड़े तो क्या भारती (साराभाअी) जैसी लड़कीको शहद, मक्खन और गेहूंके फुल्के देनेकी जरूरत होते हुअे भी बाजरेकी रोटी और छाछ ही दी जाय? बापका धर्म प्रत्येक बालकके श्रेयके लिअे जितना आवश्यक हो अुतना देना है। अिससे आगे बढ़कर श्रेयको हानि न पहुंचे अिस हद तक अधिक देनेकी भी अुसे छूट है। परन्तु अैसा करना अुसका फर्ज नहीं है। यह सब ज्ञान क्या तुझे आज देनेकी आवश्यकता है? परन्तु मुझे तो ज्यों ज्यों कागज भर देना है, अिसलिअे अितना अनावश्यक सयानापन दिखा रहा हूं। हम पर तुझे जरा भी गुस्सा नहीं आया तो फिर जी क्यों जला रही थी? अितनी कम श्रद्धा क्यों रखी? और तूने निश्चयपूर्वक क्यों नहीं मान लिया कि हम दोनोंमें से अेकका पत्र तो जरूर गया ही होगा? मैं अवश्य मानता हूं कि लिखा जा सके तो हम दोनोंको लिखना चाहिये। परन्तु जहां पत्र मिलनेके बारेमें ही अनिश्चय हो वहां अिस तरह लिखनेकी अुमंग बहुत नहीं रहती। किसी भी तरह अेक तो पहुंचेगा ही, यह समझकर अेक तो नियमित रूपमें लिखा ही जाता है। और आगे भी लिखा जाता रहेगा, यह तुझे विश्वास रखना चाहिये। तेरे पत्रका

ब्यौरेवार अुत्तर देनेकी जिम्मेदारी तो सरदारने ही ली है। अिसलिअे तेरे सन्देशों वगैराका जवाब वे ही पहुंचायेंगे। और ब्यौरेवार अुत्तर भी वे ही देंगे। कुछका जवाब देना तो मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अपने अिस लोभका मैं संवरण कर लेता हूं।

आनंदी[1]का आपरेशन तो भूतकालकी वस्तु हो गअी। वह आश्रममें कभीकी चली गअी है और मजेमें है। बीचमें अुसे सरदी और बुखार हो गया था। परन्तु यह तो क्षणिक ही था। . . . मिल गये। . . . के हाथ खंभे जैसे हो गये हैं। . . . अुसे फूलकी तरह संभाल रहा है। वह पति है, मित्र है, शिक्षक है, सेवक भी है। अुससे अधिक अच्छा पति विधाता भी नहीं ढूंढ़ सकता था, अैसा अभी तो लगता है। . . . अुसके योग्य है या नहीं, सो तो दैव जाने। परन्तु अुसकी त्रुटियां मैंने स्वयं शादी करानेसे पहले . . . के सामने रख दी थीं, और यह लिख दिया था कि वह सम्बन्ध करना न चाहे तो निःसंकोच सगाअी तोड़ सकता है। परन्तु . . . के मातहत तालीम पाया हुआ . . . अेक बार किये हुअे निश्चयसे कैसे डिगे? . . . विवाहके अवसर पर सबने अुसे अपने प्रेमसे नहलाया था। सबने कुछ न कुछ भेंट दी थी। लंबे समय तक अुन लोगोंको साज-सामान और कपड़ों पर खर्च भी करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। अिससे जितना संतोष मिले अुतना ले लेना।

हमारे दारोगा अब मुझे हमारे रहनेके वाड़ेमें ले जानेके लिअे आकर खड़े हो गये हैं। अब ग्यारह बजेंगे, अिसलिअे अब अपने पिंजड़ेमें जा रहा हूं। स्नान आदि करनेके बाद फिर १२ बजे मुझे हरिजन-गृहमें ले आयेंगे।

(पू० बापूके अक्षरोंमें)

अितना बापूने महादेवसे लिखवाकर अभी मुझे दिया। अिसलिअे बाकीका मुझे पूरा करना है। तेरे पत्रकी सूची डाह्याभाअीको भेज

---

१. श्री लक्ष्मीदास आसरकी लड़की।

देता हूं। अिसलिअे पुस्तकों वगैराके जो सन्देश हैं वे अुन्हें मिल जायंगे। डाह्याभाअी पिछले सप्ताह आ गये थे। आनंदमें हैं। अब स्वास्थ्य पहले जैसा हो गया माना जा सकता है। बाबा मजेमें है। परीक्षामें पास हो गया। (अुस समय छह वर्षका था।) अिसलिअे अब पहली कक्षामें बाकायदा भरती कर दिया गया है। अब कुछ कुछ पढ़नेमें अुसका ध्यान लग रहा है। आज 'टाअिम्स' में फर्स्ट अेम० बी० बी० अेस० का परिणाम पढ़ा। अुससे मालूम होता है कि जीतू[1] पास हो गया। परन्तु अभी तो अैसी और चार परीक्षाअें हर साल देनी हैं। कल श्री सरलादेवी[2] का पत्र आया था। ता० २२ का अहमदाबादसे लिखा हुआ पत्र था। अुसमें वे लिखती हैं कि कल अर्थात् ता० २३-४-'३३ को मसूरीके लिअे रवाना होंगे। सारा परिवार जायगा। साथमें अिन्दु[3] और अुसकी मां भी जायंगी। श्री निमूबहन[4] बादमें जायंगी। सब बड़े आनंदमें हैं। अिस बार दोनों जनें चिन्ता नहीं करते, अिसका विश्वास दिलाते हैं। . . . अुन्हें कुछ कम चिन्ता है। अंबालालभाअीकी जिनेवा जानेकी बातें अखबारोंमें आ रही हैं। परन्तु अुनके पत्रमें अिस बारेमें कोअी अुल्लेख नहीं। अगले पत्रमें कुछ न कुछ पक्की खबर आयेगी। कमलादेवी दो दिन पहले बापूसे मिलने आअी थीं। वापस बम्बअी गअीं। . . .

देवदास भटकता भटकता कल बम्बअी आया है। कल यहां मिलने आनेवाला है। मथुरादास भी कल यहां आये थे। श्री जमनालालजी दो तीन महीने अलमोड़ा रहने गये हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। डॉक्टरोंने पहाड़ पर जानेकी सलाह दी। जानकीदेवी भी साथ गअी

---

१. डॉ० कानूगाके पुत्र।

२. श्री अम्बालाल साराभाअीकी पत्नी।

३. श्री अिन्दुमती चिमनलाल सेठ। १९५२-१९५७ तक बम्बअी राज्यकी अुप-शिक्षामंत्राणी।

४. स्व० निर्मलाबहन बकुभाअी।

हैं। वुल (खुरशेदवहन) और अुनकी वहनें सव पंद्रह दिनके लिअे कल महावलेश्वर गअी हैं। अुनकी मांका वड़ा आग्रह था अिसलिअे गअी हैं। ताजी होकर वादमें दो वहनें तो ठिकाने (जेलमें) पहुंच जायंगी ही। श्री जमनावहन टाअिफाअिडमें पड़ी हैं। यशवंतप्रसादके रोज पत्र आते हैं। और अव तो अच्छी तवीयत है, अैसा लिखते हैं। नंदू-वहन तो तुमसे मिल गअीं। अिसलिअे क्या लिखूं? अेक आंख खो वैठीं।[1] परन्तु वे तो वड़ी संतोपी और धीरजवाली हैं। लिखती हैं कि तुम्हारे साथ न हो सकनेका दुःख है।

हमारे पत्र देरसे मिलें तो अिसकी चिन्ता न करना। पता नहीं कितने पत्र गुम हो गये। परन्तु यहांसे तो अच्छी तरह गये दीखते हैं। आअिन्दा प्रत्येक पत्र रजिस्ट्रीसे ही भेजनेका निश्चय किया है। अिसलिअे तुरंत पता लग जायगा। यह पत्र भी रजिस्ट्रीसे ही भिजवाया है।

दादा साहव[2] अभी तक रत्नागिरिमें ही हैं। वहां घरकी व्यवस्था कर ली है। सारा परिवार वहां पहुंच गया है। वेचारे शरीरसे जर्जर हो गये दीखते हैं। कमू[3] अव तेरह वर्षकी हो गअी। प्रोप्रायटरीमें पढ़ने जाती है। दादाका पत्र पिछले सप्ताहमें आया था। तुम दोनोंके समाचार पूछे हैं। महादेवभाअीका पुण्य (सजा) अव पूरा होने आया है। अगले महीनेके वीचमें फिर मृत्युलोकमें पहुंच जायंगे (छूटेंगे)। कितने समयके लिअे, सो तो अुनके पाप-पुण्य पर निर्भर है!

कल नड़ियादसे मणिभाअीका[4] २० तारीखका लिखा हुआ पत्र मिला। हीरा मामी[5]का २० तारीखको स्वर्गवास हो गया। अेक तरहसे

---

१. खुराकमें आवश्यक तत्त्वोंकी कमीसे जेलमें नंदूवहनकी आंख जाती रही थी।

२. स्व० दादासाहव मावलंकर।

३. स्व० दादासाहव मावलंकरकी पुत्री।

४. पूज्य वापूके मामाके लड़के।

५. पू० वापूकी मामी।

तो वे पीड़ासे छूट गअीं, क्योंकि बीमारी अैसी थी कि जीनेसे मरना अच्छा था। फिर भी मनुष्य चला जाता है तब सगे-संबंधियोंको वियोगका दुःख होता ही है।

अिस बार तुम्हारा मन स्वस्थ रहता है, अिससे हम बहुत प्रसन्न हुअे। अैसा ही रहना चाहिये। यह तो हमारी सामान्य स्थिति हो गअी है। और धर्मका पालन करते हुअे मनको जो शान्ति रहनी चाहिये वह न रहे तो यह माना जा सकता है कि कहीं न कहीं हमारी भूल हुअी होगी। शरीर भी नियमित आहार और सुन्दर जलवायुमें यथासंभव अच्छा रहना चाहिये। जो भी शारीरिक दुःख हो अुसको सुधार लेनेका पूरा अवकाश यहां मिलता है। अुसका सदुपयोग कर लेना चाहिये। बाहर हम शरीर पर समय या ध्यान बिलकुल नहीं दे सकते। यहां जितना समय देना हो अुतना दिया जा सकता है। जो भी तकलीफ हो वह डॉक्टरको बताना चाहिये और अिलाज करा लेना चाहिये। मामूली कसरत भी करनी चाहिये। नियमित रूपमें रोज घूमना-फिरना चाहिये। बहुत पढ़ना न हो सके तो चिन्ता नहीं, परन्तु शरीरको संभालना चाहिये। यह बात तो तुम दोनों[1] पर लागू होती है। मेरी तबीयत अच्छी है। हमारी कोअी चिन्ता न करना। हम तो जरूरतकी सब चीज जुटा सकते हैं और जो सुविधा चाहिये वह प्राप्त कर सकते हैं। अिसलिअे हमारे बारेमें पूछनेका क्या है?

अब अगले मासके मध्यमें फिर पत्र लिखेंगे। तुम्हारा पत्र आ गया तो ठीक, वरना हम तो लिखेंगे ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
पी० आर० नं० १०२४९,
बेलगांव सेंट्रल प्रिजन, हिंडलगा

१. मैं और मृदुलाबहन।

११८

य० मं०
६–५–'३३

चि० मणि,

पिछली वारकी तरह अिस वार भी तुझे रोज लिखा जा सकेगा और तू भी रोज लिख सकेगी। मैं चाहे रोज न लिख सकूं या लिखवा सकूं, परन्तु महादेव तो लिखेंगे ही। और संभव हुआ तो मेरे हस्ताक्षर करा लेंगे। यह पत्र तेरे और मृदुला दोनोंके लिअे है। यह भी महादेव ही लिख रहे हैं।

तुम दोनों वीर लड़कियां हो। मैं मानता हूं कि तुम कभी नहीं घवराओगी। मेरी जरा भी चिन्ता न करना। मैं समझता हूं कि मेरा शरीर पिछले अुपवासकी तुलनामें अिस समय अधिक ताजा और समर्थ है। राजाजी[1] ने वहुत झगड़ा किया। आज शान्त होकर वापस जा रहे हैं। थोड़े दिनमें लौटेंगे। वल्लभभाअी वड़ी शान्तिसे सव सहन कर रहे हैं और महादेवसे अुन्होंने प्रतिज्ञा की है कि मुझसे जरा भी वहस न करके संपूर्ण सहयोग — भले ही मौनसे — देंगे। यह वृत्ति मुझे प्रिय है। थोड़े दिन तो वे अिस मौनको जरा कड़ी हद तक ले गये, अुनका विनोद सूख गया। परन्तु अव फिर फूटने लगा है।

यह अुपवास[2] अनिवार्य था। अिसका मुहूर्त्त यही था, अिसमें जरा भी शक नहीं। गणितके सवालकी तरह मैंने अिसका हिसाव

---

१. श्री राजगोपालाचार्य।

२. अस्पृश्यता-निवारणके लिअे समाज-शुद्धि तथा आत्मशुद्धिके यज्ञके रूपमें किया गया २१ दिनका अुपवास : ता० ८–५–'३३ से २९–५–'३३। यह पत्र अुपवास शुरू करनेसे पहले यरवडा जेलसे लिखा गया था। वापूजीको अुपवास शुरू करनेके दिन ही शामको जेलसे छोड़ दिया गया था।

मिला लिया है। यह अुपवास किसीके विरुद्ध नहीं है। मुझे पता नहीं कि किस चीजसे आघात पाकर मैंने यह प्रतिज्ञा की। बहुतसी बातोंका जाने-अनजाने जरूर असर हो रहा था। परन्तु बात यह है कि मुझमें कहीं न कहीं अपवित्रता होगी। तभी तो मेरे साथ सम्बन्ध रखनेवाले हरिजन-सेवक कुन्दन जैसे नहीं हैं? और अस्पृश्यतारूपी राक्षस रावणसे भी बुरा है। रावणके दस मस्तक थे, अिसके सैकड़ों हैं। अिन सबका नाश संघोंसे नहीं होगा, करोड़ों रुपयोंसे नहीं होगा, हरिजनोंको अधिकार दिलानेसे नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंको भाअीकी तरह मिलानेके लिअे अुनके हृदय बदलने चाहिये। अैसा विशाल आध्यात्मिक कार्य हमारे पास जितनी भी आध्यात्मिक पूंजी हो अुसे खर्च कर दें तभी हो सकता है। यह मार्ग तो पुराना है। राजमार्ग है। आज तक नहीं सूझा, यही आश्चर्य है।

दोनों शान्त रहना; और समय आने पर सहयोग देना। मेरे साथ अुपवास हरगिज न करना।

तुम दोनोंको
बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११९

य० मं०
(८-५-'३३)

चि० मणि,

तुझे शनिवारको पत्र लिखा है। तू जवाब भी रोज लिख सकती है। अिसमें मृदुका भी भाग है। कोअी बहन दुःखी न हो। परन्तु सब अपनेमें जहां जहां मैल भरा हो अुसे निकालनेका प्रयत्न करें। कोअी न

कोअी यथासंभव रोज लिखा करेगा। मैं खूब शान्त हूं। हम सब आनंद कर रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१२०

(पर्णकुटी,
पूना)
१५–९–'३३

चि० मणि,

नासिकसे (पूज्य बापूका) पत्र तुझे नियमित मिलता ही है, अिस कारण मैंने कुछ भी नहीं लिखा। अब देखता हूं कि मैंने लिखा होता तो तुझे मिल जाता। खैर। अगर मैं बाहर रहा तो जहां होअूंगा वहां तू मुझे मिलने आ ही जायगी, यह मान लेता हूं। मैं जानता हूं कि तू दो दिन बेलगांवमें रहेगी। फिर नासिक तो जायगी ही। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं मजेमें हूं। आज बम्बअी जा रहा हूं। २१ ता० को अहमदाबाद। २३ ता० को वर्धा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
सेन्ट्रल प्रिजन,
हिंडलगा,
बेलगांव

१२१

(वर्धा)
२९-९-'३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिल गया। तुझे जब तक रहना पड़े तब तक रहकर अच्छी होकर आना। बापूका पत्र मुझे भी मिला है। अुससे मालूम हुआ कि अुनके साथ आजकल चन्दूभाअी[1] हैं।[2] बहुत ठीक हुआ। मुझे पत्र लिखती रहना। डाह्याभाअीसे कहना कि मैंने करमचन्दको जवाब दिये हैं। मैं अच्छा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
रामनिवास, पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बंबअी - ४

१२२

वर्धा,
७-१०-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। जहां मिलना हो वहां फुरसत लेकर आना। परन्तु अिसका यह अर्थ न करना कि अगले युगमें भी आये तो हर्ज नहीं। बाबाको जरूर साथ लाना। अुसे अच्छा लगेगा। मैं अच्छा होता जा रहा हूं, अर्थात् शक्ति आती जा रही है। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बंबअी - ४

---

१. डॉ० चन्दूलाल देसाअी।

२. पूज्य बापू नासिक जेलमें थे तबका जिक्र है।

१२३

वर्धा,
२२-१०-'३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिला। तुम तीनों[१] की राह बुधवारको देखूंगा। बाबा आयेगा न? तू अच्छी होती जा रही होगी। स्वामी आज पहुंचे हैं। शेष सारी बातचीत बुधवारको होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० श्री डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बंबअी - ४

१२४

वर्धा,
४-११-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाअी काफी जूझ रहे हैं।[२] जहां गंदगी अथवा कृत्रिमता पाअी जाय वहां भले ही लगातार जूझते रहें। तेरी देखभाल अच्छी तरह हो रही होगी। मुझे नियमित लिखती ही रहना। बाबा यहां आ गया यह तो बहुत अच्छा हुआ। बा तेरे जानेके बाद (जेल जानेके लिअे) निकलेगी। अुसके लिअे तैयारी तो कर रखनेकी जरूरत है ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मृदुलाबहन, डाह्याभाअीका ६ बरसका लड़का और मैं।

२. स्व० विठ्ठलभाअीका शव जहाजमें आ रहा था। अुन दिनों अिस बारेमें बंबअीमें बड़ी खटपट और चर्चा हो रही थी कि अुसका अग्नि-संस्कार कहां और किस ढंगसे किया जाय।

चि० मणि,

डाह्याभाओीका क्या हाल है यह मैं नहीं जानती। अुन्हें मेरे आशीर्वाद और वावाको भी। तू जब वल्लभभाओीको पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिख देना। मेरे बारेमें बापूजीने लिख दिया है अिसलिअे मैं नहीं लिख रही हूं। यहां सब मजेमें हैं। वहांके (समाचार) लिखना। यहां बापूजीसे मिलने बहुत लोग आते हैं। आज शंकरलाल[1] आये हैं।

बाके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० श्री डाह्याभाओी वल्लभभाओी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बअी

१२५

वर्धा,
५-११-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मैले वातावरणको डाह्याभाओी काफी शुद्ध कर रहे हैं। मेरा वहां आना नहीं होगा। मुझे ब्यौरेवार लिखती रहना। बा कदाचित् यहांसे १३ तारीखको चलेगी। मुझे नागपुरका काम पूरा करके[2] यहां लौट आना है। अितने समय यहां रह जानेका वह लोभ रखती है। अहमदाबादमें रणछोड़भाओी[3]के यहां रहेगी अैसा मानता हूं, अथवा लाल बंगला तो है ही। यह तो मुझे देखना होगा।

---

१. श्री शंकरलाल बैंकर।

२. अुस समय मध्यप्रान्तमें पू० बापूजी हरिजन-यात्रा करनेवाले थे। अुसीका अुल्लेख है।

३. अहमदाबादके श्री रणछोड़भाओी सेठ।

तू कुछ कहना चाहती है? पैरका अिलाज जितना हो सके अुतना तो करना ही। विना सोचे-समझे अुतावली न करना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,

ठि० श्री डाह्याभाअी पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट,

वम्वअी – ४

१२६

नागपुर,
९–११–'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सव साफ लिखा, यह समझदारी की है। अैसा ही करती रहना। तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्याभाअीको गलतफहमी हुअी और गुस्सा आया, यह आश्चर्यकी वात है। मगर अुसका खयाल न करना। अुन्हें शायद सारी वात मालूम भी न हो। अुन्हें दुःख हो, अिसे समझ भी सकता हूं। तू ही जितना समाधान हो सके अुतना करना। तू चाहे तो मैं अुन्हें लिखूं और अुनका दुःख मिटाअूं। मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा। यह पत्र भी तू अुन्हें पढ़ाना चाहे तो पढ़ा देना।

वा मंगलवारको वर्धा छोड़ेगी। थोड़े समय अर्थात् कुछ घंटे अकोला रहेगी। फिर अुधर आयेगी। वा अिस समय कुछ दुविधामें है। चिन्तित भी है, फिर भी (जेल) जानेका निश्चय अुसने अपने आप ही प्रगट किया है। तू अुसे अच्छी तरह दृढ़ करना।

तू अच्छी तरह खा-पीकर शरीरको यथासंभव सुधार लेना। मुझे नियमित लिखती रहना। विजलीका अिलाज आवश्यक हो अुतना लेना ही। अहमदावादमें भी लिया जा सकता है। दांतोंका क्या किया?

शनिवारको जवाहरलाल वगैरा वर्धा आयेंगे।

मृदु अिलाहाबादमें क्या कर आओी? सन्तोष ले कर आओी? अुसे लिखनेको कहना। दांतोंका अुसने क्या किया? सरलादेवी (अुसकी माता) के और समाचार हों तो लिखना।

नागपुरमें बहुत अच्छी सभा हुअी थी। आरंभ तो अच्छा हो गया। वहांकी श्मशान-क्रिया[1] के समाचार लिखना।

वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२७

चांदा,
१४–११–'३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला। तूने लिखा सो अच्छा किया। मेरे सामने तू परदा रखेगी तो तेरा दुर्भाग्य ही होगा। अवश्य ही मनुष्यके मरते समय हम अुसके दोषोंको याद न करें। हम अुसके गुणोंका ही स्मरण करें। मेरे अुपस्थित न रहनेका अुनके व्यवहारके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। अुनके गुण मैं नहीं पहचान सका सो बात नहीं। मैं वहां अिसलिअे नहीं आ सका कि मैं कहीं किसी दूसरे कार्यक्रममें शामिल नहीं हो सकता था। आजकल या तो मैं यरवडामें शोभा देता हूं या हरिजन-कार्यमें। हरिजन-कार्यके खातिर ही मैं बाहर हूं, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिअे नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें भी यही चीज है। दूसरे काममें मैं पड़ ही नहीं सकता। मालूम

१. श्री विट्ठलभाअीकी श्मशान-यात्रा और अग्नि-संस्कार।

तू कुछ कहना चाहती है? पैरका अिलाज जितना हो सके अुतना तो करना ही। विना सोचे-समझे अुतावली न करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२६

नागपुर,
९–११–'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सब साफ लिखा, यह समझदारी की है। अैसा ही करती रहना। तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्याभाअीको गलतफहमी हुअी और गुस्सा आया, यह आश्चर्यकी बात है। मगर अुसका खयाल न करना। अुन्हें शायद सारी बात मालूम भी न हो। अुन्हें दुःख हो, अिसे समझ भी सकता हूं। तू ही जितना समाधान हो सके अुतना करना। तू चाहे तो मैं अुन्हें लिखूं और अुनका दुःख मिटाअूं। मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा। यह पत्र भी तू अुन्हें पढ़ाना चाहे तो पढ़ा देना।

बा मंगलवारको वर्धा छोड़ेगी। थोड़े समय अर्थात् कुछ घंटे अकोला रहेगी। फिर अुधर आयेगी। बा अिस समय कुछ दुविधामें है। चिन्तित भी है, फिर भी (जेल) जानेका निश्चय अुसने अपने आप ही प्रगट किया है। तू अुसे अच्छी तरह दृढ़ करना।

तू अच्छी तरह खा-पीकर शरीरको यथासंभव सुधार लेना। मुझे नियमित लिखती रहना। बिजलीका अिलाज आवश्यक हो अुतना लेना ही। अहमदाबादमें भी लिया जा सकता है। दांतोंका क्या किया?

शनिवारको जवाहरलाल वगैरा वर्धा आयेंगे।

मृदु अिलाहाबादमें क्या कर आओी? सन्तोष ले कर आओी? अुसे लिखनेको कहना। दांतोंका अुसने क्या किया? सरलादेवी (अुनकी माता) के और समाचार हों तो लिखना।

नागपुरमें बहुत अच्छी सभा हुअी थी। आरंभ तो अच्छा हो गया। वहांकी श्मशान-क्रिया[1] के समाचार लिखना।

वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० डाह्याभाओी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बओी – ४

१२७

चांदा,
१४–११–'३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला। तूने लिखा सो अच्छा किया। मेरे सामने तू परदा रखेगी तो तेरा दुर्भाग्य ही होगा। अवश्य ही मनुष्यके मरते समय हम अुसके दोषोंको याद न करें। हम अुसके गुणोंका ही स्मरण करें। मेरे अुपस्थित न रहनेका अुनके व्यवहारके साथ कोओी सम्बन्ध नहीं। अुनके गुण मैं नहीं पहचान सका सो बात नहीं। मैं वहां अिसलिअे नहीं आ सका कि मैं कहीं किसी दूसरे कार्यक्रममें शामिल नहीं हो सकता था। आजकल या तो मैं यरवडामें शोभा देता हूं या हरिजन-कार्यमें। हरिजन-कार्यके खातिर ही मैं बाहर हूं, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिअे नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें भी यही चीज है। दूसरे काममें मैं पड़ ही नहीं सकता। मालूम

१. श्री विट्ठलभाओीकी श्मशान-यात्रा और अग्नि-संस्कार।

होता है लोग भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे सरकारके अंकुश सहन न होते, मैं अपने ढंगसे कुछ कर न पाता। मैं तेरा या डाह्याभाअीका पथप्रदर्शन न कर सकता था। अिसलिअे मैं मन मारकर बैठा रहा। अिसके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी बातें भी हैं। यह भी तू जान ले। रसिक (गांधी) मृत्युशय्या पर था, वह चाहता भी रहा होगा कि मैं अुसके पास पहुंचूं। परन्तु मैं दिल्ली नहीं गया, बा गअी। रसिक मर गया। मैंने आंसू तक नहीं बहाया। मैं खा रहा था तब तार आया। खाना खतम किया और अपने काममें लग गया! मेरे जीवनमें अैसी घटनाअें बहुत हुअी हैं। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार बना रखे हैं, वे दृढ़ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नहीं समझता। विवाह भयानक हो सकता है, मृत्यु कभी नहीं। अिससे तेरी शंकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।[१]

वहांका वर्णन तूने बढ़िया किया है। बड़ा दुःखद है। लोगोंका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नहीं है, परन्तु जो चीज लोगोंको चाहिये अुसे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं अुसीके लिअे वह प्रेम है। अिसलिअे यह बड़ी निर्मल वस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है, दुनियाकी आंखें खोलनेवाली है। विट्ठलभाअी स्वतंत्रताके पुजारी थे, अिस बारेमें कोअी शंका कर ही नहीं सकता।

अब बाके बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अुस पत्रमें अधिक समझाता। बाका दिल कमजोर हो गया है। वह मंदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जानेका धर्म समझती है, अिसलिअे अुसे छोड़ नहीं सकती; मगर मैं बाहर हूं अिसलिअे अुसे अन्दर जाना अच्छा नहीं लगता। मैंने कोअी आग्रह नहीं किया। अुसकी मरजी पर छोड़ दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू अुसे धर्म-पालनमें दृढ़ बनाना और समझाना। तुझ पर अुसे

---

१. श्री विट्ठलभाअीकी श्मशान-यात्रामें भाग लेने पू० बापूजी नहीं गये। अुसीके कारण अिस पत्रमें समझाये गये हैं।

आस्था और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूंगा तो वह हुक्मके रूपमें माना जायगा और वा दब जायगी। अिसलिअे कुछ नहीं कहता। नहीं कहता, अिसका अर्थ भी वा तो अेक ही करती हैं कि अुसे जेल जाना ही चाहिये।

तेरे दांतोंकी और पैरकी बात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाअीको लिख रहा हूं।

पत्र वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
रामनिवास,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बअी–४

१२८

(चिखलदा)
१९–११–'३३

चि० मणि,

तू अपने और कुटुम्बियोंके विचार मेरे सामने अुंड़ेल रही है, यह बड़ी समझदारीकी बात है। डाह्याभाअी या गोरधनभाअीके मनमें मेरे बारेमें जरा भी गलतफहमी हो, यह मुझे असह्य प्रतीत होता है। तू बम्बअीमें होगी तब तो गोरधनभाअीके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। अुस परसे तुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। अखबारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखबारवाले मुझे न समझें या जान-बूझकर गलतफहमी फैलायें, तो अुसका जवाब देनेकी मुझे हमेशा जरूरत दिखाअी नहीं देती। परन्तु तुम भाअी-बहन चाहो तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति बिलकुल साफ है। डाह्याभाअी जो कहता है अुसमें काफी सत्य है। दास वगैराके चरित्रमें दोष जरूर बताये जा सकते हैं। दोषरहित

कौन है? परन्तु मेरे न आनेके साथ विट्ठलभाअीके दोषोंका कोअी संबंध नहीं। जो आदर दूसरे नेताओंने पाया है वह पाने लायक विट्ठलभाअी भी जरूर थे। अुनका त्याग, अुनकी लगन, अुनकी कुशलता, कांग्रेसके प्रति अुनकी वफ़ादारी, ये सब गुण दूसरोंसे अुनमें कम हरगिज नहीं थे।

तेरी अपनी अुदारता मुझे चकित कर रही है। यह तेरी ही विशेषता नहीं है, अिसे समझ लेना। मैंने यह चीज असंख्य स्त्रियोंमें देखी है। स्त्रियां अपने प्रति हुअे दुर्व्यवहारको भूल जानेके लिअे हमेशा तैयार रहती हैं। अिस गुणसे स्त्रीजाति सुशोभित हुअी है। परन्तु स्त्रीके अिस गुणका पुरुष जातिने खूब दुरुपयोग किया है। परन्तु यह तो विषयान्तर हो गया। मेरी दृष्टिसे अब तू सुशोभित हो रही है, अिसका मैं गर्व कर सकता हूं न?

वर्धा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
रामनिवास,
सैण्डहर्स्ट रोड,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी–४

१२९

कड़खा,
२–१–'३४
सुबहके ४ बजे
प्रार्थनासे पहले

चि० मणि,

तेरे समाचार अब सीधे मिलेंगे या नहीं, यह प्रश्न है। सरदारकी ओरसे मिलते हैं। अितनेसे सन्तोष नहीं हो सकता। डाह्याभाअीसे पुछवाता हूं। तू लिख सके तो लिखना। शरीर और मन अच्छा

रखना। मेरा तो ठीक चल रहा है। बाकी हर हफ्ते नियमित और लम्बे पत्र लिखना हूं। आज तो अितना ही।

पता वर्धाका लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१३०

(कानपुर)
२३-७-'३४

चि० मणि,

तू ठीक नियमसे लिखती रहती है। अिसी तरह लिखती रहना। मेरे पत्रकी आशा न रखना। महादेव हैं अिसलिअे मैं कुछ पत्र लिखनेसे बच जाता हूं। अब सरदारको भी लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। तेरी तरह मैं भी मानता हूं कि तेरा वहां रहना ही तेरे लिअे सुन्दर औषधि है।

शायद अब तो जल्दी ही मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : साथका पत्र तेरे ही नाम भेज रहा हूं, अुसे बापूको तुरन्त पहुंचा देना। तूने भास्करवाली बात कहकर बापूको काफी भड़का दिया। अैसे तो मैंने कअी लोगोंके साथ बातें की थीं। परन्तु 'मैं अकेला कहां हूं? मेरे साथ कोअी नहीं तो बेलाबहन और दो लड़कियां तो हैं ही। अिसलिअे हमारा सवाल बिलकुल आसान नहीं है। वर्धामें सारा निश्चय होगा, अैसी आशा रखें।

१३१

(कानपुर)
२५–८–'३४

चि० मणि,

तेरी दो पंक्तियां पढ़ीं। तू आंजकल नहीं लिखती, यह बिलकुल ठीक है। स्वास्थ्यकी लापरवाही न करके अुसे अच्छी तरह सुधार लेना। लिखने योग्य हो तब तो अच्छी तरह लिखना ही। अब मुझ पर बहुत दया करनेकी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१३२

वर्धा,
३१–१०–'३५

चि० मणि,

तू बीमार क्यों पड़ती रहती है? पितृभक्तिका यह अर्थ तो नहीं करती कि पिता बीमार पड़े तो तू भी बीमार हो जाय? माता-पिता अपंग थे तब श्रवणने अपना शरीर वज्र जैसा बनाया और अपने कंधे पर कांवर रखकर दोनोंको यात्रा कराअी थी। किंग लियरकी लड़कीने खुद तंदुरुस्त रहकर पिताकी सेवा की थी। तू क्यों बुढ़िया जैसी बन कर बैठी है? अपच न हो तो बुखार और बुखार न हो तो सरदी; कुछ न कुछ तो रहता ही है। अिसका कारण ढूंढ़ कर वज्र जैसी काया क्यों नहीं बना डालती?

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
८९, वॉर्डन रोड,
बम्बअी

१३३

वर्धा,
१२-११-'३५

चि० मणि,

अिसके पीछेका भाग बापूको पढ़ा देना। अैसी खबर है कि ज़वाहरलालके व्यवहारसे सब बहुत खुश हो गये थे।

बापू मजेमें होंगे। वे डॉक्टरोंको हंसाते होंगे[1]। तू अपने स्वास्थ्यके विषयमें गाफिल न रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
८९, वॉर्डन रोड,
बम्बअी

१३४

(कानपुर)
२६-८-'३७

चि० मणि,

केवलराम[2]का पत्र तो तूने जो वापस दिये अुन्हींमें था। मुझे पता नहीं कि तारका पहला भाग नहीं था। अब दोनों अिसके साथ भेजता हूं। आज मीराबहन दिल्लीसे आनेवाली गाड़ीमें ६-८ पर आ रही है। राजकुमारी कल सुबह बम्बअीसे आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके पास,
बम्बअी

---

१. अुस समय पू० बापूकी नाकका ऑपरेशन कराया गया था।

२. स्व० केवलराम। अेक आश्रमवासी।

१३५

डेरा अिस्माअीलखां,
२८-१०-'३८

चि० मणि,

कअी वर्षोंमें तुझे मेरे नाम पत्र लिखना पड़ा है। काफी खबरोंसे भरा है। अिसी तरह लिखती रहना। नासिककी सिपाही-शाला[1] सम्बन्धी खबरको सच मानकर मैंने टिप्पणी लिखी है। तू खेर या मुन्शीसे मिले तो बात भी करना।

वहांका अधिकारी वर्ग यदि मद्य-निषेधके काममें दिलसे सहयोग न दे, तो मंत्रियोंको गवर्नरसे दृढ़ताके साथ कहना चाहिये। अुनका दिल अिस काममें नहीं, यह विश्वास होना चाहिये।

जमीनोंके बावत तो वल्लभभाअीका पत्र आया, अुसके पहले ही मैं लिख चुका था। अिस सम्बन्धमें विधान-सभामें हुअी चर्चा[2] मुझे भेजना।

अश्लील साहित्यके बारेमें कदम अुठाये ही नहीं जा सकते, यह मैंने नहीं कहा। अपनी राय जरूर दी। मुझे यह अन्देशा जरूर है कि लोगोंको गंदगी अच्छी लगती है, अिसलिअे वह अेकाअेक दूर नहीं होगी। विद्वानोंको ही घिन आये तब वह बन्द हो। मैं तो मानता हूं कि अश्लील लेख वगैरा कानूनसे बन्द हो सकते हों तो अुन्हें अुस तरह बन्द करनेका प्रयत्न होना चाहिये। परन्तु अितना याद रख कि विद्यार्थीको अैसी चीजें पढ़नेको मजबूर करनेमें और अखबारोंमें गंदे लेख छापनेमें बड़ा फर्क है।

---

१. नासिक जेलमें पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (थानेदारोंको तालीम देनेवाली पाठशाला) है। वहां तालीम पानेवाले अुम्मीदवारोंको शामके भोजनमें शराब दी जाती है, अैसा मैंने सुना था और अुसके बारेमें पू० बापूजीको खबर दी थी।

२. रास और बारडोलीकी जो जमीनें सरकारने जब्त कर ली थीं और दूसरोंको बेच दी थीं, अुन्हें खरीदारोंसे वापस लेकर असल मालिकोंको सौंपनेके बारेमें विधान-सभामें विधेयक पेश हुआ था, अुस पर हुअी चर्चा।

राजकोटका[1] मामला अद्भुत है। जो हो रहा है वह टिका रहेगा तो लोग मुंहमांगा ले सकेंगे, अिसमें सन्देह नहीं। त्रावणकोर[2] के बारेमें बापूने ठीक किया है। रामचन्द्रन्‌को बुलाकर अच्छा किया। यद्यपि बापूका पत्र आया अुससे पहले मैं अपना बयान[3] तो प्रकाशित कर चुका था। मेरा खयाल है कि मुझे बयान देना ही चाहिये था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी बात नहीं रहती।

नाकमें से पानी गलेमें टपकता रहे, यह बिल्कुल अच्छा नहीं कहा जा सकता।[4] अिसे मिटाना ही चाहिये।

बड़ोदेकी बात समझा। भादरणमें[5] जो कुछ हो वह बताना।

मैं १५ तारीखके आसपास वर्धा पहुंच जानेकी आशा रखता हूं। यहां[6]का काम ९ तारीखको पूरा होगा।

---

१. राजकोट सत्याग्रहका प्रारम्भ अिस समय हुआ था।

२. त्रावणकोर राज्यमें राज्यके विरुद्ध सत्याग्रह हो रहा था। अुस समयके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अैयरने पू० बापूको त्रावणकोर बुलाया था। अुन्होंने जवाब दिया था कि यदि मुझे जेलमें बन्द सत्याग्रहियोंसे मिलने दिया जाय तो मेरा वहां आना सार्थक होगा।

३. अिस बयानमें अुन्होंने त्रावणकोरके विद्यार्थियोंके अुपद्रवका अुल्लेख करके अुन्हें मन, वचन और कर्मसे अहिंसाके पालनका आदेश दिया था और लड़ाअी चलानेवालोंसे यह विचार करनेको कहा था यदि वे हिंसाकी शक्तियोंको काबूमें न रख सकें तो लड़ाअीके हितमें ही सविनय कानून-भंग स्थगित करनेमें समझदारी है या नहीं। सम्पूर्ण वक्तव्यके लिअे देखिये 'हरिजनसेवक', ता० २२–१०–'३८, पृ० २८७।

४. पूज्य बापूको तेज जुकाम होता था तब नाकका पानी गलेके भीतर अुतर जाया करता था।

५. भादरणमें बड़ोदा राज्य प्रजा-मंडलके १९३८ के अधिवेशनके पू० बापू अध्यक्ष थे।

६. अुस समय पू० बापूजी सरहद प्रान्तके प्रवासमें थे। अुसीका अुल्लेख है।

सुभाषबाबूके बारेमें जो हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। अिसीलिअे मैंने कार्य-समितिमें थोड़ीसी चर्चा तो की थी। परन्तु बापूकी राय यह रही कि जवाहरलालके आने तक राह देखें। अिसलिअे मैं चुप रहा। अिस बार अध्यक्षके चुनावमें कठिनाअी तो होगी ही। मैंने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है अुस पर बापू विचार करें। मेरी राय है कि जैसा हो रहा है वैसा होने देनेमें हानि है।

अब दोनों पत्रोंके अुत्तर आ गये। बापूको फुरसतमें पढ़ा देना।

मेरा स्वास्थ्य सचमुच ही अुत्तम रहता है। बापूको अिस प्रान्तमें आना चाहिये। मौलानाको साथ लेकर।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी

१३६

सेगांव-वर्धा,
२८-११-'३८

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। अितने कामोंमें तू लिख सकेगी, यह आशा नहीं रखी थी। दूर बैठा बैठा तेरे पराक्रम[1] देख रहा हूं। तू पुण्यशाली है। तेरी हिम्मतके बारेमें मेरे मनमें कभी शंका नहीं थी। तू जेलमें यथासंभव न जाना। यह काम राजकोटवालोंका है।

तेरा शरीर ठीक रहता होगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
तारघरके पास,
राजकोट

---

१. राजकोट सत्याग्रहके समय पूज्य बापूने मुझे राजकोट भेजा था। यह पत्र वहांके पते पर लिखा गया है। बादमें मुझे वहां गिरफ्तार कर लिया गया था।

१३७

सेगांव-वर्धा,
५–१२–'३८

चि० मणि,

तेरा वर्णन बढ़िया है। मेरे कामका क्या पूछना? तू मेरा कहना मानकर शरीरमें तेल मलवाना[1] अथवा स्वयं मलना। जो सिपाही अपना शरीर स्वस्थ नहीं रखता वह सजाका पात्र होता है। अैसा ही होना चाहिये।

लोग अहिंसाका पाठ समझ गये हों और मारपीट वगैरा सहन कर लें, तो अुनकी हार होती ही नहीं। महादेव[2] यहीं हैं। मजेमें हैं। जानबूझ कर कम लिखते हैं। अिस बार 'हरिजन' में बहुत लिखने दिया है। अैसा बार-बार नहीं होने दूंगा। कुछ भी जिम्मेदारी न होना अच्छा है। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो ठीक ही है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
तारघरके पास,
राजकोट

१३८

सेगांव-वर्धा,
२२–१२–'३८

चि० मणि,

तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है यह बहुत अच्छा है। खुराक वगैराका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह बिताती है?

---

१. सूखी हवा और ठंडमें बच्चोंके गाल फट जाते हैं और खून निकलने लगता है। राजकोटकी सूखी हवा और ठंडमें मेरे सारे शरीरकी लगभग यही हालत हो गअी थी।

२. श्री महादेवभाअीको अुस समय रक्तचाप काफी रहता था।

महादेव कलकत्तेके पासकी गोशाला देखने ४ दिनके लिअे गये हैं। २४ ता० को आ जानेकी संभावना है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वाको वहां आनेकी अिजाजत[1] तो अभी नहीं मिली। कन्या गुरुकुलके लिअे देहरादून जा रही हैं। मैं पहली जनवरीको वारडोली जा रहा हूं। तुझे और मृदुलाको

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
स्टेट जेल,
राजकोट (काठियावाड़)

१३९

सेगांव-वर्धा,
१६–२–'३९

चि० मणि,

तेरा लम्वा पत्र और और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो जो कदम[2] अुठाये अुनसे मैं तो मुग्ध हो गया हूं। कहीं दोप निकालने जैसी वात नहीं। मैं देखता हूं कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गअी है। अिसलिअे विलकुल निश्चिन्त हूं।

---

१. पूज्य वापू अिजाजत देते तभी वाहरका कोअी आदमी लड़ाअीके लिअे राजकोट जा सकता था।

२. पूज्य वाको और मुझे पकड़कर स्टेशनसे सीधे सणोसराके डाक-वंगलेमें ले जाकर रखा गया था। वह मकान सूना पड़ा था और वहां कोअी सुविधा नहीं थी। वहां पहुंचनेके वाद पूज्य वाकी तवीयत विगड़ गअी। दूसरे दिन मुझे राजकोटके जेलमें हटा दिया गया। मैंने जव तक पूज्य वाके साथ मुझे या राजनीतिक कैदियोंमें से पूज्य वाकी देखभाल कर सकनेवाली किसी वहनको न रखा जाय तव तक खाना लेनेसे अिनकार कर दिया। अिस वीच पूज्य वाको सणोसरासे त्रम्वा हटा दिया गया था। तीसरे दिन मुझे भी त्रम्वा ले गये। वहां पहुंचनेके वाद पूज्य वाने मुझे खाना खिलाया। मृदुलाको पकड़कर त्रम्वा लाये तो हम तीनों साथ हो गये।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो तीन आये थे। यहांसे रोज पत्र गये हैं। पहले तू बताती थी अुस पते पर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते, तब मुझे तार दिया गया कि पत्र फर्स्ट मेम्बरके मारफत भेजे जायं। अब मैं वैसा ही करता हूं।

तुम्हारी तरफसे तो रोज मिलते ही हैं। अिसलिअे शान्ति है।

मृदुको अलग नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहांका भार कम है जो वह कांग्रेसका अुठायेगी?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
स्टेट प्रिजनर,
ठि० फर्स्ट मेम्बर ऑफ दि कौन्सिल,
राजकोट (काठियावाड़)

१४०

सेगांव,
१८-२-'३९

चि० मणि और मृदुला,

तुम दोनों वहां हो यह अीश्वरका अनुग्रह है। तुम तीनों सबके साथ हो यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु अीश्वर जैसे रखे वैसे रहना है।

सुभाषबाबू वगैराके बारेमें तुम्हें कुछ विचार करनेका नहीं है। अिसके लिअे तो तुम जेलमें ही हो। अीश्वर मुझे जैसी सूझ देगा वैसा करता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
कैदी,
फर्स्ट मेम्बरके मारफत,
राजकोट

१४१

राजकोट,
५–३–'३९

चि० मणि,

तू क्यों परेशान होती है? ये अनुभव क्या तेरे लिअे नये हैं? अिस मामलेमें तो तू मेरी आशासे आगे बढ़ गअी है। मैं अपने आप आया हूं। धर्म समझकर आया हूं। अीश्वरकी प्रेरणासे आया हूं। जरा भी दुःखी न होना। आजकल किसीको पत्र नहीं लिखता। अेक बाको लिखा था, यह तुझे लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
कैदी,
फर्स्ट मेम्बरके मारफत,
राजकोट

१४२

सेवाग्राम-वर्धा,
४–५–'४०

चि० मणि,

तेरे भेजे हुअे आंकड़े अच्छे हैं। मुझे पत्र लिखनेकी अपेक्षा तू काते तो अधिक अच्छा।

बापूसे पूछना कि वे अेक हजार मैं अुन्हें भेजूं या सीधे पृथ्वी-सिंहको। बापूकी तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
मारफत सरदार पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४३

सेवाग्राम-वर्धा,
१३-६-'४०

चि० मणि,

यहां आओ तब बलवंतसिंह[1] के लिअे अेक अलार्मवाली घड़ी लेते आना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४४

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.
७-५-'४१

चि० मणि,

नंदूबहन (कानूगा) तेरी खूब शिकायत कर रही थीं। कहती थीं, हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नहीं। मैं अिन्हें हारनेके लक्षण मानता हूं। सत्याग्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। अिसलिअे मेरी खास सिफारिश है कि तू शरीरको सुधार।

सब बहनोंको आशीर्वाद। वहांके कामके समाचार मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अुत्तम रहता है। बा दिल्लीमें है। बहुत दुबली हो गअी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
यरवडा सेण्ट्रल प्रिजन,
यरवडा

---

१. वहांके अेक आश्रमवासी।

१४५

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.,
१९–५–'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र आज मिला। आशा तो रखता हूं कि यह तुझे जेलमें ही मिलेगा। अेक पत्र मैंने तेरे लिअे डाह्याभाअीको भेजा है। यह अच्छी खबर है कि तूने अपने स्वास्थ्यको संभाला है।

छूटने पर तुझे थोड़े समय बम्बअी रहना हो तो वहां रहकर मेरे पास आ ही जाना। अहमदाबाद[1] के बारेमें मृदुला और गुलजारीलाल[2] आये हैं। यहीं हैं। बातें हो रही हैं। बापूको या तुझे जेलमें बैठकर अैसी बातका विचार ही नहीं करना चाहिये। अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। जमनालालजीके बारेमें चिन्ताका बिलकुल कारण नहीं। सब ठीक हो रहा है। मनु त्रिवेदी[3] मजेमें है। बा थोड़े दिनोंमें दिल्लीसे आ जायगी। लीलावती (आसर) अुनके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
यरवडा सेंट्रल प्रिजन,
यरवडा, पूना

---

१. अहमदावादके हिन्दू-मुस्लिम दंगेका अुल्लेख है।

२. श्री गुलजारीलाल नंदा। अहमदाबाद मजदूर-संघके मंत्री। कुछ समय बम्बअी राज्यके श्रममंत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके राष्ट्रीय योजना मंत्री और राष्ट्रीय योजना-आयोगके अुपाध्यक्ष।

३. पूनाके सेवाभावी सज्जन स्व० प्रो० जे० पी० त्रिवेदीके पुत्र।

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.,
२०-५-'४१

चि० मणि,

तुझे अेक पत्र लिखा है। जेलमें मिलना चाहिये। यह तेरे पत्रके अुत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मानूं कि यदि मैं अहमदाबादमें होता तो जो दंगा हुआ वह न होता? आज किसीके लिअे अैसा कहना मुश्किल है। मैं औश्वरके चलाये चलता हूं। अुसने मुझे यहां डाल दिया है। मैं जानता हूं कि गुजरातमें अैसे बहुतसे गांव हैं जहां मैं बस सकता था।

मनुभाअी[1] बड़ी बहादुरी दिखला रहे हैं। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

बा तो आजकल नअी दिल्लीमें (निमोनियासे) रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोअी कारण नहीं। कल मैंने लीलावतीको वहां भेजा है। जानकीबहन[2] की तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नंदूबहनने किस आधार पर खराब बताअी? वे पहले कभी नहीं घूमती थीं अुतना आजकल घूमती हैं। अच्छी तरह खाती हैं।

कनू[3] की सगाअीकी बात लटक रही है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लड़की भी अपने घर गअी है।

मीराबहन चोरवाड़में गरमी बिता रही हैं। दुर्गाबहन[4] की तबीयत अच्छी होती जा रही है।

---

१. प्रो० त्रिवेदीके पुत्र। त्रिवेदीके देहान्तका अुल्लेख है।
२. स्व० जमनालालजी बजाजकी पत्नी।
३. श्री नारणदास गांधीका पुत्र।
४. स्व० महादेवभाअी देसाअीकी पत्नी।

तू वहांका काम ठीक करके दो तीन दिन मेरे साथ रह जाय, यह मैं जरूर चाहता हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाअी,

मणिबहन आये तब यह पत्र अुसे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४७

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.,
११-८-'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाअी[1] ने तो जवाब दिया ही। भानुमती[2] का अैसा क्यों हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कह सकते? बेबीका जीना कठिन है। जिये तो भी शायद दुर्बलता रह ही जायगी।

बापूको मेरे पत्र पहुंचे क्या? जल्दी पहुंचें अिसलिअे दोहरी सावधानी तो रखी थी।

तेरे परेशान होनेका कुछ भी कारण नहीं। हर हालतमें जेल जानेका धर्म थोड़े ही है। बाहर[3] बैठकर तू बापूका ही काम कर

---

१. आश्रमवासी स्व० किशोरलाल घ० मशरूवाला।

२. मेरी भाभी।

३. गुजरातमें बाढ़-संकट आया था। अुसके लिअे चंदा करनेमें मैं महादेवभाअीके साथ लगी हुअी थी।

रही है। अिस समय जेलमें जायगी तो मनको झूठा संतोष देगी। जानेका समय आने पर तुझे अेक क्षणके लिअे भी नहीं रोकूंगा। अभी तो जो गुजराती काम करें अुन्हें काम देते रहना है।

सूखे अच्छे अंजीर मुझे पांच पौंड भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गये होंगे। अब तक कितना चंदा हुआ? यहां ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल और
श्री महादेव देसाअी,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४८

सेवाग्राम,
३१-८-'४१

चि० मणि,

तुझे तो मैं जान-बूझकर नहीं लिख रहा था। अभी तुझे जेलमें नहीं भेजना है। समय आने पर तो भेजूंगा ही। तू बाहर रहकर भी काम तो कर ही रही है। तुझे भेजनेका समय जरूर आयेगा। अभी तो निश्चिन्त होकर सेवा करना और अपना स्वास्थ्य अच्छा कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४९

(सेवाग्राम)
३–१–'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने सारा व्यौरा[1] भेजा सो ठीक किया। मैंने कल जसावाला[2] का पत्र भेजा है। अुसके अनुसार तुरंत अिलाज करनेका मेरा तो आग्रह है। तबीयत बहुत गिर जानेके बाद अिलाज बेकार भी जा सकता है। डॉ० नाथूभाअी[3] से चर्चा कर लेनेकी मुझे तो जरूरत मालूम होती है।

मुझे बराबर समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५०

(महाबलेश्वर)
२७–२–'४५

चि० मणि,

चि० डाह्याभाअी लिखते हैं कि तू कल छूट रही है। वे यह भी कहते हैं कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आनेकी सुविधा हो तो तू यहां आ ही जाना। न आ सके तो पूरा पत्र लिखना। तुझसे मिलनेको तो मैं अुत्सुक हूं ही। बहुत समय हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. व्यक्तिगत सविनय भंगके समय पू० बापूको स्वास्थ्यके कारण जेलसे छोड़ दिया गया था। अुनके स्वास्थ्यके व्यौरेवार समाचार मैंने पू० बापूजीको लिखे थे।

२. बम्बअीके अेक प्राकृतिक चिकित्सक।

३. डॉ० नाथूभाअी पटेल, अेम० डी०, बम्बअीके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

१५१

महाबलेश्वर,
२२–४–'४५

चि० मणि,

तूने पत्र ठीक लिखा। मैं जानता हूं कि दूध वगैराकी सुविधा बापू प्राप्त कर लेंगे।[1] अिसलिअे चिन्ताकी बात ही नहीं।

तेरा स्वास्थ्य बिलकुल सुधर जाना चाहिये। तू अितने अधिक अेकाशन करती है, अिसके औचित्यके बारेमें मुझे शंका है। तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की, परन्तु मनमें यह बात बनी रही है। अिसे लिखनेका विशेष हेतु तो यह है कि अहमदाबादका काम निबटाकर तुझे यहां आ जाना है, यह याद रखना।

वहां सबको आशीर्वाद। डॉ० (कानूगा) अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
मारफत डॉ० कानूगा,
अेलिसब्रिज,
अहमदाबाद

१५२

महाबलेश्वर,
२७–४–'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। भूलसे रख लिया था, परन्तु निजी देखकर तुरन्त ही मेरे पास पहुंचा दिया।

परन्तु तूने जो लिखा अुसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरे सम्मानके लिअे और तुझे निर्भय करनेके लिअे ही फाड़ा है और अैसा ही तेरे पास भेज दूंगा।

---

१. पू० बापू अुस समय अहमदनगरके किलेमें नजरबन्द थे। अुनके स्वास्थ्यके समाचार मेरे नामके पत्रमें आये थे। वे मैंने पू० बापूजीको लिखे थे।

अुपवास तो शायद हममें सबसे अधिक मैंने किये होंगे। दक्षिण अफ्रीकामें तो चाहे जिस बहाने कर डालता था। अेक वर्षसे अधिक समय तक अेकाशन भी किया। मेरी राय है कि अिसकी अपेक्षा अल्पाहार बहुत बड़ी चीज है। अुपवासका स्थान है, मगर मृत्युके निमित्त हरगिज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं? मैंने यह भी किया है, परन्तु विचार करके छोड़ दिया। अिससे तू अपने अेकाशनकी बात समझ ले। शरीर अीश्वरका घर है। अुसे ज्योंका त्यों ही रखना चाहिये।

तेरा सुघड़पन क्या मैं नहीं जानता? मोतीलालजीने[1] तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साथियोंके प्रति अुदार रहना चाहिये। तू अैसा नहीं करती अिसलिअे तेरा पड़ोसी-धर्म भंग होता है। फिर तू अपना दोष मान लेती है। मानना या तो दोषको पकड़ रखनेके लिअे या दोषको निकालनेके लिअे होता है। क्या तू दोषको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी सुघड़ता दूसरोंको दे और अपनीकी रक्षा तो कर ही। मेरी तरह अपने लायक साफ कर लेना। जेलमें रहकर भी यह कला नहीं सीखी? महादेवके पाससे तूने क्या लिया? अुनकी अुदारता तूने देखी थी?

अितना तो तेरे लिअे बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहां आ जा। मेरे लिअे मत आना। आये तो धर्म समझकर और मनको अुदार बनाकर या बनानेके लिअे आना। अगर तुझे बुरा लगा हो तो यहां आकर क्या लेगी? अपने दोषोंको पहाड़के समान मानें; और दूसरोंके दोष पहाड़ जैसे हों तो भी अुन्हें रजकणके समान मानें तब मेल बैठेगा।

कुछ भी खानगी न रखनेका नियम बना ले तो अिसकी नकल भेज देना। बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
मारफत डॉ० कानूगा,
अहमदाबाद

१. पंडित मोतीलाल नेहरू।

१५३

महाबलेश्वर,
३-५-'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

अुपवासके बारेमें तू लिखती है, अतः मैं सूचित करता हूं कि अुसे केवल शरीर-शुद्धिके लिअे ही कर। तब तुझे खुद ही अपना पता लग जायगा। और अुसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा तो मिल जायगा और तू वहम या आडम्बरसे बच जायगी। महादेव या बाके लिअे और कुछ नहीं तो अुपवास तो करें, यह विचार बिलकुल गलत है। वे जानते हों तो अुन्हें क्लेश ही हो। प्रियजन चल बसें तब अुनके लिअे अुनका प्रिय और कठिन काम हम करें। अिसलिअे महादेव जैसे मीठे बननेकी कोशिश करें। बाके समान आस्तिक बननेका प्रयत्न करें। ये दो अुदाहरण तो जबान पर आ गये, अिसलिअे दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते हैं। शरीर केवल अीश्वरके रहने या आत्माको पहचाननेका घर है यह जान लें, तो सब कुछ अपने आप ठिकाने आ जाय। अैसा हो जाय तो धर्मके नाम पर चल रहा ढोंग मिट जाय। तेरा जीवन सरल है अिसलिअे और बहुतसे प्रलोभनोंको तू पार कर सकी है अिसलिअे मैं अितना परिश्रम तेरे लिअे कर रहा हूं। तू सब तरहसे अूंची अुठ जाय तो मैं जानता हूं कि तू बहुत अधिक काम कर सकती है।

अिसी कारणसे तुझे यहां अथवा आश्रममें खींच लाना है। बापू स्वयं यही चाहते हैं, अिसलिअे तुझे खींचनेका मनमें अधिक अुत्साह होता है। अैसा हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहूंगा कि अेक घड़ी भी तू अुन्हें छोड़कर कहीं रहे। और तू मेरे आसपास होगी तो तुझमें सहनशीलता बढ़ेगी, क्योंकि यह स्थल अैसा है जहां अनेक स्वभावोंके अनुकूल बननेकी और अलिप्त रहनेकी जरूरत है। अर्थात्

हम गुणग्राही बनकर रहें। दूसरोंका अवलोकन करके हम अुनके गुणोंका अनुकरण करें, और अवगुणोंको सहन करें, क्योंकि अवगुणोंको दूर करनेका सबसे अच्छा अुपाय यही है। अिसलिअे जल्दी आना।

नंदूबहन, दीवान मास्टर,[1] कानूगा वगैराके समाचार तूने भेजे यह ठीक किया।

अब तो सवेरा हो गया और रोशनी बुझा रहा हूं, अिसलिअे बस।

वहां सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
मरीन लाअिन्स,
बम्बअी

१५४

महाबलेश्वर,
५–५–'४५

चि० मणि,

तूने अच्छा पत्र लिखा। जो खबर तूने दी वह और कोअी मुझे न देता। साथका पत्र कानजीभाअी[2] को दे आना। अब तो तू यहां आनेवाली है, अिसलिअे अधिक नहीं लिख रहा हूं। कल नरहरि (परीख), मणिलाल (गांधी), कमलनयन[3] और सत्यनारायण[4] आये थे।

---

१. स्व० जीवनलाल दीवान।

२. श्री कन्हैयालाल नानाभाअी देसाअी। गुजरात कांग्रेस समितिके १९४६ से १९५६ तक अध्यक्ष। १९४६ से संविधान-सभाके सदस्य। अुसके बाद १९५६ तक लोकसभाके सदस्य।

३. श्री जमनालाल बजाजके पुत्र।

४. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समितिके मंत्री।

आज मुन्शी आयेंगे। कमलनयन और मुन्शी तो जैसे आये वैसे चले जायंगे।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५५

(सेवाग्राम)
२५-७-'४५

चि० मणि,

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिये।

यह तो तुझे पुष्पा[1] के बारेमें लिख रहा हूं। वह बहुत दुःख पा रही है। अुसने मुझे मिलनेको लिखा है। परन्तु तू अुससे मिलने जायगी तो ठीक है। वह अपने घर तो होगी ही। पता है: नअी हनुमान गली, शरडाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा नं० १२, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मारफत।

तेरा स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. बम्बअीकी यह लड़की घरसे भागकर पू० बापूजीके पास चली गअी थी। अुन्होंने अुसे समझाकर घर वापस भेज दिया था। पर वह फिर आश्रममें लौट आअी। आजकल श्री भणसालीके पास आश्रममें रहती है।

१५६

पूना,
२७-११-'४५

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले। कानजीभाअीके नामका पत्र तेरे पास भेज रहा हूं। तू अपनी डाकके साथ भेज देना।

यरवडा पैक्टके बारेमें अेक सवालका विचार कराना। पैक्टमें दस वर्षकी बात है। परन्तु वह १९३५ के कानूनमें नहीं है। तो अुसका अमल कानूनसे कराया जा सकेगा या नहीं? पकवासा[1] विचार करें। कौंसलसे मिलना हो तो मिलें। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता न भी करे। राजनीतिक रूपमें लड़ा जा सकता है, अिस विषयमें दो मत नहीं हो सकते। यह जरूर सोचना है कि अिस समय यह लड़ाअी छेड़ी जाय या नहीं। परन्तु अिसकी चर्चा तुम्हारे यहां आने पर कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५७

[यह पत्र पू० बापूजीने मौनमें लिखा था।]

(वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
१९४५ के बाद)

नकल करनेका काम तो कनूको सौंपा है। मैंने तुझसे कहा था कि कनूसे लिखवाना। तेरी की हुअी नकल है, अिसलिअे अिसे पास करता हूं। और यही दूंगा। परन्तु अिसमें दोष है। हमेशा हाशिया जरूर छोड़ना चाहिये। रोज पत्र आते हैं। अुनका तू अवलोकन करती

१. श्री मंगलदास पकवासा बम्बअीके अेक सालीसिटर। बम्बअीकी कौंसिलके अध्यक्ष थे। आजकल मध्यप्रदेशके गवर्नर।

हो तो पता चलेगा कि तैयार किये हुअे पत्रोंमें हाशिया जरूर होता है। अब दूसरा मत लिखना। यह तो भविष्यके लिअे तुझे शिक्षा है। यह तो मैंने तुझे सिर्फ बता दिया।

१५८

सेवाग्राम,
१४–२–'४६

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छे समाचार दिये हैं।

'धारासभानो मोह'[१] (विधान-सभाओंका मोह) गुजरातीमें होने पर भी सबके लिअे है।

अखबारकी कतरन लौटा रहा हूं।

तेरे सुझावों पर जितना अमल हो सकेगा करूंगा।

तू अपना स्वास्थ्य संभालना। अब तो जल्दी ही मिलना है, अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१५९

१८–७–'४७

चि० मणि,

यह पत्र देखना। सरदारको पढ़ाना हो तो पढ़ा देना। समय न मिले तो यह बात ही मत करना। जो होना है वह हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अकबर[२] का पत्र लौटा देना या भेज देना।

---

१. देखिये, 'हरिजनसेवक', १०–२–'४६, पृ० ८।

२. श्री अकबरभाअी चावड़ा। सणालीमें रहनेवाले सेवाग्राम आश्रमनिवासी। आजकल लोकसभाके सदस्य।

१६०

३१–७–'४७
रेलमें ४–३० वजे

चि० मणि,

साथका पत्र[१] पढ़कर जो करना हो सो कर। तेरी अनन्य पितृभक्तिने तेरे हाथोंमें महान सेवा करनेका अवसर दिया है। अिसका जो अुपयोग करना हो करना।

खाकसारों[१] के वारेमें जो पत्र मैंने लिखा अुसमें कुछ तथ्य है क्या? अिन लोगोंने व्यौरेवार लिखा है।

साथका पत्र राजकुमारीको देना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
ठि० सरदार पटेल,
१ औरंगजेव रोड,
नअी दिल्ली

१६१

सोदपुर,
११–८–'४७

चि० मणि,

साथके पत्र पर तो डाह्याभाअीको हस्ताक्षर करने हैं, अैसा लगता है। तू देख लेना। मुझे तो अिस विभागका पता भी नहीं। शायद आश्रमके हस्ताक्षर चाहिये। तू देख लेना और फिर जो करना हो वह लिखना।

काश्मीरके वारेमें तो मैं सरदारको लिख चुका हूं। वह मिला होगा। लम्वा वयान जो जवाहरलालको भेजा है वह सरदारके लिअे भी है।

---

१. निर्वासित-सम्वंधी पत्र।

यहां तो समस्या अुलझी हुअी है। आशा तो है कि सुलझ जायगी। मैंने कल भाषणमें जो कहा अुससे पता चलेगा कि मुझे यहां क्यों रुकना पड़ा।

प्रफुल्ल वगैरा मिलते रहते हैं।

खाकसार लाहौरमें मिले थे। अुन्हें पत्र दिया था सो मिला होगा। कामसे सांस लेनेकी भी फुरसत मिलती है या नहीं?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० सरदार पटेल,
१ औरंगज़ेब रोड,
नअी दिल्ली

१६२

कलकत्ता,
१३-८-'४७

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। हस्ताक्षर करनेके कागज मैंने तुझे ज्योंके त्यों वापस भेज दिये। मैंने अैसा समझा है कि अुन पर मेरे हस्ताक्षरोंकी जरूरत नहीं है।

बरसातके बिना क्या होगा[1]? यह स्वतंत्रता महंगी पड़ती मालूम होती है।

मालूम होता है सरदारके स्वास्थ्य पर अिस कामका पूरा-पूरा बोझ पड़ेगा।

साथका पत्र पढ़कर सरदारको पढ़वा देना।

अुनका अेक भी मिनट लेना चोरी करने जैसा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. गुजरात, काठियावाड़, कच्छमें अिस साल भारी अकाल था।

१६३

(कलकत्ता)
२६–८–'४७

चि० मणि,

तुझ पर मुझे दया आती है। परन्तु दया कैसी? तू भार अुठाने योग्य है। अिसलिअे अुठाती रहना और सरदारका भार कुछ हलका करना।

रामस्वामी[1] को बहुत चोट आअी, यह तो तुझसे सुना। अेक पत्र अैसा था जरूर, परन्तु मैंने अुस पर विश्वास नहीं किया था। मैंने तो पत्र लिखा ही नहीं था। अब लिखूंगा।

साथके पत्र पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

१६४

(कलकत्ता)
३०–८–'४७

चि० मणि,

सब पत्र साथमें हैं। यथास्थान पहुंचा देना। तुझ पर हदसे ज्यादा काम तो नहीं लाद रहा हूं? अिसी तरह सब पत्र जल्दी पहुंचा सकता हूं। जवाहरलालवाला पत्र सरदारको पढ़वाकर जिस तरह जल्दी मिले अुस तरह भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. त्रावणकोरकी अेक सभामें सर सी० पी० रामस्वामी पर हमला हुआ था और अुन्हें गंभीर चोट आअी थी।

१६५

(कलकत्ता)
१–९–'४७

चि० मणि,

तुझे कामका भार नहीं लगता, यह अच्छा है। कोओी तो सरदारके पास पूरा हाथ बंटानेवाला चाहिये।

मेरा पत्र तू अुन्हें फुरसतमें पढ़ाना।

सुशीला[1] का अुसे भेज देना।

यहां तो कल रातको अकल्पित बात हो गयी है। जिन्हें छुरा लगा कहा जाता है अुन्हें छुरा लगा ही नहीं। दो आदमी लड़े तो जरूर थे। अुनमें वह हार गया। अधिक पता अब चलेगा। अभी नहाकर आया और यह लिखने बैठा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नओी दिल्ली

१६६

(कलकत्ता)
२–९–'४७

चि० मणि,

सब पत्रोंकी व्यवस्था कर देना। तू तो मेरे अुपवासको अिशारेमें समझ गओी होगी। राजाजीने बहुत माथापच्ची की, परन्तु जैसे जैसे वे दलील करते गये वैसे वैसे मैं मजबूत होता गया। पंद्रह दिनकी दोस्ती झूठी ही थी क्या?[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नओी दिल्ली

---

१. पू० बापूजीके मंत्री श्री प्यारेलालकी बहन डॉ० सुशीला नैयर। दिल्ली विधान-सभाकी सदस्य थीं। आजकल अध्यक्ष।

२. कलकत्तेमें थोड़े समय जो शान्ति रही थी वह।

१६७

८–९–'४७

चि० मणि,

आज वहांके लिअे रवाना हो रहा हूं, अिसलिअे अितना ही। तेरा रुदन तो ठीक है, मगर अुसमें सार नहीं है। अितने दबावके बाद दिल्ली तो आना ही चाहिये। वहां सरदार और जवाहर निश्चय करेंगे कि क्या किया जाय। मेरे रहनेकी व्यवस्था अुन्हें जहां करनी हो वहां करें। बिड़ला हाअुसका मैं बहिष्कार नहीं करता। परन्तु आराम मिले या न मिले मुझे भंगी-निवास अच्छा लगता है। सरदारकी आबरू भी मुझे वहीं रखनेमें है। रातको वहां कोअी न आ सके, अिसमें हर्ज नहीं। गाड़ी दिल्ली अेक्सप्रेस। ब्रजकृष्ण[१] से कह देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

१६८

(बिड़ला भवन,
नअी दिल्ली)
२९–९–'४७

चि० मणि,

साथमें नारणदास गांधीका पत्र है। अुन्हें तार देकर मेरा जवाब मिलने तक रोक दिया है। परन्तु क्या करना चाहिये, यह सरदारसे पूछकर मुझे बताना।

१. दिल्लीके श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला। पू० बापूजीके अेक भक्त।

दूसरी चीज पट्टणीका[1] तार है। वहां भी यही आया होगा। अुसका क्या करना है? मैंने समझा है कि शामलदास[2] जो कुछ करता है वह सरदारकी सहमतिसे करता है। अिसका अुत्तर भी पूछ कर बताना।

दोनों चीजें वापस भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नअी दिल्ली

१६९

न० दि०
२९-१२-'४७

चि० मणि,

पत्रवाहक सेवकराम हरिजनोंके शुद्ध सेवक हैं। सब हरिजनोंको सिंधसे लाना ही चाहिये और बम्बअी अिलाकेमें कच्छ, काठियावाड़, गुजरात, अुदयपुर, जोधपुर वगैरामें बसा ही देना चाहिये। अिसके लिअे सरदार जितना कर सकें अुतना करें।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. भावनगरके श्री अनंतराम पट्टणी।

२. स्व० शामलदास गांधी। पू० बापूजीके भतीजे।

(बिड़ला भवन,
नअी दिल्ली)
१३–१–'४८

चि० मणि,

आज सरदारके साथ बात हुअी। अिसलिअे अब और नहीं। मुझे बहावलपुरके[1] लोगोंसे मिलना है। फिर बुलाअूंगा। मुझे गलत-फहमी कैसे हुअी, यह समझमें नहीं आता। अुसे ठीक करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. बहावलपुर राज्यके, जो पाकिस्तानमें चला गया है, सरकारी नौकर।

पूर्ति

डाह्याभाओी पटेल तथा अनके पुत्रको

१

यरवडा मंदिर,
७–८–'३२

चि० डाह्याभाओी,

महादेवके चश्मेका अेक कांच टूट गया है, अिसलिअे वे परेशान होते हैं। यहां वह कांच मिल नहीं सकता। यह चश्मा पिछले साल जून-जुलाओीमें डॉ० भास्करने[1] फोर्ट-स्थित व्हिटनकी कंपनीमें बनवाया था। अुसका नम्बर व्हिटनके यहां जरूर होगा। लेकिन वहां न मिले तो डॉ० हीरालाल पटेल[2], जिन्होंने महादेवकी आंखोंकी परीक्षा की थी और नम्बर दिया था अुनके यहां यह नम्बर मिलेगा। अगर भास्करसे मिला जा सके तो अुनसे मिलकर व्हिटनकी दुकानसे यह नम्बर निकलवाना और चश्मा बनवाकर तुरन्त भेजना। अिस चश्मेके कांच और डंडीका माप भी शायद अुनके वहां होगा। परन्तु न हो तो माप साथवाले पत्र पर भेजा है। भास्कर न हो तो डॉक्टर हीरालालसे मिलना वे बनवा देंगे। भास्करको पिछले सप्ताह महादेवने अेक रजिस्टर्ड पत्र भेजा था। वह अुन्हें मिला नहीं दीखता। करमचन्दकी पत्नी अब बिलकुल अच्छी होंगी।

---

१. डॉक्टर भास्कर पटेल, जिन्होंने बम्बअीमें लड़ाअीके दौरानमें कांग्रेसका कामचलाअू अस्पताल चलाया था। अुनकी सेवाअें बोरसद प्लेग निवारण कार्यमें बहुत अुपयोगी सिद्ध हुअी थीं। १९५१ से १९५६ तक बम्बअीकी विधान-सभाके सदस्य। १९५६ से बम्बअी राज्यके मद्य-निषेध विभागके अुपमंत्री।

२. बम्बअीके आंखोंके अेक डॉक्टर।

मणिवहनका पत्र अभी अिन दिनोंमें तो नहीं आया। महादेवका काम चश्मेके विना वन्द हो गया है। अिसलिअे जल्दी भेज देना।

वावा मजेमें होगा। हम तीनों मजेमें हैं।

वापूके आशीर्वाद

आज वापूने डॉ० अन्सारीको तुम्हारे पते पर अेक पत्र लिखा है। वह अुन्हें पहुंचा आना। वे ११ तारीखको वम्वअीसे रवाना होनेवाले हैं, अिसलिअे नौ दस तारीखको तो वम्वअीमें ही होंगे।

अुस्मान सोभानी[1]के यहां ठहरे होंगे। नहीं तो जहां ठहरे हों वहांका पता अुस्मानके यहांसे मिलेगा। तलाश करके पत्र पहुंचा आना।

वापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वम्वअी–४

२

य० मं०
२६–१०–'३२

चि० डाह्याभाअी,

मणिवहनका पत्र भी अव तो तुम्हें नियमित मिलना संभव है। अिसलिअे तुम्हारे पढ़ने या सुननेकी सामग्री वढ़ गअी। परन्तु साहित्य पढ़नेके साथ अव तुम्हारे विस्तर छोड़नेका समय भी नजदीक आता जा रहा है न? फिर भी विस्तर छोड़नेकी अधीरता न होनी चाहिये। यह तो जानते हो न कि विस्तरमें भी सेवा हो सकती है?

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वम्वअी–४

---

१. वम्वअीके अेक मिल-मालिक

३

य० मं०
१९–११–'३२

चि० डाह्याभाओी,

तुम्हारे स्वास्थ्यके समाचार रोज मिलते रहते हैं। अैसी व्याधियां भी हमारी परीक्षाके लिअे आती हैं। तुम खूब धीरजसे सहन कर रहे हो, अैसा भाओी करमचन्द लिखते हैं। तुमसे यही आशा रखी जा सकती है। मणिबहनकी चिन्ता न करना।

प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाओी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बओी–४

४

य० मं०
२२–११–'३२

चि० डाह्याभाओी,

देवदास तुम्हारे कुशल-समाचार देता है और कहता है कि हमारे पत्र तुम्हें रोज मिलें तो तुम्हें प्रसन्नता होगी। हम तो जान-बूझकर तुम्हें नहीं लिखते, यद्यपि रोज आशीर्वाद तो जाते ही हैं। रोज तुम्हारा स्मरण होता है। अब पत्र भी मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाओी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बओी – ४

यरवडा जेल,
२५-११-'३२

चि० डाह्याभाओी,

मि० नटराजन लिखते हैं:

"I have every hope and pray that Dahyabhai will pull through the remaining few days without complication. His age and active habits and his naturally strong constitution are most potent assets. He is a favourite at our home, having been with us nearly all the time when he was living with his uncle. He calls Kamakoti[1] 'Akka' like her brothers and sister and is always a welcome visitor without any ceremony[2]."

अुन्हें मैंने पत्र लिखा था। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने जो पत्र लिखा था अुसीमें से अूपरका अुद्धरण दिया है। कल भाओी करमचन्दका पत्र देरसे मिला था। मैं अस्पृश्यताके बारेमें आये हुअे लोगोंके साथ व्यस्त था, अिसलिअे कल नहीं लिख सका। मालूम होता है तुम्हारा बुखार धीरे धीरे अुतरता जा रहा है। अच्छी तरह आराम लिया जाता हो और खाने-पीने वगैराके नियमोंमें भूल न होती हो तो टाअिफाअिड

---

१. स्व० नटराजनकी लड़की।

२. मुझे पूरी आशा है और मैं प्रार्थना करता हूं कि बाकीके थोड़े दिन डाह्याभाओी बिना किसी अुपद्रवके निकाल देंगे। अुनकी अुमर, सक्रिय जीवन तथा स्वाभाविक रूपमें मजबूत शरीर अुनके हकमें हैं। हमारे घर वे सबके लाड़ले हैं। जब वे अपने चाचाके यहां रहते थे तब अधिक समय हमारे यहीं बिताते थे। कामकोटीको अुसके भाअियों और बहनके साथ वे भी 'अक्का' कहते हैं। हमारे यहां वे घरके सदस्य जैसे ही हैं।

बुखारसे फायदा ही होता है, क्योंकि शरीरसे सब जहर निकल जाता है।

तुम आनन्दमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाओी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

६

य० मं०
२७–११–'३२

चि० डाह्याभाओी,

आज तुम्हारी तबीयतके और भी अच्छे समाचार हैं।

कल मैं लिख चुका हूं कि बीमार भी सेवा कर सकता है। वह अिस प्रकार मिली हुअी शान्तिका अुपयोग भगवानका चिन्तन करनेमें करे, अपने क्रोधको, अपनी अधीरताको रोक कर सेवा करनेवालोंमें प्रेम फैला कर करे। पश्चिमका और अेक यहांका अुदाहरण मेरे सामने है। फ्रांसकी अेक अठारह वर्षकी लड़कीने अपनी अत्यंत गंभीर बीमारीमें अपनी सुगन्ध अितनी फैलाअी कि अब अुसे 'सेण्ट' की पदवी मिली है। अुसने तो अखण्ड निद्राका सेवन किया।

पोरबन्दरके पास बिलखाके लाधा महाराजको कोढ़ हो गया था। वे बिलखाके शिवालयमें आसनबद्ध होकर बैठ गये। नित्य रामनाम जपते। रामायण पढ़ते। अन्तमें रोगमुक्त हुअे और प्रख्यात कथाकार बने। अुन्हें मैंने देखा था। अुनकी कथा सुनी थी।

जो अीश्वर-भक्त है वह तो बीमारीका भी सदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारता नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाअी. पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बअी – ४

७

य० मं०
१७–१२–'३२

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ, परन्तु तुम हिम्मत नहीं हार सकते। रोगका मिटना रोगी पर आधार रखता है, यह जानते होगे। रोगी कभी निराश होता ही नहीं और अधीर भी नहीं होता। जब तक दुःख भोगना हो तब तक भोगे, परन्तु अुसके साथ जूझता रहे। सभी दवाओं और सारी खुराकोंसे रामनाममें अधिक शक्ति है, यह अनुभव न किया हो तो कर देखना। अिसकी शक्ति विद्युत-शक्तिसे अधिक है। वह तुम्हें शान्ति और अुत्साह देगा। तुम पत्र लिखनेका लोभ रखते दिखाअी देते हो। यह लोभ छोड़ना चाहिये। तुम्हारा कर्तव्य अिस समय पूरा आराम लेना है। विनोदमें दो वाक्य मित्रोंको या हमारे जैसे बुजुर्गोंको लिखाये जा सकते हैं, परन्तु दफ्तरके कामका विचार नहीं किया जा सकता। अितना मान लेना। अीश्वर तुम्हारा कल्याण ही करेगा।

यह पत्र मैंने बायें हाथसे लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअी व० पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

८

(य० मं०)
२०-१२-'३२

चि० डाह्याभाअी,

लम्बा पत्र लिखना था, परन्तु समय नहीं रहा। अब तो जल्दी अच्छे हो जाना है। बा, वेलांबहन[1] और बाल मेरे साथ बैठे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

९

(य० मं०)
२२-१२-'३२

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारे विषयमें अभी तो अैसे समाचार आ रहे हैं कि मेरे लिखनेकी कोअी बात रहती नहीं। फिर भी अितनासा लिखता हूं कि न तो बीमारीका विचार करना, न दफ्तरका। हो सके तो केवल अीश्वरको ही याद रखो और गर्दन अुसके हाथमें सौंप दो। वह भजन याद है? "मारी नाड तमारे हाथे हरि संभाळजो रे।"[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी व० पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

---

१. श्री लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी।

२. हे हरि! मेरी गर्दन तुम्हारे हाथमें है, अिसकी रक्षा करना।

१०

पर्णकुटी,
पूना,
२६-८-'३३

चि० डाह्याभाओी,

तुम्हारी ओरसे कोओी भी पत्र नहीं, यह आश्चर्यकी बात है। नासिक अन्तिम बार कब गये थे? वहांके जो समाचार हों वे देना। मणिबहनकी क्या खबर है? अुनके साथ कौन हैं? अुनका स्वास्थ्य कैसा रहता है? अुनसे कोओी मुलाकात करता है? तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? बाबाका क्या हाल है? मुझमें रोज रोज शक्ति आती जा रही है। चिन्ताका बिलकुल कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

चांदा,
१४-११-'३३

चि० डाह्याभाओी,

तुम्हारी भावना और तुम्हारे दु:खको मैं समझता हूं[१]। मेरी भावना और मेरा मानस तुम मणिबहनके पत्रसे जान सकोगे। जहां मैं अपंग हो जाअूं वहां क्या करूं? सिपाहीके हाथसे तलवार छीन लो तो जैसे वह बेकार हो जाता है वैसे मेरे हाथसे सविनय भंग छीन लो तो मैं निकम्मा बन जाअूंगा। मेरा सारा जीवन प्रतिज्ञा-बद्ध रहा है। मेरी प्रतिज्ञा तो यह है कि या तो मुझे जेलमें रहना चाहिये अथवा बाहर रहूं तो सारी शक्ति हरिजन-कार्यमें लगानी चाहिये। दूसरे कामोंमें मैं अपना मन भी नहीं लगा सकता। विट्ठलभाओीके दोष तो अुनके साथ गये। अुनके गुण बहुत थे। अुनका स्मरण हम सबको सुरक्षित रखना है।

१. स्व० काका (श्री विट्ठलभाओी)की श्मशान-यात्राके अवसर पर पू० बापूजी बम्बओी नहीं गये थे। यह पत्र अुस प्रसंगको ध्यानमें रख कर लिखा गया है।

और तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि विट्ठलभाओीको मैंने पत्र भी लिखा था और अुनका मेरे पास मीठा जवाब भी आया था। मेरा निजी सम्बन्ध तो टूटा ही नहीं था। मतभेद सम्बन्धोंमें बाधक नहीं होते। मुझे तुम्हें यह समझानेकी जरूरत भी नहीं होनी चाहिये। परन्तु मणिबहन लिखती हैं कि तुम्हें और दूसरे भतीजोंको भी कुछ दुःख हुआ है। अिसलिअे अितना समझानेका प्रयत्न किया है। वल्लभभाअीके बाहर न होनेसे मुझे बड़ी कठिनाअी होती है। वे बाहर हों तो पारिवारिक गलतफहमियां दूर करनेका काम मैं अुन पर ही छोड़ दूं। अुनके जेलमें होनेसे मुझ पर गलतफहमी दूर करनेका दोहरा भार रहता है। अब भी कुछ दुःख रह जाय तो मुझे दिल खोलकर लिखनेमें जरा भी संकोच न करना।

पत्र वर्धा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२

(चिखलदा)
१९–११–'३३

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हें मैंने पत्र लिखा है। वह मिला होगा। साथमें गोरधनभाअीका पत्र[1] है। अुसे पढ़कर अुन्हें देना। तुम्हारा समाधान न हो तो मुझसे

---

१. भाअी गोरधनभाअी,

मणिबहन लिखती हैं कि श्मशान-क्रियाके समय मैं बम्बअी नहीं आया, अिससे तुम्हें दुःख हुआ है। अेक प्रकारसे यह मुझे अच्छा लगता है। तुम्हारा दुःख सूचित करता है कि तुम मुझे कुटुम्बियोंमें मानते हो। अैसा माननेका तुम्हें अधिकार है। परन्तु मुझे कुटुम्बी मानते

लड़ना तुम्हारा धर्म है, यह न भूलना। वा और मणिके पत्र अुन्हें पहुंचा देना।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वम्वअी – ४

हो तो जहां मेरा काम समझमें न आये वहां मुझे पूछना चाहिये। मेरे न आनेमें विट्ठलभाअीके साथ मेरे मतभेदोंका जरा भी स्थान नहीं था। मेरे न आनेका कारण मेरी आजकी परिस्थिति ही थी; मैं केवल हरिजन-कार्यके लिअे ही जेलसे वाहर रहा हूं। यह कार्यक्रम वनाया जा चुका था। सरकारी अंकुश जो सहन करने योग्य न हो अुसे सहन करनेको मैं तैयार नहीं होता। दूसरी तरह भी मुझे वहां अपना कोअी अुपयोग नहीं जान पड़ा था। मृत्यु-सम्वन्धी अुत्तर-क्रियाके वारेमें मेरे विचार भी मुझे अनुपयोगी वना देते। अिस प्रकार जिस दृष्टिसे देखें अुसी दृष्टिसे यह दिखेगा कि मेरा वहां आना जरूरी नहीं था। अितना ही नहीं, वल्कि अनुचित था। कुछ वातें जो हुअीं अुन्हें मैं तो होने भी न देता। तुम्हें तो अितना ही बता देना काफी होना चाहिये कि विट्ठलभाअीके साथके मेरे (मत) भेद अिसमें जरा भी कारणभूत नहीं थे। तुम नहीं जानते होंगे कि अुनकी बीमारीके समाचार आने पर मैंने अुन्हें पत्र लिखा था। और अुसका अुन्होंने लंवा और मीठा अुत्तर भी भेजा था। वीमारी वहुत वढ़ी तव तार भी दिया था। अुसका भी जवाव मिला था। और तुम्हें भी मैंने सारी वातें वताते रहनेको लिखा था। तुम्हारे तारको मिल-मालिक-संघ (अहमदावाद)के मंत्री गोरधनभाअीका समझ कर अुन्हें कृतज्ञताका पत्र मैंने लिखा। अुन्होंने समाचार दिया कि तार भेजनेवाले वे नहीं थे। मुझे आशा है कि अितनी सफाअी तुम्हें शान्ति देगी। न दे तो पूछ लेना।

१३

नासिक जेल
नवम्बर, १९३३

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा पत्र मिला था। परन्तु कामके कारण समय पर अुत्तर नहीं दे सका। मणिवहनने अभी तो हर वार मिलने आना है ठीक है। जाओ तव अुनसे कहना कि अेक दिन भी अैसा नहीं जाता जव मैं अुसका विचार न करता होअूं। परन्तु चिन्ता तो विलकुल नहीं करता क्योंकि अुसकी सहन-शक्ति और दृढ़ता पर मेरा पूरा भरोसा है।

वापूके पास जाओ तव कहना कि मैंने पत्र लिखे विना अेक भी सप्ताह नहीं छोड़ा।

काका[1] का वसीयतनामा पढ़ लिया। अुसे वम्वअीमें स्वीकार करानेमें कठिनाअी तो होगी ही। परन्तु मेरी राय यह है कि अिसके वारेमें हमें कुछ भी नहीं करना है। जो जाना हो वह भले ही सुभाष वोसके हाथमें जाय। मैं मानता हूं कि वे जो कुछ करेंगे वह सार्वजनिक अुपयोगकी दृष्टिसे ही करेंगे।

वावाके समाचार देना। मैं ठीक हूं।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वम्वअी – ४

---

१. स्व० विठ्ठलभाअी।

१४

(कालीकट)
१३–१–'३४

चि० डाह्याभाओी,

तुम्हारा पत्र मिला। तीन पत्र लगभग अेक साथ मिले, यह टेलीपैथीका नमूना कहा जा सकता है।

महादेवकी कड़ी परीक्षा हो रही है। संभव है अुनका स्वास्थ्य कुछ गिर जाय। परन्तु और आंच नहीं आयेगी। जीवणजीके नाम पत्र आया था, अुसके जवाबमें मैंने लम्बा संदेशा भेजा है। परन्तु अब तुम्हें[१] लिखनेका अवसर आये तब अिस प्रकार लिखना:

Whilst I need not receive Mahadev's letters, he must not think that I cannot have time to read them. The Gita portion was technical and I felt that there was no immediate need for me to give my opinion. And the fact is that I have so little regard for my own technical meaning of the verses. Where the meaning does not fit in with my interpretation as a whole, I should naturally have to examine it, but speaking in general terms one meaning would be to me as good as any other and therefore I should readily accept Mahadev's considered interpretation in preference to my own which after all must have been an adoption of some single author's version. He should, therefore, prosecute his researches and his work of translation without waiting

---

१. यह पत्र डाह्याभाओीको सम्बोधन करके लिखा गया है। परन्तु सरदारके लिअे था, जो अुस समय नासिक जेलमें थे। महादेवभाओी अुस समय बेलगांव जेलमें थे और अुन्हें श्री जीवणजी देसाओीके मारफत लिखा जाता था।

for my opinion. When it is all completed, of course I shall have ample time, God willing, to go through it.

I take it that Mahadev has read B. Shaw's 'Adventures of the Black Girl in her search for God'. I am sending him today 'Adventures of the White Girl in her search for God' by Cff. Maxwell. If he gets it safely, he will acknowledge it in his next letter.[1]

मैं वेलगांव पहुंचूंगा तो मणि और महादेवसे मिलनेका प्रयत्न जरूर करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वम्बअी – ४

---

१. महादेवके पत्र मेरे नाम आने ही चाहिये अैसा आग्रह तो मैं नहीं करता, परन्तु अिससे अुन्हें यह नहीं लगना चाहिये कि अुनके पत्र पढ़नेका मेरे पास समय नहीं है। गीतावाला भाग शास्त्रीय था। और मुझे लगा कि अुस पर मुझे राय देनेकी तत्काल जरूरत नहीं थी। असल वात तो यह है कि श्लोकोंका मैं स्वयं जो अर्थ करूं अुनके बारेमें मुझे वहुत कम आदर है। कुल मिलाकर मेरी अपनी व्याख्याके साथ जहां किसी श्लोकके अर्थका मेल न वैठे वहां, जैसा कि स्वाभाविक है, मैं अुस अर्थकी जांच करूंगा, परन्तु आम तौर पर कहूं तो मेरे लिअे तो अुसका अेक अर्थ दूसरे अर्थके वरावर ही स्वीकार्य होगा। अिसलिअे मैं तो अपने अर्थकी अपेक्षा महादेवके वहुत अध्ययनपूर्ण अर्थको तुरन्त स्वीकार कर लूंगा। कारण, मेरा अर्थ तो मेरा स्वीकार किया हुआ किसी अेक ही भाष्यकारका अर्थ होगा। अिसलिअे महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये विना अपना संशोधन और अनुवादका काम जारी रखना चाहिये। वह पूरा हो जायगा तव औश्वरेच्छा होगी तो यह सव पढ़ लेनेका मुझे काफी अवकाश मिलेगा।

१५

(कराची)
११-७-'३४

चि० डाह्याभाअी,

वल्लभभाअीकी तबीयतके[1] ब्यौरेवार समाचार मुझे लौटती डाकसे भेजो।

मणिबहनसे कहना कि मुझे ब्यौरेवार पत्र लिखे। अपने स्वास्थ्यके[2] पूरे समाचार दे। महादेव[3] तो खबर लायेंगे ही।

तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१६

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.
९-३-'४१

चि० डाह्याभाअी,

साथका पत्र यदि सरदारको मिल सकता हो तो खुले तौर पर भेज देना या दे देना।

तुम्हारी गृहस्थी अुत्तम चल रही होगी और बाबा मजा करता होगा।

मैं मान लेता हूं कि महादेवने बी० शॉ की 'अीश्वरकी शोधमें काली कन्याके साहस' नामक पुस्तक पढ़ी होगी। आज मैं अुन्हें मैक्सवेलकी 'अीश्वरकी शोधमें गोरी कन्याके साहस' पुस्तक भेज रहा हूं। यह अुन्हें सही-सलामत मिल जाय तो अपने दूसरे पत्रमें वे अिसकी पहुंच लिखें।

१. ता० १४-७-'३४ के दिन पू० बापूको नासिक जेलसे स्वास्थ्यके कारण छोड़ दिया था।

२. मैं भी ता० ८-७-'३४ को छूटी थी।

३. महादेवभाअी भी ता० ९-७-'३४ को छूटे थे।

यह याद रखना कि तुम्हें और शान्तिकुमारको २० लाख अिकट्ठे करने ही होंगे[1]। मैं आशा रखूंगा।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहनसे मिलो तो कहना कि तवीयत खूब सुधारे।

वापू

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
वम्वअी

१७

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.
७-५-'४१

चि० डाह्याभाअी,

साथके पत्र यथास्थान भेज सको तो भेज देना।

महादेवका पत्र या तो ज्योंका त्यों भेज देना या अुसकी नकल भेज देना।

तुम्हारा गृहस्थी ठीक चल रही होगी। वावाको दो पंक्तियां लिखनेको प्रेरित करना।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
वम्वअी

१८

सेवाग्राम,
१५-८-'४४

चि० डाह्याभाअी,

मुझे तुम्हारे घर रहनेके लिअे वहुत आग्रह किया गया, परन्तु मैं पसीजा नहीं। किसीकी नाराजगी होगी, महज अिसलिअे विड़ला-भवन

---

१. डाह्याभाअी और शान्तिकुमार वर्धा गये थे तव खादीके अुत्पादनके लिअे वीस लाख रुपये जमा करनेकी वात हुअी थी। अिसीका जिक्र है।

मैं छोड़ नहीं सकता। तुम्हारे यहां रहना तो मुझे पसन्द ही होगा। मैंने तुम्हारा घर कभी देखा ही नहीं। परन्तु मुझे तो जो कर्तव्य लगे अुसीका पालन करना चाहिये।

मैं शनिवारको वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। संभव है रविवारको वापस जा सकूं।

सबको आशिष।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९

सेवाग्राम,
१९-१०-'४४

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा खयाल है कि हम तलाशी[1]की शर्त हरगिज नहीं मान सकते। तलाशीकी शर्त पर ही जाना हो तो जानेका लोभ छोड़ दिया जाय। मेरा खयाल है कि अुन लोगोंने यह शर्त न रखी हो तो हो आना और तलाशी लेना चाहें तो अिनकार कर देना।

मणिबहनको औश्वर संभालनेवाला है।

यह बड़ी जल्दीमें लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. बेलगांव जेलमें अधिकारी राजनीतिक कैदियोंसे मिलने आनेवालोंकी पहले तलाशी लेना चाहते थे। अुसीका अुल्लेख है।

डाह्याभाओ पटेलके पुत्रको

१

वर्धा,
७–१०–'३३

चि० बाबा,

तेरा पत्र मिला। अक्षर मोतीके दाने जैसे लिखना सीखना। बुआके[1] साथ जरूर आना। मुझे अच्छा लगेगा। खेलनेको भी मिलेगा। तेरे जैसे और बालक भी यहां हैं। दादा[2]को पत्र लिखता है क्या?

बापूके आशीर्वाद

२

बोरसद,
३१–५–'३५

चि० बाबा,

आज तो तेरी वर्षगांठ है, अैसा मणिबहन कहती हैं। अिस दिन तू क्या करेगा? कुछ न कुछ सेवाका काम नहीं करेगा? करना हो तो तू मणिबहनसे पूछना। तू बड़ा तो होगा ही। वैसा ही समझदार भी बनना।

बापूके आशीर्वाद

३

सेगांव-वर्धा,
३–६–'३८

चि० बाबा,

तेरा पत्र आज ही मिला। तेरी कौनसी वर्षगांठ है? यह लिखना कैसे भूल गया? और जो आशीर्वाद मांगता है वह क्या कुछ देता नहीं? तू क्या देता है? नये सालमें क्या नया काम करेगा?

बापूके आशीर्वाद

---

१. मैं।
२. पूज्य बापू।

गांधीजीकी कुछ नअी पुस्तकें

अीसा — मेरी नजरमें

लेखक : **गांधीजी;** संग्रा० **आर० के० प्रभु०**

अीसाअी धर्मसे तथा बाअिबलसे गांधीजीका पहला परिचय कब हुआ, बाअिबलके कौनसे भागोंका अुनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, अुनकी दृष्टिमें अीसाके जीवन-कार्य और सन्देशका मूल्य, धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्ति पर अुनके विचार, पश्चिमके वर्तमान अीसाअी धर्मके बारेमें अुनका मत आदि विषयोंका समावेश अिस संग्रहमें किया गया है। अन्तमें 'गिरि-प्रवचन' का सार भी दिया गया है।

कीमत ०.३५ डाकखर्च ०.१३

गांवोंकी मददमें

लेखक : **गांधीजी;** अनु० **सोमेश्वर पुरोहित**

अिस पुस्तिकामें दी गअी गांधीजीकी सूचनाओं पर अगर भारतके गांव और अुनके सेवक पूरा ध्यान दें तथा अिन सूचनाओंको अमलमें अुतारें, तो सारे गांव साफ-सुथरे, स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी बन सकते हैं। सबसे बड़ा जोर गांधीजीने अिस बात पर दिया है कि अगर गांवके लोग आलस छोड़कर आपसी सहयोगसे परिश्रम करें, तो वे अपने गांवोंको किसी बाहरी मददके बिना भी सुख और आनन्दके धाम बना सकते हैं।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

गीताका संदेश

लेखक : **गांधीजी;** संग्रा० **आर० के० प्रभु**

अिस पुस्तिकामें गीता और अहिंसा, गीता और यज्ञकी भावना, हिन्दू धर्ममें गीताका स्थान, गीताके कृष्ण, हिन्दू विद्यार्थी और गीताका शिक्षण तथा गीताकी केन्द्रीय शिक्षा जैसे विषयोंकी संक्षेपमें स्पष्ट चर्चा की गअी है। अिसमें गीताके अमर सन्देशका सार आ जाता है।

कीमत ०.३० डाकखर्च ०.१३

मंगल-प्रभात

लेखक : **गांधीजी; अनु० अमृतलाल नाणावटी**

सन् १९३० में गांधीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके व्रतों पर विवेचन लिखकर साबरमती आश्रमके सदस्योंको भेजा करते थे। अिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-व्रतोंका गांधीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुबोध विवेचन पाठकोंको मिलेगा। अिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ अुर्दू जाननेवालोंकी सुविधाके लिअे आसान अुर्दू शब्द भी दिये गये हैं।

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३

मेरा समाजवाद

लेखक : **गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु**

गांधीजी समाजवादका अर्थ सर्वोदय करते थे। अुनका कहना था कि भारतका समाजवाद 'सवै भूमि गोपालकी' और 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा:' अिन मंत्रोंमें समा जाता है। प्रेम, शांति और समताका ध्येय रखनेवाले समाजवादकी स्थापना करनेमें अहिंसक साधन ही सफल हो सकते हैं। अिसी विचारकी चर्चा अिस पुस्तिकामें की गअी है।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

मेरे सपनोंका भारत

लेखक : **गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु**

अिस संग्रहमें भारतके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधीजीके विचार पेश किये गये हैं। अिनसे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतसे क्या क्या आशायें रखते थे और अुसका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते हैं: "श्री आर० के० प्रभुने गांधीजीके अत्यन्त प्रभावशाली और अर्थपूर्ण अुद्धरणोंका संग्रह अिस पुस्तकमें किया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके बुनियादी अुसूलोंको प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमें अेक कीमती वृद्धि करेगी।"

कीमत २.५० डाकखर्च १.००

विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग

लेखक : **गांधीजी;** संग्रा० आर० के० प्रभु

आज विश्वमें शांतिकी स्थापना करनेके लिये दुनियाके समस्त राष्ट्र और अुनके नेता प्रयत्न कर रहे हैं। अिस ध्येयकी सिद्धिका गांधीजीने अेकमात्र सच्चा और अहिंसक मार्ग यह बताया है : दुनियाके सारे राष्ट्र अेक-दूसरेका शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी नीतिको छोड़ें, परस्पर प्रेम और सहिष्णुताकी भावना बढ़ायें और युद्धके संहारक शस्त्रोंका त्याग करें, तो ही स्थायी शांति कायम हो सकती है। यही अिस पुस्तकका केन्द्रीय विचार है।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

शरीर-श्रम

लेखक : **गांधीजी;** संग्रा० रवीन्द्र केळेकर

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके रोटी कमानेवालोंको हलकी नजरसे देखा जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेका प्रयत्न किया। यहां अिस विषयमें गांधीजीके जो विचार पेश किये गये हैं अुनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अुसके महत्त्वका, अुसकी आवश्यकताका और समाजको अुससे होनेवाले लाभोंका पता चलता है।

कीमत ०.२५ डाकखर्च ०.१३

सन्तति-नियमन

सही मार्ग और गलत मार्ग

लेखक : **गांधीजी;** संग्रा० आर० के० प्रभु

अिस पुस्तिकामें सन्तति-नियमनके सही अुपायों और गलत अुपायोंका विचार किया गया है। गांधीजी कृत्रिम साधनोंकी मददसे सन्तति-नियमन करनेके सख्त विरोधी थे। अिसका अुत्तम मार्ग वे आत्म-संयमको ही मानते थे, जो मानव-जातिको अूंचा अुठानेवाला और अुसका कल्याण करनेवाला है।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४